इन्दिरा गांधी
राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ

MHD-09
कहानी : स्वरूप और विकास

खंड

3
विश्व साहित्य में कहानी

इकाई 9
यूरोप में कहानी 5

इकाई 10
अमेरिका में कहानी 21

इकाई 11
एशिया में कहानी 36

इकाई 12
लैटिन अमेरिका और अफ्रीकी देशों में कहानी 45

पाठ्यक्रम विशेषज्ञ समिति

प्रो. मैनेजर पाण्डेय
अवकाश प्राप्त प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
भारतीय भाषा केन्द्र जे.एन.यू., नई दिल्ली

प्रो. रामदेव शुक्ल
अवकाश प्राप्त प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
दी.द.उ.गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

प्रो. लक्ष्मण सिंह बिष्ट बटरोही
अवकाश प्राप्त प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
हिन्दी विभाग, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल

प्रो. जवरीमल्ल पारख
प्रोफेसर, हिन्दी, मानविकी विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. गोपाल राय
अवकाश प्राप्त प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
हिन्दी विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना

श्री ज्ञानरंजन
प्रख्यात कथाकार एवं संपादक
जबलपुर, मध्य प्रदेश

डॉ. विजय बहादुर सिंह
प्रख्यात आलोचक
भोपाल, मध्य प्रदेश

डॉ. जितेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, हिन्दी संकाय
मानविकी विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम संयोजक

डॉ. जितेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, हिन्दी संकाय
मानविकी विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

खंड संयोजन, संशोधन एवं संपादन

डॉ. जितेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, हिन्दी संकाय
मानविकी विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

पाठ लेखक — **इकाई सं.**

डॉ. प्रियम अंकित — 9–12
एसोसिएट प्रोफेसर (अंग्रेजी)
आगरा कालेज, आगरा (उ0 प्र0)

विशेष सहयोग : सुश्री नमिता सत्येन
सहयोग : श्री अरुण कुमार पाण्डेय, सुश्री निवेदिता, श्री शंभुनाथ मिश्र, सुश्री लकी चौधरी
सचिवालयिक सहयोग : सुश्री हेमलता

सामग्री निर्माण

श्री सी. एन. पाण्डेय
अनुभाग अधिकारी (प्रकाशन)

अप्रैल, 2015

© *इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय,* 2015

ISBN: 978-81-266-6860-1

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस कार्य का कोई भी अंश इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के विषय में और अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कार्यालय, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068 से प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से प्रो. सुनैना कुमार, निदेशक, मानविकी विद्यापीठ द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

Paper Used : "Agro based Environment Friendly"

लेजर टाइप सेटिंग : एच. डी. कंम्यूटर क्रॉफ्ट, डब्लु जैड 36ए, लाजवंती गार्डन, नई दिल्ली 110046

मुद्रक : राज प्रिंटर्स, ए–9, सैक्टर बी–2, ट्रोनिका सिटी, लोनी, गाजियाबाद (उ. प्र.)

खण्ड-3 परिचय

यह कहानी संबंधी मॉड्यूलर के पहले पाठ्यक्रम 'कहानी : स्वरूप और विकास' का तीसरा खण्ड है। इस खण्ड का शीर्षक है– विश्व साहित्य में कहानी । इस खण्ड में कुल चार इकाइयाँ हैं जो इस प्रकार हैं –

इकाई – 9 यूरोप में कहानी

इकाई – 10 अमेरिका में कहानी

इकाई – 11 एशिया में कहानी

इकाई – 12 लैटिन अमेरिकी और अफ्रीकी देशों में कहानी

इस खण्ड को तैयार करने का उद्देश्य विद्यार्थियों को कहानी के वैश्विक परिदृश्य से परिचित कराना है। इस खण्ड की इकाइयों में यूरोप, अमेरिका, एशिया, लैटिन अमेरिकी और अफ्रीकी देशों में कहानी विधा के विकास का रेखांकन है। इन इकाइयों के अध्ययन के पश्चात आप एक विधा के रूप में कहानी का उद्भव और विकास से परिचित हो सकेंगे/सकेंगी। यही इस खण्ड की सफलता होगी।

शुभकामनाओं सहित।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 9 यूरोप में कहानी

इकाई की रूपरेखा

9.0 उद्देश्य

9.1 प्रस्तावना

9.2 फ्रांस में कहानी

9.2.1 फ्रांसीसी कहानीः उन्नीसवीं शताब्दी

9.2.2 फ्रांसीसी कहानी और बीसवीं सदी

9.2.3 फ्रांसीसी कहानी में स्त्री लेखन

9.3 ब्रिटेन में कहानी

9.4 जर्मनी में कहानी

9.5. रूस में कहानी

9.6 इटली में कहानी

9.7 अन्य यूरोपीय देशों में कहानियाँ

9.8 यूरोप के यहूदी कहानीकार

9.9 सारांश

अभ्यास

9.0 उद्देश्य

यह एम0ए0 हिन्दी के द्वितीय वर्ष के कहानी से सम्बन्धित मॉड्यूल के पाठ्यक्रम कहानीः स्वरूप और विकास से सम्बन्धित तीसरे खण्ड की नवीं इकाई है। इस इकाई में हम कहानी विधा के वैश्विक परिप्रेक्ष्य में यूरोप के अवदान पर दृष्टिपात करेगें। हम जानते हैं कि कहानी एक आधुनिक गद्यरूप है और यह जीवन के यथार्थ की कलात्मक पुनर्सृष्टि करता है। कहानी की अपनी निजी विशेषतायें होती हैं। इन निजी विशेषताओं का निर्माण करने में यूरोप की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस इकाई को पढने के बाद आप यूरोप के विभिन्न देशों में कहानी की विकास–यात्रा को समझ सकेगें/सकेंगी।

9.1 प्रस्तावना

यूरोप में कहानी को उस मौखिक परंपरा से जोड़ा जाता है जिसने होमर के महाकाव्यों 'इलियाड' और 'ओडिसी' को जन्म दिया। यह मौखिक वृत्तान्त पद्य में रचे गए। गद्य में कहानी की लोकप्रिय अभिव्यक्ति ईसप की नीतिकथाओं (फेबल्स) में हुई। रोमन साम्राज्य के अन्तर्गत् कुछ यथार्थवादी कलात्मक दृष्टांत लोकप्रिय हुए। यूरोप में इसी मौखिक परंपरा से कहानी लेखन का विकास माना जाता है। चौदहवीं शताब्दी के शुरूआती वर्षों में चौसर के 'कैंटरबरी टेल्स' और बोकैशियों के 'डिकैमरान' में कहानी की लिखित रूप में अभिव्यक्ति होती है। इन दोनों पुस्तकों में अपने लिखित रूप में कहानी की निजी विशेषताओं को आकार लेते हुए देखा जा सकता है। सत्रहवीं शताब्दी में फ्रांस की लेखिका मदाम लाफ़ायते की उपन्यासिकाओं ने कहानी लेखन को प्रोत्साहित किया।

यूरोप में परिकथाओं के प्रकाशन और अंतोइन गालाँ के 'एक हजार एक रातें' या 'अरब की रातें' के पहले आधुनिक अनुवाद ने अठारहवीं शताब्दी में एक आधुनिक विधा के रूप में कहानी की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। अठारहवीं शताब्दी में वोल्तायर, दीदरो और अन्य लेखकों की कहानियाँ महत्वपूर्ण हैं। आज कहानी विधा ने जो रूप अर्जित किया है, उसका प्रादुर्भाव उन्नीसवीं शताब्दी में हुआ। इसमें ग्रिम बंधुओं की 'परिकथायें' और गोगोल की 'दिकान्का की शामें' उल्लेखनीय है। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में यूरोप में विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन को लोकप्रियता मिलने के साथ–साथ कहानियों की मांग भी बढ़ने लगी और विश्व साहित्य की कई अमर तथा क्लासिक कहानियों की रचना इसी दौर में हुई। अब यूरोप में कहानी लेखन के उर्वर दौर की शुरूआत हो चुकी थी। आगे इस इकाई में हम यूरोप के विभिन्न देशों में कहानी के विकास पर दृष्टिपात करेगें।

9.2 फ्रांस में कहानी

9.2.1 फ्रांसीसी कहानी : उन्नीसवीं शताब्दी

आधुनिक कहानी के विकास में फ्रांस की भूमिका अविस्मरणीय है। बाल्जाक जैसे लेखकों ने कहानी में न सिर्फ यथार्थवाद की जमीन तैयार की, बल्कि उसको मुकम्मल अभिव्यक्ति भी दी। बाल्ज़ाक और फ्रांस का कहानी के क्षेत्र में जो योगदान है, वह इस कहावत में चरितार्थ होता है कि उन्नीसवीं शताब्दी बाल्ज़ाक और फ्रांस की शताब्दी थी। उन्नीसवीं शताब्दी का यह समय कहानी की दृष्टि से इसलिए महत्वपूर्ण है कि आज की कहानी के जो भी घटक तत्व हैं उनकी सशक्त अभिव्यक्ति पहली बार इसी दौर में हुई। बाल्ज़ाक की महत्वपूर्ण कहानियाँ उनके संग्रह 'ला कामदी ह्यूमेन' (मानवीय कामदी) में संकलित हैं। इस संग्रह की भूमिका में बाल्ज़ाक ने अपने लेखन के उद्देश्यों की सविस्तार चर्चा की है। एक लेखक के रूप में वह अपने को फ्रांसीसी समाज का सचिव कहता है। बाल्ज़ाक को यह पक्का विश्वास था कि सामाजिक प्रजाति के रूप में मनुष्यों का उसी प्रकार विभाजन किया जा सकता है जिस प्रकार प्रकृति विज्ञानियों ने जन्तुओं का किया है। अपनी कहानियों को बाल्ज़ाक ने इस तरह संगठित किया है कि वह विभिन्न सामाजिक वर्गों और उनके वातावरण को अभिव्यक्त करते हुये लेखक की इस मान्यता को पुष्ट करती है कि वातावरण ही व्यक्ति के विकास को निर्धारित करता है। अपने संग्रह 'ला कामदी हयूमेन' को बाल्ज़ाक ने तीन खण्डों में विभाजित किया है–'विश्लेषणात्मक अध्ययन', 'दार्शनिक अध्ययन' और 'व्यवहारों का अध्ययन'। बाल्ज़ाक ने ज्यादातर कहानियॉ 'व्यवहारों का अध्ययन' नामक खण्ड के अंतर्गत् लिखी है। बाल्ज़ाक की कोशिश थी कि वह तत्कालीन फ्रांसीसी समाज के सभी वर्गों और संस्तरों को चित्रित करे, मगर इसे पूरा करने से पहले ही 1850 में उसका निधन हो गया।

बाल्ज़ाक ने कहानी विधा में महत्वपूर्ण परिर्वतन किए। कहानी को उसके पारंपरिक ढाँचे से बिल्कुल अलग मार्ग पर अग्रसर करने में बाल्ज़ाक को सबसे ज्यादा सफलता मिली। उसकी कहानियों का केन्द्रबिन्दु चरित्र और वातावरण हैं, जिसके चलते वह विशिष्ट व्यक्तियों के बताए, संपूर्ण समाज का कलात्मक अध्ययन बन जाती हैं। कथानक–प्रधान कहानियों से अलग जो, उदाहरण के लिये किसी संकट के विवरण से शुरू होती है और उसके सुलझने पर ख़त्म–बाल्जाक की कहानियाँ हमें चरित्र का और व्यक्ति के प्रकार का या किसी सामाजिक परिघटना और परिवर्तन के कारणों का बोध कराती हैं। निःसंदेह जब तक मनुष्य और उसकी भावनायें हैं, बाल्ज़ाक की कहानियाँ प्रासंगिक है।

उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में बाल्जाक के अतिरिक्त अन्य फ्रांसीसी कहानीकार थे अलेक्सांद्र द्यूमा और अल्फ्रेद दे विग्नी। बाल्जाक की कहानियों के उलट ये लेखक अपनी रूमानी कहानियों के लिये जाने जाते हैं। द्यमा ने ऐतिहासिक घटनाओं और पात्रों को आधार बनाकर रहस्य रोमांच से भरपूर कहानियाँ लिखी। विग्नी ने कुछ महत्वपूर्ण कहानियाँ लिखी हैं जो उनके दो संग्रहों में संकलित हैं। इनमें पहला है 'स्तेलोःए सेशन विद डा0 नॉयर' जिसमें विग्नी ने दर्शन और कहानी को जोड़ने का प्रयास किया है। अपनी कहानियों में उसने कवियों, सैनिकों और पैगंबरों का बचाव किया है जिन्हें वह समाज से बहिष्कृत मानता था। उसकी कहानियों में तत्कालीन समाज के प्रति घृणा का भाव मिलता है क्योंकि वह मानता था कि यह समाज बुद्धिमानों से नफरत करता है। उसके दूसरे कहानी संग्रह 'द मिलिटरी नेसेसिटी' में तीन कहानियाँ हैं, जिसमें लेखक ने उन सैनिकों की भूमिका का महिमामण्डन किया है, जो उसकी नजरों में समाज द्वारा तिरस्कृत हैं। विग्नी ने पैंगंबरों के कष्टों को आधार बनाकर तीसरे संग्रह की भी योजना बनाई थी, मगर वह एक ही कहानी पूरी कर सका जिसका शीर्षक है 'डैने'। विग्नी की कहानियाँ अपने साधारण कथानक और उत्कृष्ट तकनीक के लिए सराही जाती हैं। इनमें दो कहानियाँ खासतौर से उल्लेखनीय है– 'लॉरेते' और 'कप्तान रेनॉद'।

प्रोस्पर मेरिमी का नाम भी फ्रांसीसी कहानीकारों के बीच आदर से लिया जाता है। उनकी कहानियों में लोकसंस्कृति, स्थानीयता और रूमानी सम्मोहन के तत्व प्रमुखता से पाए जाते हैं। इन कहानियों की वस्तुनिष्ठता और विवरणात्मकता यथार्थवाद के करीब हैं। उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं– 'मेतियो फाल्केन', 'कोलम्बा', 'कारमैन' आदि।

उन्नीसवीं शताब्दी के उतरार्द्ध में प्रमुख फ्रांसीसी कहानीकार है लाबेर, मोपासाँ और ज़ोला। लाबेर का प्रसिद्ध कहानी संग्रह है–'थ्री टेल्स'। इसमें तीन कहानियाँ संग्रहीत हैं– 'ए सिंपल हार्ट', 'द लीजेंड ऑव सेंटजूलियन, हॉस्पीटेलर' और 'हेरोदियस'। तीनों कहानियों की शैली एक दूसरे से नितांत भिन्न है। शैली की यह विविधता लोबेर को कहानी के कुशल लेखक के रूप में स्थापित करती है। 'ए सिंपल हार्ट', तत्कालीन समाज में व्याप्त धनलोलुपता का चित्रण करती है। 'हॉस्पीटेलर' का परिवेश मध्यकालीन है। यह परिवेश कहानी के पात्रों को संचालित करता है। कहानी में नियति एक विराट नियंत्रक शक्ति के रूप में उभरती है। 'हेरोदियस' का घटनाक्रम मात्र एक दिन का है। एक दिन की घटनाओं के विवरणात्मक चित्रण और प्राकृत बिंब इस कहानी की विशेषता हैं। तत्कालीन समाज की मानसिकता को अच्छी तरह समझते हुए लोबेर ने इस कहानी में विभिन्न दृश्यों के कुशल संगठन द्वारा पात्रों की मनःस्थिति को उकेरा है। तमाम विविधताओं के बावजूद इस संग्रह की कहानियाँ पात्रों की भावनाओं और सामाजिक शक्तियों के बीच संघर्ष को विश्वसनीयता से प्रतिष्ठित करती हैं। यह संघर्ष ही लोबेर की कहानियों को जीवन देता है।

मोपासाँ ऐसे फ्रांसीसी लेखक हैं जिनकी सबसे ज्यादा ख्याति उनकी कहानियों के आधार पर ही है। अन्य फ्रांसीसी लेखक जैसे बाल्ज़ाक और लोबेर, महत्वपूर्ण कहानियाँ लिखने के बावजूद सफल उपन्यासकारों के रूप में अधिक प्रतिष्ठित हुए। मगर मोपासाँ ने वाग्विधग्ता, विडंबना, सामाजिक आलोचना, आदर्शवाद और मनोवैज्ञानिक गहनता को सौंदर्यशास्त्रीय आस्वाद में पिरोकर बड़े पैमाने पर कहानी संग्रहों की रचना की। उनकी कहानियाँ तत्कालीन फ्रांस की सर्वसुलभ स्थितियों और चारित्रिक रूपों का विवरण देती हैं। साथ में युद्ध और मृत्यु, भय, पाखण्ड, सुख की तलाश, स्त्रियों का शोषण एवं यथार्थ और आभास का द्वंद्व जैसे सार्वत्रिक विषयों की गहन पड़ताल करती है। वेश्याओं से लेकर

व्यभिचारी पुरूषों और स्त्रियों तक तथा किसानों से लेकर कुलीनों तक आधुनिक समाज की असाधारण विविधता को उन्होनें अपने चरित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। उनके जीवनकाल में ही उनकी कहानियाँ फ्रांस के भीतर और बाहर प्रसिद्ध हो चुकी थी। रोजमर्रा की स्थितियों में सार्वजनिक तत्वों को प्रकाशित करने में कहानीकार मोपासाँ को विशेष योग्यता हासिल थी। उन्होंने वाक्चातुर्य और न्यूनोक्तियों का प्रयोग करके संवादों में कलात्मक आस्वाद उत्पन्न किया। उन्होनें आगे आने वाली पीढ़ियों के अनेक ख्यातिप्राप्त कहानीकारों को अपनी कला से प्रभावित किया।

एमिल ज़ोला की कहानियाँ प्रकृतवाद की प्रवर्तक बनीं। ज़ोला ने उन्नीसवीं शताब्दी को विज्ञान के प्रभुत्व वाली शताब्दी के रूप में देखा। उनका स्पष्ट मानना था कि साहित्य मानवीय शक्तियों के तटस्थ अध्ययन और प्रेक्षण का सबसे अच्छा साधन है। जोला को उस दौर में प्रचलित जैव वैज्ञानिक निर्धारणवाद ने प्रभावित किया। उनकी कहानियाँ मानव व्यवहार के सिद्धान्तों को वैज्ञानिक परिदृश्य प्रदान करती हैं। इन कहानियों में पात्र स्वयं में उतने महत्वपूर्ण नहीं हैं, जितना कि उनका शरीर क्रिया–विज्ञान। ज़ोला की कहानियाँ इस आस्था को प्रमाणित करती है कि साहित्य का उद्देश्य मनुष्यता और प्रकृति को वैसे ही चित्रित करना है जैसे कि वह वास्तव में है। यह कहानियाँ जीवन की चुभनेवाली सच्चाईयों को बड़े विस्तार से प्रस्तुत करती हैं। ज़ोला ने लोबेर की यथार्थवादी विरासत को न सिफ्र आगे बढ़ाया, बल्कि एक कदम आगे जाकर उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में स्त्री और पुरूषों के सामाजिक, राजनैतिक और यौन जीवन के अधम समझे जाने वाले पक्षों को अपनी कहानियों का केन्द्र बनाया। उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं– 'स्टोरीज फॉर निनॉन', 'ए सोल्जर्स ऑनर एण्ड अदर स्टोरीज', 'मदाम सूर्दिस' आदि।

9.2.2 फ्रांसीसी कहानी और बीसवीं सदी

बीसवीं सदी में फ्रांसीसी कहानी में बदलाव आता है। उन्नीसवीं सदी की यथार्थवादी विरासत को संजोते हुऐ कहानी में शिल्प के स्तर पर प्रयोगों की शुरूआत होती है। दो विश्वयुद्धों का साक्षी बनी इस शताब्दी में उन्नीसवीं सदी के भय तथा आशंकायें और अधिक तीव्र हो उठते हैं। भयानकता, भयावहता, लाचारी और शोषण के नए आयाम उभर कर सामने आते हैं। साथ ही मानवीय जिजीविषा, करूणा और सहानुभूति के नए अनुभव फ्रांसीसी समाज के बोध का हिस्सा बनते हैं। फ्रांसीसी दृष्टि के बोध में आया यह विस्तार कहानी के क्षेत्र में अभिव्यक्त होता है। बीसवीं शताब्दी में फ्रांस में आधुनिकतावाद का जन्म हुआ और स्त्री लेखन को नई धार मिली।

नये बोध के कहानीकारों में आंद्रे ज़ीद का नाम महत्वपूर्ण है। ज़ीद की कहानियाँ फ्रांसीसी परंपरा के नैतिकता बोध को नया मोड़ देती हैं। उन्नीसवीं सदी की फ्रांसीसी कहानियाँ समाज को केन्द्र में रखकर लिखी गयी थीं, मगर ज़ीद की कहानियों का केन्द्र व्यक्ति है। अपनी कहानियों मे ज़ीद ने व्यक्ति के अनुभवों के प्रामाणिक चित्रण पर अधिक बल दिया, यह उनके व्यक्तिवाद का अनूठा पहलू है। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद समाज में जो उद्वेलन और रोमांच उत्पन्न हुआ, ज़ीद ने अपनी कहानियों में उसे नैतिक सद्भाव से जोड़ने की कोशिश की। उनके प्रमुख संग्रह है– 'मार्शलैण्ड्स' और 'प्रोमिथियस मिसबाउंड'।

प्रख्यात फ्रेन्च कवि पॉल वलेरी ने 'एन ईवनिंग विद मि0 तेस्ते' नामक विख्यात कहानी लिखी जिसमें उन्होनें बुद्धि और भाव तथा अस्तित्व और अनस्तित्व के बीच संघर्ष को

बखूबी चित्रित किया। वलेरी की कविताओं की समझ के लिए इस कहानी को पढ़ना अपरिहार्य है क्योंकि यह लेखक के विचारों और जीवन का प्रतिनिधित्व करती है।

लेखक अनातोले फ्रांस के कहानी संग्रहों 'क्रेंकेबाइल,' 'दि व्हाईट स्टोन', 'दि सेवेन वाइव्स ऑव ब्लूबर्ड', और 'टेल्स फ्राम दि मदर ऑव पर्ल कास्केट' की कहानियॉ काफी लोकप्रिय हुई। इन कहानियों को पढ़ने के बाद यह एहसास होता है कि यदि यथार्थवाद का अर्थ सत्य है, तो हमें अनाताले फ्रांस के यथार्थवादी सौंदर्यबोध का कायल होना पड़ेगा।

अल्बेर कामू का कहानी संग्रह 'एक्जाइल एण्ड दि किंगडम' फ्रांसीसी और विश्व कहानी में अलग हैसियत रखता है। कामू की कहानियाँ अस्तित्वाद को अभिव्यक्त करती है। इन कहानियों में नृशंसता, आक्रामकता, जाति–संहार और साम्राज्यवाद से पराभूत युग की पीड़ित आत्मा सुरक्षित है।

अस्तित्ववाद के शिखर पुरूष ज्याँ पाल सार्त्र के कहानी संग्रह 'द वाल एण्ड अदर स्टोरीज़' को परिपक्व और सृजानात्मक अभिव्यक्ति के लिए जाना जाता है।

9.2.3 फ्रांसीसी कहानी में स्त्री लेखन

फ्रांस में स्त्री लेखन की लम्बी परंपरा रही है। मदाम लाफ़ायते, मदाम स्ताएल, जार्ज सैण्ड, सीमोन द बोउवा, कोलेत, मार्गूरीत दूरा और नताली सॉरोत जैसी लेखिकाओं ने अपनी कहानियों में स्त्री दृष्टिकोण को अभिव्यक्त किया है।

जार्ज सैण्ड, उन्नीसवीं शताब्दी की फ्रेंच लेखिका थी। उनकी कहानियाँ रूमानी आंदोलन का हिस्सा थीं और वह अठारहवीं शताब्दी के चिंतक रूसो के विचारों से प्रभावित थीं। उनकी धारणा थी कि मनुष्य नैतिक आचरण और अच्छाई से युक्त है और उसे किसी सामाजिक रीति को मानने या किसी संगठित धर्म में विश्वास करने की जरूरत नहीं है। अपनी कहानियों मे सजग स्त्री चेतना के साथ इस धारणा को उन्होने लोकप्रिय बनाया। 'टेल्स ऑव ए ग्रैंडमदर' उनका कहानी संग्रह है। फ्रैंच लेखिका कोलेत ने रोजमर्रा के मानवीय अनुभवों और समस्याओं को अपनी कहानियों का विषय बनाया। प्रमुख संग्रह–'द स्टोरीज ऑव कोलेत'।

बीसवीं शताब्दी की फ्रेंच लेखिका मार्गूरीत दूरा ने महत्वपूर्ण कहानियाँ लिखीं। दूरा की कहानियाँ स्त्री और स्त्री देह की सहनशील प्रकृति को रेखांकित करती हैं, जो अक्सर कल्पनाशक्ति के आवेग और प्राकृतिक आपदाओं के समक्ष लाचार नजर आती है। उनकी प्रसिद्ध कहानी है 'द बो'।

बीसवीं शताब्दी की एक अन्य फ्रांसीसी लेखिका नताली सॉरोत ने अपनी कहानियों में मानव बोध और स्वभाव के सूक्ष्म उतार–चढ़ाव को बड़ी शिद्दत से दर्ज किया है। स्मृतियों को सहजता से जगाकर और अवचेतन के आवेगों को हवा देकर उनकी कहानियों का सूक्ष्म मनोविज्ञान व्यक्तिवादी विलक्षणताओं की सीमित सतह को तोड़कर मनुष्य के सार्वजनिक भावावेगों को अभिव्यक्त करता है। प्रमुख कहानी संग्रह–'ट्रॉपिज्म्स', 'द यूज ऑव स्पीच' और 'ऑवरेज'।

लेखिका फ्रांस्वा सेगान की कहानियों में निठल्ले अमीरों के जीवन के स्वार्थी और खतरनाक पहलुओं की छवियाँ दिखती हैं। 'सिल्केन आईज़' और 'इंसीडेंटल म्यूजिकः स्टोरीज' उनके कहानी संग्रह हैं।

9.3 ब्रिटेन में कहानी

ब्रिटेन के कहानीकारों ने विश्व साहित्य में कहानी को प्रतिष्ठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। ब्रिटेन में भी सही मायने में, आधुनिक कहानी का आविर्भाव उन्नीसवीं शताब्दी में ही हुआ। सर वाल्टर स्कॉट ने अपनी कहानियों में इतिहास की पुनर्सृष्टि की। उनकी कहानियों ने लोकप्रिय नायकों की उस छवि को गढ़ा जिसका असर ब्रिटेन और ब्रिटेन के बाहर अनेक कहानीकारों के मन में लंबे समय तक रहा। ब्रिटेन में कहानी को एक लोकप्रिय विधा के रूप में स्थापित करने का श्रेय स्कॉट को ही जाता है। स्कॉट ने इतिहास को आधार बनाकर जो कथा–साहित्य रचा, उसने आगे आने वाली कथा–लेखकों की पीढ़ी को ऐतिहासिक दृष्टि अपनाने को प्रेरित किया। स्कॉट के प्रमुख कहानी संग्रह है– 'वांडरिंग विलीज टेल,' 'क्रानिकल्स ऑव कैननमेट', 'डेथ ऑव द लेयर्डस जॉक', 'द टेपेस्ट्रीड चैंबर' आदि।'

राबर्ट लुई स्टीवेंसन ने रहस्य रोमांच से भरपूर कहानियाँ लिखकर ब्रिटेन में कहानियों का पाठक वर्ग तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 'द न्यू अरेबियन नाइट्स' और 'मोर न्यू अरेबियन नाईट्स' इनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं।

उन्नीसवीं शताब्दी में ब्रिटिश कहानी को वयस्क बनाने का श्रेय चार्ल्स डिकेंस को जाता है। उन्होने कहानी में सामाजिक यथार्थवाद को प्रतिष्ठा और लोकप्रियता दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। कहानी विधा में डिकेंस ने नए प्रयोग किए। डिकेंस ने ब्रिटिश समाज में व्याप्त कुरीतियों पर खुल कर प्रहार किया। डिकेंस ने कहानियों और उपन्यासों के माध्यम से अपने समाज की जो आलोचना की उसका ब्रिटेन पर व्यापक प्रभाव पड़ा। उनके द्वारा गढ़े गये चरित्र आज भी यादगार हैं।

आर्थर कोनन डॉयल ने जासूसी कहानियाँ लिखी और शरलॉक होम्स जैसा जासूसी चरित्र गढ़ा। जहां एक तरफ डिकेंस जैसे लेखक सामाजिक परिघटनाओं के कार्य कारण संबंधों की तफ़्तीश अपनी कहानियों में कर रहे थे, वहीं कोनन डॉयल जैसे लेखक हत्या और अपराध की गुत्थी को सुलझाने में कार्य कारण संबधों की भूमिका को अपनी कहानियों का विषय बना रहे थे। चाहे डिकेंस हों या कोनन डॉयल, दोनों ने ही अपनी कहानियों में तक्रणा और मानव विवेक को महिमामण्डित किया। ये बात अलग है कि डिकेंस की कहानियों का फ़लक जासूसी कहानियों से कहीं ज़्यादा व्यापक है। जासूसी कहानी की परंपरा को आगाथा क्रिस्टी जैसी लेखिकाओं ने आगे बढ़ाया।

डिकेंस की यथार्थवादी पंरपरा को अपनी कहानियों में अर्नाल्ड बेनेट ने आगे बढ़ाया। उन्होनें कहानियों में आंचलिकता को प्रतिष्ठित किया। ब्रिटेन के आँचलिक जीवन के सूक्ष्म विवरण, वातावरण की यथार्थ अभिव्यक्ति, चरित्रों का संघर्ष, गुम होती परंपराओं और अतीत बनते मानवीय बंधनों का प्रामाणिक चित्रण बेनेट की कहानियों में मिलता है।

अंग्रेज़ी कहानी के विकास में जोसेफ कॉनरेड का योगदान महत्वपूर्ण है। पोलिश होने के बावजूद उन्होनें अंग्रेज़ी भाषा में कहानियाँ लिखीं और अंग्रेज़ी के प्रतिष्ठित लेखक बने। माना जाता है कि कॉनरेड ने उन्नीसवीं शताब्दी की अंग्रेज़ी कहानी को शिल्प, कथ्य और मूल्यों की उस नवीन राह पर मोड़ा जो चलकर बीसवीं सदी की कहानियों तक पंहुची। उनके महत्वपूर्ण कहानी संग्रह हैं– 'टेल्स ऑव अनरेस्ट', 'यूथः ए नेरेटिव एण्ड अदर स्टोरीज', 'टायकून एण्ड अंदर स्टोरीज', 'ए सेट ऑव सिक्स' आदि।

रुड़यार्ड किपलिंग को कहानी विधा में विशेष महारत हासिल थी। कहा जाता है कि किंपलिग ने कहानी में जीवन के हजारों पहलुओं को अलग–अलग तरह से ऐसे छुआ कि वह हर काल के कहानी लेखकों के लिए अनुकरणीय बन गये। उनके प्रमुख कहानी संग्रह है– 'द जंगल बुक', 'द मैन हू वुड बी किंग', 'द सिटी ऑव ड्रेडफुल नाईट एण्ड अंदर प्लेसेज़', 'द सेकेंड जंगल बुक' आदि।

डी0एच0 लॉरेंस और जेम्स ज्वायस की कहानियों में बीसवीं सदी का मनुष्य आकार लेता है। लॉरेंस ने अपनी कहानियों में यौन मनोविज्ञान जैसे अछूत विषय को गहन तीव्रता और साहस के साथ प्रतिष्ठित किया और प्रचलित नैतिक मानदण्डों को कठघरे में खड़ा किया। प्रमुख कहानी संग्रह–'प्रशियन ऑफिसर एण्ड अदर स्टोरीज', 'इग्लैण्ड, माई इंग्लैण्ड', 'द वुमन हू रोड अवे एण्ड अदर स्टोरीज,' 'लव अमंग दि हेरेटिक्स', 'द लवली लेडी एण्ड अदर स्टोरीज', 'मार्डन लवर' आदि।

जेम्स ज्वायस ने कहानी विधा में क्रान्तिकारी परिवर्तन उत्पन्न किया। ज्वायस ने कहानी के शिल्प में साहसी प्रयोग किए। अपने एकमात्र कहानी संग्रह 'डब्लिनर्स' में ज्वायस ने तत्कालीन समाज की व्यंग्यात्मक छवियां रचीं और उस वातावरण का विश्वसनीय खाका तैयार किया जो मनुष्यों की इच्छाशक्ति और आध्यात्मिक सत्ता को पंगु बना डालता है। सही मायने में ज्वायस अंग्रेजी कहानी में आधुनिकतावाद के प्रवर्तक बने।

सामरसेट मॉम की कहानियाँ आलोचकों को भले ही रास न आयी हों, मगर पाठकों के बीच उनकी लोकप्रियता असंदिग्ध है। आलोचकों की उपेक्षा के बावजूद मॉम कुशल शिल्पकार और व्यंग्यकार के रूप में प्रतिष्ठित हुए। अपनी रचनाओं में उन्होनें मनोरंजन को महत्वपूर्ण माना और शिक्षाप्रद कहानियाँ लिखीं। जो कहानी को मनोरंजन के साथ शिक्षा प्रदान करने वाली विधा मानते है, सॉमरसेट मॉम निःसंदेह उनके आदर्श हैं। प्रमुख कहानी संग्रह–'ओरियंटेशंस', 'द ट्रेवेलिंग ऑव ए लीफ', 'आह किंगः सिक्स स्टोरीज', 'ईस्ट एण्ड वेस्टः द कलेक्टेड शार्ट स्टोरीज़,' 'कॉस्मोपॉलिटन्स' आदि।

एवलीन वॉ ने आधुनिक जीवन की आध्यात्मिक रिक्तता को आधार बनाकर कहानियाँ लिखी। उनकी कहानियाँ व्यंग्य की तेज धार तथा मानवीय प्रकृति के अधम पक्ष और बीसवीं शताब्दी के भय एवं आवेगों के चित्रण के लिए पहचानी जाती है। प्रमुख कहानियाँ 'मिस्टर लवडेज़ लिटिल आउटिंग', 'टैक्टिकल एक्सरसाईज़' आदि।

प्रथम विश्वयुद्ध के पहले के ब्रिटिश कहानीकारों में हेक्टर ह्यू मुनरो 'साकी' का नाम उल्लेखनीय है। उनकी कहानियाँ प्रथम विश्वयुद्ध के पहले के एडवर्डकालीन ब्रिटिश समाज के कुलीनों के खोखलेपन को व्यंग्यात्मक भाषा में उजागर करती हैं। तत्कालीन समाज में व्याप्त दोहरे मानदण्डों, मिथ्याभिमानों, दंभो और लोभों का विश्वसनीय चित्रण इन कहानियों में हुआ है। प्रमुख संग्रह 'रेजिनाल्ड', 'रेजिनाल्ड इन रशिया', 'बीस्ट्स एण्ड सुपर बीस्ट्स', 'ट्वायज़ ऑव पीस', 'द क्रॉनिकल ऑव क्लोविस' आदि।

बीसवीं शताब्दी में विज्ञान प्रौद्योगिकी के अभूतपूर्व विकास ने विज्ञान आधारित कथा–साहित्य को पनपने का पर्याप्त अवसर दिया। विज्ञान आधारित कहानियों के लेखक के रूप में एच0जी0 वेल्स और आर्थर सी0 क्लार्क को काफी प्रतिष्ठा मिली। दोनों लेखकों की प्रमुख चिंता यही थी कि विज्ञान की निरन्तर प्रगति और उसके खतरनाक प्रयोगों के बीच मानवता का भविष्य कैसा होगा। जहॉ एच0जी0 वेल्स का विश्वास था कि मानवजाति का समूल नाश हो जाएगा, वहीं क्लार्क का विचार था कि मानव जाति नए किस्म के

अधिक सक्षम प्राणियों में रूपांतरित हो जाएगी। वेल्स की प्रमुख कहानियाँ हैं– 'टेल्स ऑव स्पेस एण्ड टाईम', 'ए डोर इन द वाल' 'द वेकेण्ट कंट्री', 'द कंट्री ऑव द ब्लाईंड' आदि। क्लार्क के महत्वपूर्ण कहानी संग्रह हैं– 'एक्सपेडिशन टु अर्थ,' 'रीच फॉर टुमारो', 'टेल्स फ्रॉम व्हाईट हार्ट' आदि।

बीसवीं शताव्दी में जीवन की यांत्रिकता, नैतिक खोखलेपन, युद्धों की भयानकता और तबाही ने कुछ कहानीकारों को व्यंग्य के उस रूप की तरफ मोड़ा जिसे 'डार्क ह्यूमर' कहा जाता है। 'डार्क ह्यूमर' के अंतर्गत मानवीय पतन और त्रासदी की कहानियों को व्यंग्यात्मक लहजे में बयान किया जाता है। 'डार्क ह्यूमर' की कहानियों के लेखक के रूप में रोल्ड डाहल को काफी प्रतिष्ठा मिली। डाहल की प्रमुख कहानियाँ हैं– 'समवन लाईक यू', 'ओवर टु यू', 'स्विच बिच', 'टेल्स ऑव अनएक्सपेक्टेड' आदि।

जॉन मॉर्टीमर ने अपनी कहानियों में ऐसे चरित्र और कथानक रचे जो रहस्य–रोमांच, हास–परिहास और सामाजिक आलोचना को कुशलतापूर्वक मिश्रित करते हैं। उनकी 'रम्पोल सीरीज' प्रसिद्ध हुई।

ऑस्कर वाईल्ड और पी0जी0 वोडहाउस ने भी मनोरंजन से भरपूर कहानियाँ लिखी। समकालीन ब्रिटिश लेखकों में किंग्सले एमिस और मार्टिन एमिस उल्लेखनीय हैं।

ब्रिटिश कहानी में लेखिकाओं की समृद्ध परंपरा रही है। अगाथा क्रिस्टी और पी0डी0 जेम्स जैसी लेखिकाओं ने जासूसी और रहस्य रोमांच से भरपूर विषयों पर, जो कि पुरूष वर्चस्व के द्योतक माने जाते थे, कहानियाँ लिखीं। अन्य लेखिकाओं ने सदियों से दमित और शोषित नारी की आशाओं, आकांक्षाओं और चिंताओं को अपनी कहानियों में स्वर दिया। कैथरीन मैन्सफील्ड ने अपने स्त्री चरित्रों की भावनाओं और बेचैनियों को अभिव्यक्त करने के लिए कहानी की प्रचलित धारणाओं को तोड़ते हुऐ सटीक बिंबो और धारदार संवादों का प्रयोग किया। उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं– 'इन ए जर्मन पेंशन' 'ब्लिस', 'द गार्डन पार्टी', 'द डव्स नेस्ट', 'द लिटिल गर्ल' आदि। डैने डयू मॉरिये की कहानियाँ स्त्री–मनोविज्ञान को गहराई से संबोधित करती हैं। ड्यू मॉरिये को स्त्री–पुरूष की भिन्न मनोदशाओं और उससे उपजने वाले तनाव का चित्रण करने में महारत हासिल थी। इस तनाव ने उनकी कहानियों में रहस्य और रोमांच को निर्मित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ड्यू मॉरिये की कहानियाँ मूलतः रहस्य प्रधान है मगर यह रहस्य स्त्री चरित्रों की मानसिक दुविधाओं को बखूबी प्रदर्शित करता है। प्रमुख कहानियाँ– 'द बर्ड्स', 'कम विंड, कम वेदर', 'हैप्पी क्रिसमस', 'अर्ली स्टोरीज़' आदि। एक कहानीकार के रूप में एलिज़ाबेथ बोवेन ने मानव–स्वभाव की विदग्ध और बारीक छटाओं का बखूबी चित्रण किया। किशोरावस्था का असंतोष और उससे उपजा पीढ़ियों का संघर्ष उनकी कहानियों की मुख्य विषयवस्तु हैं। प्रमुख कहानियाँ–'इनकाउटर्स', 'एन लीज', 'द डीमन लवर', 'द कैट जम्प्स' आदि। रूथ प्रवेर झाबवाला ने भारत और पश्चिम की सांस्कृतिक मुठभेड़ को अपनी कहानियों का विषय बनाया। उनकी कहानियाँ दर्शाती हैं कि भारत और पश्चिम के बीच का संघर्ष महज रंगभेद के कारण नहीं है बल्कि उसकी जड़ें सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और मनोवैज्ञानिक जटिलताओं में निहित हैं। प्रमुख कहानियाँ– 'द हाउसवाईफ,' 'आउट ऑव इंडिया', 'एन एक्सपीरियंस ऑव इंडिया', 'लाईक बर्ड्स, लाईक फिशेज़' आदि। डोरिस लेसिंग की कहानियाँ मानवीय अनुभव में निहित शिक्षाप्रद मूल्यों की खोज करने और संस्थाओं तथा सामाजिक बंधनों का मनुष्य के मानस पर पड़ने वाले प्रभावों का अन्वेषण करने के लिए विख्यात हैं। प्रमुख कहानियाँ–'दिस वाज़ द ओल्ड चीस कंट्री,' 'नो विचक्राट फॉर सेल', 'द हैबिट ऑव लविंग', 'ए मैन एण्ड टू वुमैन,' 'एफ्रीकन स्टोरीज़' आदि। ज्याँ रीस की

कहानियाँ बेरोजगार और अकेली स्त्री की चिंताओं का यथार्थ चित्रण करती हैं। उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं– स्लीप इट ऑफ लेडी,' 'द लेट बैंक,' 'टाइगर्स आर बेटर लुकिंग' आदि। एडना ओ'ब्रायन और बेरिल बेनब्रिज द्वितीय विश्व युद्दोत्तर ब्रिटिश कहानी की प्रमुख लेखिकाएँ हैं। बेरिल बेनिब्रिज ने अपनी कहानियों में 'डार्क ह्यूमर' का प्रयोग किया। उनके चरित्र यथार्थ जीवन की जटिलताओं को व्यंजित करते हैं। उनकी कहानियाँ निम्न वर्ग के लोगों के संघर्ष, उनके जीवन की विसंगतियों, असंतोषों और त्रासदियों का विश्वसनीय चित्रण करती हैं। प्रमुख कहानियाँ 'मम एण्ड मि0 आर्मीटेज', 'कलेक्टेड स्टोरीज' आदि। एडना ओ'ब्रायन ने अपनी कहानियों में यौन परिपक्वता को प्राप्त करती आयरिश कन्याओं की मनःस्थितियों का और अपने समाज में आने वाले बदलावों के प्रति आयरिश महिलाओं के मनोवैज्ञानिक नज़रिए का सूक्ष्म चित्रण किया है।

9.4 जर्मनी में कहानी

जर्मनी में कहानी–विधा को लोकप्रिय बनाने में ग्रिम बंधुओं (जैकब ग्रिम और व्हिल्म ग्रिम) का योगदान असंदिग्ध है। उनके द्वारा रचित जर्मन–परिकथाओं के संग्रह को काफी लोकप्रियता मिली। ग्रिम बंधुओं की कथाशैली सादगी से युक्त है और बच्चों की कल्पना–शक्ति को प्रभावित करती है। आगे चलकर यथार्थवादी कहानीकारों ने जर्मन कहानी को परिकथाओं से मुक्त किया और सामाजिक आलोचना को कहानी में प्रतिष्ठित किया। इन लेखकों में ई0टी0ए0 हॉफमैन का नाम उल्लेखनीय है। हॉफमैन के चरित्र समाज द्वारा प्रताड़ित हैं और समाज द्वारा अनुमोदित परंपराओं को मानने से इंकार करते हैं। वह सामाजिक सत्ता के ताकतवर प्रभाव के आगे टिक नहीं पाते और अजीबोगरीब घटनाक्रम में भाग लेने को बाध्य होते हैं। जीवन की विसंगतियों का चित्रण करने में हॉफमैन को कुशलता हासिल थी। प्रमुख कहानियाँ– ''फैंटेसी पीसेज़', 'इन कैलोट्स मैनर,' 'लिटिल जैक्स', 'द सेंरापियन ब्रेदेरेन', 'प्रिंसेज ब्रैम्बिला' आदि।

टॉमस मान ने जर्मन कहानी में यथार्थवादी पंरपरा को नया मोड़ दिया। मान ने बुजर्आ समाज के बंजरपन को बखूबी चित्रित किया। बीसवीं शताब्दी में मनुष्य द्वारा भोगी गयी भयानक विद्रूपतायें मान की कहानियों का विषय बनीं। सामुदायिकता का ह्रास, वैयक्तिक और सांस्कृतिक मानदण्डों का पराभव, रूढ़िवादी समाज और एकाधिकार वादी शासन के विरूद्ध व्यक्ति का असंतोष मान की कहानियोँ में मुखरित हुए। प्रमुख कहानियाँ–'ट्रिस्टान', 'चिल्ड्रेन एण्ड फूल्स', 'स्टोरीज ऑव थ्री डिकेड्स', 'डेथ इन वेनिस' आदि।

बर्तोल्त ब्रेख्त की कहानियाँ बीसवीं सदी के सांस्कृतिक संकट को व्यंग्यात्मक सुर में संबोधित करती हैं। नाजीवाद और फासीवाद के खिलाफ मनुष्य की अदम्य जिजीविषा और संघर्ष उनकी कहानियों की पहचान है। खुद ब्रेख्त का जीवन संघर्षों से भरा रहा। लेकिन किसी भी परिस्थिति में उन्होने हार नहीं मानी। ब्रेख्त की कहानिया हर तरह के शोषण और जुल्म के खिलाफ मनुष्य की राजनीतिक चेतना को अभिव्यक्त करती है। प्रमुख कहानियाँ–'स्टोरीज ऑव मि0 क्यूनर', 'टेल्स फ्राम द कैलेन्डर', 'प्रोसा', 'में–ती' आदि।

जर्मनी में द्वितीय विश्वयुद्धोत्तर राजनीतिक चेतना को हाइनरिक बॉल ने अपनी कहानियों में अभिव्यक्त किया। उनकी कहानियाँ जर्मन समाज में व्याप्त क्रूरताओं और अमानवीय परिस्थितियों पर प्रहार करती हैं। सामाजिक राजनैतिक आलोचना और व्यंग्य की तेज धार बॉल की कहानियों की विशेषता है। बॉल के चरित्रों का मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद

उल्लेखनीय है। प्रमुख कहानियॉ ''ट्रेवेलर, इफ यू कम टु स्पा', 'एबसेंट विदआउट लीव', 'एट्टीन स्टोरीज,' 'चिल्ड्रेन आर सिविलियन टू' आदि।

जर्मन महिला कहानीकारों में क्रिस्टा वोल्फ का नाम उल्लेखनीय है। वोल्फ की कहानियॉ स्त्रीवादी राजनीतिक चेतना की वाहक है। समाज में महिलाओं को मिलने वाला दोयम दर्जा वोल्फ की कहानियों की प्रमुख चिंता है। राजनीतिक साहस और दृढ़ता के चलते उनकी कहानियाँ बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध और इक्कीसवीं सदी की शुरूआत में इतिहास की अस्थिर और परिवर्तनशील गति को शिद्दत से दर्ज करती हैं। 'व्हाट रिमेन्स एण्ड अदर स्टोरीज' उनका प्रमुख कहानी संग्रह है।

9.5 रूस में कहानी

रूसी लेखकों ने यूरोप में कहानी को जो ऊँचाई प्रदान की, वह अतुलनीय है। यूरोप की कहानी में लम्बे समय तक यथार्थवाद का झण्डा लगातार बुलंद रखने में रूस की भूमिका महत्वपूर्ण है। आधुनिक तत्वों से युक्त कहानी कला को रूस में अलेक्सांद्र पुश्किन और निकोलोई गोगोल ने प्रतिष्ठित किया। पुश्किन की मर्मभेदी दृष्टि और प्रेक्षण की अद्भुत क्षमता ने कहानियों में जटिल विषयों को मजेदार और रोचक अंदाज़ में प्रस्तुत किया। वक्त और नियति के सामने असहाय चरित्र पुश्किन की कहानियों को त्रासद बनाते हैं। यह कहानियाँ मानवीय स्थितियों के विरोधाभास को कुशलता से उजागर करती हैं। प्रमुख कहानियॉ 'द टेल्स ऑव बेल्किन' और 'द क्वीन ऑव स्पेड्स'।

निकोलोई गोगोल की कहानी 'ईवनिंग्स ऑन ए फार्म नियर दिकांका' को, रूस की ही नही, बल्कि यूरोप की भी आरम्भिक आधुनिक कहानी के रूप में जाना जाता है। गोगोल की कहानियाँ तत्कालीन रूस की सामाजिक विद्रूपताओं पर करारा व्यंग्य करती है। मानवीय करूणा और उल्लास का अद्भुत सम्मिश्रण गोगोल की कहानियों में पाया जाता है। गोगोल की कहानियों में जीवन का फलक बड़ा विस्तीर्ण है। इसमें साधारण से लेकर आश्चर्यजनक तक, श्रमिक से लेकर कुलीन तक और सूक्ष्म से लेकर स्थूल तक का विस्तार है। साथ ही उनके चरित्रों का मनोवैज्ञानिक आवेग कहानी के प्रवाह को दिलचस्प मोड़ दे देता है। इन कहानियों में शिल्प की अद्भुत विविधता है। यहां जादुई यथार्थवाद ('द नोज़') से लेकर डायरी ('डॉयरी ऑव ए मैडमैन') तक का शिल्प मौजूद है। प्रमुख कहानियाँ 'द ओवरकोट', 'डायरी ऑव ए मैडमैन,' 'द नोज़', 'ईवनिंग्स ऑन ए फार्म नियर दिकांका' आदि।

ईवान तुर्गनेव ने जारकालीन रूसी समाज की कुटिलताओं और किसानों की दयनीय स्थितियों तथा क्रान्तिकारियों की गतिविधियों का विश्वसनीय चित्रण अपनी कहानियों में किया। किसानों को बंधुआ बनाकर रखने का पुरजोर विरोध इन कहानियों में मिलता है। प्रमुख कहानियाँ– 'ए हण्टर्स स्केचेज़', 'फर्स्ट लव एण्ड अदर स्टोरीज़,' 'ए लियर ऑव द स्तेपीज़' आदि।

फ्योदोर दोस्तोयवस्की ने रूसी कहानी में मनुष्य के मनोजगत की विविधतापूर्ण सृष्टि की। किसी गतिविधि (जैसे कि हत्या) में निहित मनोवैज्ञानिक जटिलताएँ और पात्रों के असामान्य बर्ताव तथा सनक का सूक्ष्म और यथार्थ विवरण दोस्तोयवस्की की कहानियों की विशेषता है। इन कहानियों के असामान्य चरित्र पाठकों को समाज द्वारा परिभाषित 'सामान्य' पर प्रश्नचिन्ह लगाने को बाध्य करते हैं। प्रमुख कहानियाँ–'द गैंबलर', 'व्हाईट नाईट्स', 'ए क्रिसमस ट्री एण्ड ए वेडिंग', 'एन ऑनेस्ट थीफ' आदि।

अंतोन चेखव ने कहानी के भीतर व्यंग्य और विनोद के स्तर पर कई प्रयोग किए। चेखव की कहानियाँ अपने तकनीकी कौशल के लिए प्रसिद्ध हैं। ये कहानियाँ व्यंजनाओं और निहितार्थो से भरी पड़ी हैं। मनोवैज्ञानिक तीक्ष्णता और अभिव्यक्ति का संयम चेखव की विशेषता है। इन कहानियों में स्वांग, प्रगति, विनोद, व्यंग्य और विसंगति का सूक्ष्म और अद्वितीय संयोग घटित होता है। आधुनिक जीवन की यान्त्रिकता और स्वार्थ चेखव की कहानियों का मुख्य विषय हैं। अपने अन्य समकालीनों के विपरीत चेखव ने किसानों का महिमामण्डन नहीं किया, मध्यवर्गीय भौतिकता को खारिज किया और उच्चवर्गीय अकर्मण्यता तथा अहम्मतन्यता का पुरजोर विरोध किया। चेखव एक प्रतिबद्ध मानवतावादी थे। चेखव की कहानियाँ आधुनिक जीवन से निराशा व्यक्त करने के बावजूद निराशावादी नहीं हैं। उनके चरित्र मानवता की आत्मिक समृद्धि की व्यंजना करते हैं। चेखव रोजमर्रा की घटनाओं से कहानी बुनने में सिद्धहस्त थे। प्रमुख कहानियाँ– 'द किस', 'गूज़बेरीज़', 'द लेडी विद द डॉग', 'द टेल्स ऑव चेखव' आदि।

रूसी कहानी में यथार्थवाद के सर्वोच्च शिखर लेव तोलस्तोय और मैक्सिम गोर्की की कहानियों में मिलते हैं। तोलस्तोय ने अपने जीवन के अनुभवों, अपने परिवार की बीती जिंदगी, और रूसी जनता की नियति को अपनी कहानियों में स्थान दिया। उन्होंने उन्नीसवीं सदी के रूसी यथार्थ के विविध पहलुओं को कलात्मक प्रामाणिकता के साथ दर्ज़ किया और ऐसे एकीकृत सत्य की खोज का प्रयास किया जो मानव के आध्यात्मिक अस्तित्व की प्रकृति को व्याख्यायित कर सके। तोलस्तोय की रचनाओं ने उस बौद्धिक उत्तेजना को गति प्रदान की जिसने 1917 की रूसी क्रान्ति का मार्ग प्रशस्त किया। प्रमुख कहानियाँ– 'टेल्स ऑव सेवेस्तोपोल', 'द क्रूजर सोनाटा', 'द डेविल एण्ड अदर टेल्स', 'नोट्स ऑव ए मैडमैन एण्ड अदर स्टोरीज़' आदि।

मैक्सिम गोर्की की कहानियाँ कला के स्तर पर सामाजिक यथार्थवाद की विजय का उद्घोष करती हैं। रूसी जीवन के विविधतापूर्ण और विश्वसनीय चित्र तथा श्रमिक वर्ग का सहानुभूतिपूर्ण चित्रण उनकी कहानियों की पहचान बना। इन कहानियों ने रूस की जारशाही से त्रस्त जनता को मुक्ति के लिए प्रेरित किया। इन कहानियों में नए किस्म के चरित्रों का आविर्भाव हुआ। ये चरित्र रूस के विकासमान औद्योगिक समाज के जनसमूहों से गढ़े गये। इन कहानियों ने पहली बार फैक्टरी में काम करने वाले मजदूरों की उस युगप्रवर्तक शक्ति को पहचाना जो भ्रष्ट व्यवस्था को उखाड़ फेकने का सामर्थ्य रखती है। प्रमुख कहानियाँ– 'मकर चुद्रा', 'चेल्काश' आदि।

गोर्की के बाद बीसवी शताब्दी के रूसी कहानीकारों का ज़ोर बाह्य यथार्थ के चित्रण पर उतना नहीं रहा, जितना कि मनुष्य के अंतर्जगत् के यथार्थ पर। पश्चिमी यूरोप के आलोचकों ने इसे रूसी कहानी में व्यक्तिवाद के आविर्भाव के रूप में व्याख्यायित करने की कोशिश की है। जो भी हो, बीसवीं सदी के रूसी कहानीकारों का शिल्प अधिक जटिल है। व्यक्ति के मनोजगत के उतार–चढ़ाव को सूक्ष्म विवरणों में कैद करने की कोशिश उनकी कहानियों में प्रबल है। इन कहानीकारों में बोरिस पास्तरनाक, व्लादिमीर नैबोकोव, एलेक्सांद्र सोल्झेनित्सिन, इसहाक बेबेल का नाम उल्लेखनीय है। पास्तरनाक ने कहानियों को कविताओं की तरह रचा। उनके चरित्र बाह्य यथार्थ को आत्मनिष्ठ प्रामाणिकता के साथ परखते हैं। उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं– 'लेटर्स फ्रॉम तूला', 'द चाईल्डहुड ऑव लूवर्स' आदि। नैबोकोव की कहानियाँ अपने शैलीगत वैशिष्ट्य के लिए विख्यात हैं मगर लम्बे समय तक इन कहानियों को रूसी परंपरा से विच्छेदित माना गया क्योंकि रूसी साहित्य में सामाजिक प्रासंगिता और नैतिकता की प्रबल उपस्थिति रही है,

जबकि नैबोकोव की कहानियों में इन तत्वों का तिरस्कार है। फिर भी नैबोकोव की कहानियों में कलात्मक तत्व बड़ा प्रभावशाली है। प्रमुख कहानियाँ– 'नाईन स्टोरीज' आदि। सोल्झेनित्सिन की कहानियाँ लेखक के व्यक्तिगत अनुभवों को कलात्मक अभिव्यक्ति प्रदान करती हैं। उनकी कहानियों में राजनीतिक और सामाजिक मुद्दे काफी मुखर हैं। उनके चरित्र तत्कालीन सोवियत सत्ता से असंतुष्ट व्यक्ति है। ये कहानियाँ शीतयुद्ध के दौरान सोवियत संघ की तीव्र आलोचना करने के कारण पश्चिमी यूरोप और अमेरिका के सत्ता–प्रतिष्ठानों में काफी सराही गयी। प्रमुख कहानियाँ– 'वी नेवर मेक मिस्टेक्स', 'फार द गुड ऑव द काज' आदि।

बीसवीं शताव्दी की रूसी कहानी में स्त्री–कहानीकारों की भागीदारी बढ़ी है। तात्याना तोल्सतोय रूस की प्रमुख कहानी लेखिका के तौर पर प्रतिष्ठित हैं। उनकी कहानियाँ परिपक्व शिल्प के लिए विख्यात है। शहरी लोकभाषा का रचनात्मक इस्तेमाल उनकी प्रमुख विशेषता है। उनकी प्रमुख कहानियाँ है– 'आन द गोल्डन पोर्च,' 'स्लीपवॉकर इन ए फॉग' आदि।

9.6 इटली में कहानी

यूरोप में कहानी के विकास पर जब भी बात होगी, इटली का जिक्र जरूर होगा। इतावली लेखक बोकैशियो की 'डिकैमरान' में संकलित कहानियों को यूरोप की आरंभिक दौर की स्वतंत्र अभिव्यक्तियों में गिना जाता है। दांते की 'दैवी कामदी' से प्रेरणा लेकर बोकेशियो ने मानवीय कामदी की रचना की और उसे 'डिकैमरान' का नाम दिया। बोकेशियो ने इटली में चौदहवीं शताब्दी में कहानी का जो बीज बोया था, बीसवीं सदी के इतालवी कहानीकारों ने उसे भरे पूरे वृक्ष में तब्दील कर दिया। इनमें लुइगी पिराण्देलो, तोमासी दी लैम्पूदेसा, इतालो काल्विनो, प्राईमो लेवी, सीजर पावीज और अल्बर्तो मोराविया का नाम उल्लेखनीय है। पिराण्देलो ने सिसली के मध्यवर्ग के जीवन को आधार बनाकर प्रकृतवादी कहानियाँ लिखीं। पिराण्देलो ने इतालवी कहानी में आंचलिकता को प्रतिष्ठत किया। इन कहानियों के पात्र आदिम आवेगों और विवेकहीन आशंकाओं से ग्रस्त होकर बेकाबू नियति के शिकार बनते हैं। उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं– 'ए हार्स इन द मून', 'बेटर थिंक ट्वाईस अबाउट इट', 'द नेकेड ट्रुथ', 'द मेडेल्स' आदि। तोमासी दी लैम्पूदेसा की कहानी 'रोक्कोन्ती' मानवीय परिस्थितियों में निहित जटिलताओं और विरोधाभासों की खोज करती हैं। इतालो काल्विनो की कहानियाँ मानवीय स्थितियों की आकस्मिकता के चित्रण और कल्पनाशील शैली के लिए विख्यात हैं। काल्विनो ने कहानी के पारंपरिक रूपों में नयी जान फूंकी। साथ ही कहानी के भीतर नयी तकनीकों को भी प्रतिष्ठित किया। उनकी कहानियों में यथार्थ, फंतासी और विनोद का अद्भुत सम्मिश्रण पाया जाता है। प्रमुख कहानियाँ– 'एडम, वन आटरनून', 'अर्जेटीन एण्ट', 'स्मॉग', 'द सीज़ंस इन द सिटी,' 'द वाचर' आदि। प्राईमो लेवी इतावली भाषा के यहूदी लेखक हैं। प्रमुख कहानियाँ– 'द सिक्सथ डे', 'मोमेट्स ऑव रिप्रीव' आदि।

9.7 अन्य यूरोपीय देशों में कहानियाँ

यूरोप के अन्य देशों में कहानी का मुकम्मल विकास बीसवीं सदी में ही हो पाया। बोस्निया में कहानी को सार्थक विधा के रूप में प्रतिष्ठित करने का श्रेय ईवो आँद्रिच को जाता है। आँद्रिच की कहानियाँ बोस्निया के साधारण लोागों के जीवन–संघर्ष और अपनी जातीय अस्मिता को विदेशी ताकतों से सुरक्षित रखने की जद्दोजहद को शिद्दत से दर्ज़ करती

हैं। प्रमुख कहानियाँ– 'द वीज़ियर्स एलीफैंट', 'अनीकाज़ टाईम्स', 'जैको', 'पैनोरमा' आदि।

चेक गणराज्य के प्रमुख कहानीकार हैं– फ्रैन्ज काफ्का और मिलान कुन्देरा। काफ्का की कहानियाँ मानवीय अवचेतन को गहराई तक जाकर भेदती हैं। ये कहानियाँ सहज और सादगीयुक्त गद्यशैली के लिए उल्लेखनीय हैं। मिलान कुंदेरा यूरोप के समकालीन कहानीकारों में काफी प्रतिष्ठित हैं। चेक भाषा और साहित्य को उन्होंने नया विस्तार दिया है। अपनी कहानियों में चरित्रों के जीवन में सेक्स और राजनीति की भूमिका को तलाशते हुए कुंदेरा ने मानवीय अस्तित्व के मौलिक प्रश्नों को संबोधित किया है। इसके लिए उन्होने कथा शिल्प के स्तर पर साहसिक प्रयोग भी किये हैं। प्रमुख कहानियाँ– 'लाफेबल लवर्स' आदि। डेनमार्क में उन्नीसवीं शताब्दी में हैन्स क्रिश्चियन एण्डरसन ने कहानी विधा को लोकप्रिय बनाया। उन्होने बच्चों के लिए विश्वविख्यात परीकथाएं लिखी जिन्हें वयस्कों ने भी पसंद किया। डेनमार्क की बीसवीं सदी की महिला कहानी लेखक के रूप में इसाक दिनेसन का नाम महत्वपूर्ण है। द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात मानवीय संवेदना में घर कर गए भय और संत्रास के बिंब उनकी कहानियों में प्रचुरता से मौजूद हैं। दिनेसन का कहानी–संसार अव्याख्यायित और अतार्किक घटनाओं से भरा पड़ा है। यह ताकतवर और बेकाबू शक्तियों द्वारा संचालित है। लेकिन हमें यह ध्यान रखना होगा कि ये अव्याख्यायित और बेकाबू शक्तियाँ बीसवी शताब्दी की धनलिप्सा और यांत्रिकता की उपज है। प्रमुख कहानियाँ– 'विंटर्स टेल्स,' 'एनेक्डोट्स ऑव डेस्टिनी', 'सेवन गॉथिक टेल्स', 'लास्ट टेल्स' आदि।

नार्वे के कहानीकारों में क्नुत हामसुन और सिग्रीद उन्सेत का नाम उल्लेखनीय है। क्नुत हामसुन ने नार्वे की कहानी परंपरा में आधुनिकतावाद की नींव रखी। अपनी आरंभिक कहानियों में उन्होनें अंतमफ्रखी चरित्रों को गढ़ा मगर उनकी बाद की कहानियों में सामाजिक चिंताये साफ दृष्टिगोचर होती है तथा लेखक की वैचारिक प्रतिबद्धताएं और अधिक मुखर होती हैं। प्रमुख कहानियाँ– 'नाईट रोमर्स', 'टेल्स ऑव लव एण्ड लॉस' आदि। सिग्रीद उन्सेत नार्वे की कहानी में लेखिकाओं की सशक्त उपस्थिति को दर्ज करती हैं। महिलाओं की पीड़ा उनकी कहानियों में अभिव्यक्त हुई है। कहानी लेखन की उनकी सरल शैली ने दुनिया भर के पाठकों का मन मोह लिया है। उनकी कहानियों में कुछ का वातावरण मध्यकालीन है तो कुछ का समसामयिक मगर चाहे मध्यकालीन हो अथवा समसामयिक, दोनो ही स्थितियों में उनकी कहानियाँ स्त्रियों के मनोजगत में गहरी पैठी उत्कण्ठाओं को खूबसूरती से दर्ज़ करती हैं। प्रमुख कहानियाँ 'इमेजेज़ इन ए मिरर', 'फोर स्टोरीज' आदि।

पोलैण्ड में कहानी को लोकप्रिय बनाने का श्रेय हेनरीक सिंकेविच को जाता है। ब्रिटिश लेखक सर वाल्टर स्कॉट की तरह उन्होने इतिहास को आधार बनाकर पोलिश भाषा में कहानियाँ लिखी। उनकी कहानियों का वातावरण भले ही अतीत का हो, मगर सभ्यता के भविष्य से सम्बन्धित सार्वत्रिक मुद्दो को वह बखूबी संबोधित करती हैं। प्रमुख कहानियाँ– 'द लाइट हाउस ऑव आस्पिनवाल', 'हा–निया', 'लाईफ एण्ड डेथ', 'लिलियान मारिस', 'वेस्टर्न सेप्टेट' आदि। बीसवीं शताब्दी में पोलिश कहानी को यहूदी लेखकों ने नया मोड़ दिया। इनमें स्तानिस्ला लेम और इसाक बाशेविज़ सिंगर का नाम उल्लेखनीय है।

स्पेन के लेखक सरवांतीस ने 'दोन किख़ोते' नामक उपन्यास लिखकर स्पेन ही नहीं, वरन पूरे यूरोप में कथा साहित्य की नीव डाली मगर उनकी ख्याति एक उपन्यासकार की है,

कहानीकार की नहीं। स्पेन में कहानी को मुकम्मल ऊँचाई बीसवीं शताब्दी में कामीलो खोसे सेला ने दिलाई। सेला की कहानियों में स्पेनी राष्ट्रवाद की सार्थक अभिव्यक्ति होती है। सेला की कहानियों के नायक आदिम किस्म के मनोवैज्ञानिक आवेगों द्वारा संचालित है। इन कहानियों के कथानक बहुस्तरीय हैं। किसी आर्केस्ट्रा में गुंथे हुए स्वरों की तरह। इसीलिए सेला की कहानियों का गद्य संगीतमय है। ये कहानियाँ अपने विशिष्ट सौंदर्य बोध के लिए विश्वभर में सराही गयीं। प्रमुख कहानियाँ– 'मारेलो ब्रीतो', 'आरेंजेज़ आर विंटर फ्रूट', 'द काराबिनेरोज़ लवली मर्डर' आदि।

स्वीडन के प्रमुख कहानीकार हैं पेर लागरक्विस्त, सेल्मा लागरलॉफ और ऑगस्त स्त्रिंदबर्ज। सेल्मा लागरलाफ पहली महिला कथाकार है जिन्हें नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होने अपनी कहानियों मे स्वीडन की लोक परंपरा को ग्रामीण जीवन की यथार्थवादी अभिव्यक्ति से जोड़ा। उनकी प्रमुख कहानियॉ हैं– 'इनविज़िबिल लिंक्स', 'द क्वींस ऑव कुंगाहाल्ला' ,'क्राईस्ट लीजेंड्स' आदि। पेर लागरक्विस्त ने स्वीडिश कहानी में आधुनिकतावाद को प्रतिष्ठित किया। उनकी कहानियों में कथ्य और शिल्प का अद्भुत सायुज्य देखने को मिलता है। उनके नायक ऐसे व्यक्ति हैं जो जीवन से भौतिक समृद्धि की अपेक्षा न करके आध्यात्मिक तृप्ति की आशा करते हैं। देश, काल और अध्यात्म के परिदृश्यों को संगीतमय उतार–चढ़ाव के साथ इन कहानियों में बुना गया है। प्रमुख कहानियाँ– 'द इटर्नल स्माईल', 'द मैरिज फीस्ट' आदि। ऑगस्त स्त्रिंदबर्ज की ख्याति एक अद्भुत नाटककार के रूप में हैं, मगर उन्होने बेहतरीन कहानियाँ भी लिखीं। उनकी कहानियाँ मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद को अभिव्यक्त करती हैं। इन कहानियों में वर्ग संघर्ष है। कुलीन सत्ता के खोखलेपन के बिंब यहाँ मिलते हैं। व्यक्ति का अकेलापन, उसको छलने वाले अनुभव, सत्य की आत्मनिष्ठता और निरर्थक ब्रह्मांड़ में अपने अस्तित्व को सार्थक आकार देने की जद्दोजहद जैसे आधुनिकतावादी विषय इन कहानियों में अभिव्यक्त होते हैं। प्रमुख कहानियाँ– 'गेटिंग मैरिड', 'लीजेंड्स', 'फेयर हैवेन एण्ड फाऊल स्ट्रैण्ड' आदि।

9.8 यूरोप के यहूदी कहानीकार

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान नात्सियों द्वारा यहूदियों के नरसंहार को आधार बनाकर अद्वितीय कहानियाँ लिखी गईं। सदियों से यहूदियों को शक और संशय की निगाह से देखा गया और उन पर अत्याचार किए गये। यहूदियों पर अत्याचार की इस विरासत ने बीसवी सदी में विकराल रूप लिया। जर्मनी में नात्सीवाद के उदय और द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण यहूदियों को दिल दहला देने वाली यंत्रणा का सामना करना पड़ा। बड़े पैमाने पर अमानवीय तरीके से उनकी हत्यायें की गयीं। नस्लभेद की क्रूरतम यंत्रणाओं को भोगते हुए भी यहूदियो की आत्मिक संस्कृति कभी कमजोर नहीं पड़ी और उन्होने हर कीमत पर संघर्ष करते हुए अपनी सांस्कृतिक विरासत की रक्षा की। यहूदी कहानीकारों ने मानवीय जिजीविषा को नया आयाम दिया। आधुनिक कहानी में 'डार्क ह्यूमर' के तत्व का सबसे ज्यादा विकास यहूदी लेखको ने ही किया। ज्यादातर यहूदी लेखकों ने लेखन के लिए हेब्रू भाषा को अपनाया और एशिया में इज़राईल के निर्माण के बाद वहाँ की नागरिकता ग्रहण की, मगर कुछ यहूदी लेखक यूरोप में ही रहे और यूरोपीय भाषाओं में कहानियाँ लिखीं। इन कहानीकारों में प्राईमो लेवी (इतालवी), इसहाक बेबेल (रूसी), हाईने (जर्मन), रूथ प्रवार झाबवाला (अंग्रेजी), फ्रैन्ज काका (चैक), स्तानिस्लॉ लेम और इसाक बाशेविज़ सिंगर (पोलिश), नताली सॉरौत (फ्रेंच), अहारोन एपलफील्ड (रोमानियाई) आदि का नाम उल्लेखनीय है।

इसहाक बेबल की कहानियाँ शब्दों और शैली की मितव्ययता के लिये जानी जाती हैं। अपने चरित्रों के सम्बन्धों और क्रियाकलापों को विकसित करने के लिए बेबेल काफी चुस्त और पैने कथानकों की रचना करते हैं। प्रमुख कहानियाँ– 'टेल्स ऑव ओडेसा', 'रैड कैवलरी', आदि। फ्रैंज काफ्का की कहानियाँ मानवीय अवचेतन को गहराई तक जाकर भेदती है। इन कहानियों के चरित्र अपने मनोगत वैशिष्ट्य के लिए विख्यात हैं। इनके माध्यम से काफ्का ने बीसवीं शताब्दी की दमनकारी सत्ता के प्रति मानवता के भय, संत्रास और संशय को अजीबोगरीब, मगर प्रभावशाली मानसिक बिंबो द्वारा अभिव्यक्त किया है। प्रमुख कहानियाँ– 'द मेटामॉर्फोसिस', 'द जजमेंट', 'इन द पीनल कॉलोनी', 'द ग्रेट वाल ऑव चाईना' आदि।

बीसवीं शताब्दी की पोलिश कहानियोँ को नया मोड़ देने में स्तानिस्तॉ लेम और इसाक बाषेविज़ सिंगर का नाम उल्लेखनीय है। स्तानिस्लॉ लेम ने पोलिश कहानी में विज्ञान–कथाओं को प्रतिष्ठित करने की पहल की। वस्तुतः वह चुनिंदा यहूदी लेखकों में से हैं जिन्होंने विज्ञान कथाओं के माध्यम से जीवन की चुनौतियों को मानववादी नज़रिये से परखा है। प्रमुख कहानियाँ– 'द स्टार डायरीज़', 'टेल्स ऑव पिर्क्स,' 'द पायलेट,' 'मॉर्टल इंजिंस', 'द साईबरियाड्स' आदि। इसाक बाशेविज़ सिंगर यिद्दिश–पोलिश रचनाकार हैं। उनकी कहानियों में गुम होते समुदायों और लुप्त होती परंपराओं का जीवंत चित्रण मिलता है। साथ ही धोखा और क्रूरताओं को भोगते मनुष्यों की आत्मा का त्रास भी यहां अभिव्यक्ति पाता है। इन कहानियों के चरित्र हर किस्म के खतरे उठाकर जीवन की सार्थकता की तलाश करते हैं। प्रमुख कहानियाँ– 'गिम्पेल द फूल', 'अलोन,' 'द फ्रेंड ऑव काका', 'शार्ट फ्राईडे,' 'ए क्राउन ऑव फेदर्स' आदि।

अहारेन एपलफील्ड रोमानिया के विश्वविख्यात कहानीकार हैं। ग्यारह साल की उम्र में वे नात्सी कैद से भाग निकले। यहूदियों पर हुए नात्सी अत्याचारों का उनके बाल मन पर गहरा प्रभाव पड़ा जो वयस्क होने पर उनकी रचनाओं में अनूठे ढंग से व्यक्त हुआ। उनकी कहानियाँ यहूदी नरसंहार के भीषण वातावरण का चित्र खींचती है और इस नरसंहार के पहले तथा बाद की यहूदी चिंताओं को स्वर देती है। प्रमुख कहानियाँ– 'अशान', 'इन द विल्डरनेस' आदि।

9.9 सारांश

एम0ए0 हिन्दी के द्वितीय वर्ष के कहानी से संबंधित मॉड्यूल के पाठ्यक्रम 'कहानीः स्वरूप और विकास' से संबंधित तीसरे खण्ड की नवीं इकाई का अध्ययन आपने किया है। यह यूरोप में कहानी के विकास को दर्शाने वाली इकाई है।

इकाई–9 के इस पाठ में हमने यूरोप के विभिन्न देशों में कहानी के विकास पर चर्चा की है। यूरोप में कहानी को उस मौखिक परंपरा से जोड़ा जाता है जिसने होमर के महाकाव्यों 'इलियाड' और 'ओडिसी' को जन्म दिया। आज कहानी विधा ने जो रूप अर्जित किया है, उसका प्रादुर्भाव उन्नीसवीं शताब्दी में हुआ। फ्रान्स, ब्रिटेन, जर्मनी, रूस, इटली और यूरोप के अन्य देशों में कहानी की दशा और दिशा का परिचय आपने प्राप्त किया है। आधुनिक कहानी के विकास में फ्रांस की भूमिका अविस्मरणीय है। बाल्ज़ाक जैसे लेखकों ने कहानी में न सिर्फ यथार्थवाद की ज़मीन तैयार की, बल्कि उसको मुकम्मल अभिव्यक्ति भी दी। कहानी में लेखिकाओं की समृद्ध परंपरा रही है। इस इकाई में पुरूष कहानीकारों के साथ साथ स्त्री कहानीकारों और उनकी कहानियों की भी

जानकारी आपने प्राप्त की है। जर्मनी में नात्सीवाद के उदय और द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण यहूदियों को दिल दहला देने वाली यंत्रणा का सामना करना पड़ा। बड़े पैमाने पर अमानवीय तरीके से उनकी हत्यायें की गयीं। यहूदी कहानीकारों ने मानवीय जिजीविषा को नया आयाम दिया। ज़्यादातर यहूदी लेखकों ने लेखन के लिए हिब्रू भाषा को अपनाया और एशिया में इज़राईल के निर्माण के बाद वहाँ की नागरिकता ग्रहण की, मगर कुछ यहूदी लेखक यूरोप में ही रहे और यूरोपीय भाषाओं में कहानियाँ लिखीं। यूरोप में रहकर यूरोप की भाषाओं में कहानी लिखने वाले यहूदी लेखकों को भी आप जान चुके/चुकीं है।

अभ्यास

1. फ्रांस में कहानी के विकास पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
2. यूरोप की कहानी में रूस के अवदान को समझाइये।
3. इंगलैण्ड की प्रमुख स्त्री–कहानीकारों का परिचय दीजिये।
4. यूरोप के प्रमुख यहूदी लेखकों और उनकी कहानी कला पर प्रकाश डालिये।
5. स्पेन में कहानी के विकास पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिये।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 10 अमेरिका में कहानी

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य

10.1 प्रस्तावना

10.2 अमेरिका में कहानी का उद्भव और विकास

10.3 एक नये युग में संक्रमण

10.4 बीसवीं शताब्दी

10.5 मुक्ति का स्वप्न

10.5.1 अफ्रीकी–अमेरिकी कहानी

10.5.2 स्त्री–लेखन और कहानी

10.5.3 अमेरिकी–यहूदी लेखन और कहानी

10.6 विस्तार पाती संभावनाएं

10.7 सारांश

अभ्यास

10.0 उद्देश्य

यह एम ए हिन्दी के द्वितीय वर्ष के कहानी से सम्बंधित मॉड्यूल के पाठ्यक्रम "कहानीः स्वरूप और विकास" से सम्बंधित तीसरे खंड की दसवीं इकाई है । इस इकाई में हम संयुक्त राज्य अमेरिका में कहानी के उद्भव और विकास पर विस्तार से चर्चा करेंगे । अमेरिका के सांस्कृतिक विकास में कहानी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है । विश्वस्तर के कई अमर कहानीकार अमेरिका ने हमें दिये हैं। इन कहानीकारों ने पूरी दुनिया मे कहानी के विकास को निर्णायक रूप से प्रभावित किया है। अमेरिका में उन्नीसवीं सदी से लेकर अब तक कहानी नें कई उतार–चढ़ाव देखे हैं। इस इकाई में हम इन्हीं उतारों–चढ़ावों के बीच अमेरिका में कहानी के विकास को रेखांकित करेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप अमेरिका में कहानी की विकास–यात्रा को समझ सकेंगे/सकेंगी।

10.1 प्रस्तावना

ऐसी मान्यता है कि सही मायने में जिसे आधुनिक कहानी कहा जाता है, उसका जन्म अमेरिका में ही हुआ। अमेरिकी लेखक वाशिंगटन इरविंग की कहानियों 'रिप वान विंकल' और 'द लीजेंड आव स्लीपी हॉलो' से आधुनिक अमेरिकी कहानी की शुरूआत मानी जाती है मगर इन कहानियों के आविर्भाव से पहले भी अनेक गद्य रूप ऐसे थे जिनमें कहानियों के कुछ लक्षण पाये जाते थे। कहानी के तत्व सबसे ज्यादा अभिव्यक्त हुए थे परिकथाओं और लोककथाओं में, तथा हर सांस्कृतिक समुदाय की तरह अमेरिका में भी इन रूपों ने मानवीय संवेदना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। उदाहरण के लिये स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान पार्सन वीम्स के उस वृतांत का जिक्र किया जा सकता है जिसमें युवा जार्ज वाशिंगटन द्वारा अपने पिता के चेरी के पेड़ को काटने के किस्से का वर्णन

होता है। यह किस्सा संयुक्त राज्य अमेरिका के सांस्कृतिक मिथकों में महत्वपूर्ण हैसियत रखता है। कहानी के कुछ तत्व अठारहवीं शताब्दी के धार्मिक भाषणों और नैतिक एवं व्यंग्यात्मक निबंधों में भी देखने को मिलते हैं, जिनमें बेन फ्रैंकलिन का 'बैगाटेल्स' उल्लेखनीय है। वास्तव में बेन फ्रैंकलिन की हास्य रस से युक्त 'द स्पीच ऑव मिस पॉली बेकर' को आधुनिक अमेरिकी कहानी का आदि रूप कहने के लोभ का संवरण कर पाना मुश्किल है। इन रचनाओं को संभवतः यह श्रेय दिया जा सकता है कि अमेरिका में कहानी को परिपक्व विधा का रूप देने में इनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही है मगर विषयवस्तु और तकनीकी कौशल की परिपक्वता, जो आधुनिक कहानी की विशेषता है, का नितांत अभाव इन रचनाओं मे पाया जाता है। आख्यान और शैली की दृष्टि से भी अगर आधुनिक कहानी से इन रचनाओं की तुलना की जाए तो ये कृत्रिम, शब्दाडंबर से युक्त और बेढंगी प्रतीत होती हैं।

10.2 अमेरिका में कहानी का उद्‌भव और विकास

वाशिंगटन इरविंग ने कहानी के आख्यान और शैली को सिरे से बदल डाला। इरविंग ने अमेरिकी कहानी को उपदेशात्मकता की कैद से बाहर निकाला, और उसे ऐसी प्रभावोत्पादकता से नवाजा जिसने साहित्यिक राष्ट्रवाद की उन नयी राहों को खोला जो क्रांति के समय से ही अमेरिकी मानस को पुकार रही थीं। इरविंग ने अमेरिकी कहानी में ऐसे यादगार चरित्रों का सृजन किया जिनकी रोमांचक गाथाओं ने उन प्रश्नों से मुठभेड़ की जो क्रांति के बाद की नयी दुनिया में मानवीय अस्तित्व से प्रत्यक्षतः जुड़े थे। राष्ट्रीय अस्मिता के मुद्दों, लोकतांत्रिक समाज की बदलती धारणाओं, विविधता और गतिशीलता से युक्त समाज की संभावनाओं और आकांक्षाओं तथा ग्रामीण एवं व्यावसायिक मूल्यों के अंतर्द्वंद्व के साथ इरविंग की कहानियों ने विश्वसनीय रिश्ता बनाया। इरविंग ने खिलंदड़पन से युक्त ऐसी शैली ईजाद की जो ऊपर से तो गंभीरता का तिरस्कार करती प्रतीत होती है, मगर गहराई से देखने पर वह अमेरिकी लोकतंत्र से जुड़े गंभीर प्रश्नों को संबोधित करती है। इरविंग ही वह पहले लेखक थे जिन्होंने कलात्मक सौष्ठव से युक्त आख्यान के महत्व को समझा था। उन्होंने किस्सागोई की कला को कहानी की विषयवस्तु के समकक्ष महत्वपूर्ण माना। इरविंग का स्पष्ट मानना था कि लंबे कथात्मक वितान नीरस होने के बावजूद लोकप्रिय हो सकते हैं क्योंकि लेखक पात्रों और कथानक के बूते पाठकों को पन्ने पलटने और पूरी किताब पढ़ने को प्रेरित कर सकता है, मगर कहानी ऐसी विधा है जो तब तक कामयाब नहीं हो सकती जब तक कलात्मकता के प्रति लेखक का सजग और सतत समर्पण न हो। कहानी को जिस तरह इरविंग ने गढ़ा वह विविधतापूर्ण चरित्रों, सावधानीपूर्वक रचे गये परिदृश्यों और शैली के सूक्ष्म उतार चढ़ाव पर अधिकार रखने वाले सजग साहित्यिक कलारूप का पर्याय बन गयी।

मगर इर्विंग ने कहानी को जिस नयी राह पर मोड़ा, उस पर चलना आसान नहीं था। इस दौर में अमेरिका में कहानी विधा के विकास के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा थी कहानी के सुस्थापित बाजार का अभाव। कहानी का ऐसा कोई बाजार अमेरिका में नहीं था जो कहानी लेखक को आलोचनात्मक अनुशंसा के साथ साथ जीविकोपार्जन का भी साधन मुहैया करा सके। यह एक ऐसी बाधा थी जिसने लेखकों को इरविंग द्वारा सुझाए गये कहानी के नवीन मार्ग पर चलने से हतोत्साहित किया।

लेकिन बाजार के अभाव के बावजूद कहानी लेखक के रूप में इरविंग की सफलता एक सच्चाई थी इसलिये ज्यादा नहीं तो कुछ लेखकों ने प्रेरित हो कर कहानी–लेखन के पथ

पर कदम बढ़ाया। 1820 और 1830 के दशक में कुछ अच्छी कहानियाँ लिखी गयीं। इनमें विलियम ऑस्टिन, जेम्स कर्क पौडलिंग और विलियम क्युलन बाईरैंट की कहानियाँ उल्लेखनीय है। कुछ महिलाओं ने भी कहानियाँ लिखीं जो नये लोकतांत्रिक समाज में विशेष रूप से स्त्रियों की स्थिति पर केंद्रित थीं। इनमें कैथरीन सेजविक, एलिजा लेस्ली और लीडिया मारिया चाईल्ड का नाम उल्लेखनीय है।

यदि इरविंग को अमेरिकी कहानी का जनक होने का श्रेय प्राप्त है तो नथैनियल हॉथार्न और एडगर एलन पो इस नये कलारूप के संस्थापक और प्रतिष्ठापक के तौर पर सम्मानित हैं। उन्होंने कहानी की आख्यानिक संरचना और कथानक को मजबूती प्रदान की और इरविंग के लंबे विवरणों और दिलचस्प विषयांतरों के स्थान पर कलात्मक स्थापत्य के सुस्पष्ट बोध को प्रतिष्ठित किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने चरित्रों के विकास में मनोवैज्ञानिक सूक्ष्मताओं का बखूबी इस्तेमाल करते हुए इसे अमेरिकी कहानी का स्थाई गुण बनने का मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने कहानी की विषयवस्तु का भी विस्तार किया और नये रूपों तथा नयी विधाओं का कहानी में समावेश किया। एक कहानी लेखक के रूप में हॉथार्न की प्रसिद्धि उनकी महान ऐतिहासिक गाथाओं के कारण है। ऐसे समय में जब अमेरिकी इतिहास का साहित्यिक उपयोग राष्ट्रभक्ति की उमंगों में सराबोर था, तब हॉथार्न ने साहस के साथ अपराध–बोध, दमन, क्रूरता, अत्याचार और अन्याय के भावों को अभिव्यक्त करने वाली इतिहास आधारित कहानियाँ लिखीं और इन भावों से उपजने वाली मनोवैज्ञानिक उथल पुथल का विस्तृत वर्णन किया। इन कहानियों में हम ऐतिहासिक तथ्यों की दुनिया से निकल कर अतियथार्थ के बिंबों से आक्रांत उन मनोवैज्ञानिक दृश्यों मे प्रवेश कर जाते हैं जो ज्ञानमीमांसा और तत्वमीमांसा के मूलभूत मुद्दों को प्रश्नांकित करते हैं। ये कहानियाँ अमेरिकी अतीत और मानव चित्त से संबंधित असुविधाजनक सच्चाईयों को उजागर करती हैं।

फिर भी अपने समय में हॉथार्न को प्रशंसा मिली सहृदय शब्द–चित्रों और अन्योक्तिपरक कहानियों के लिये। वह संभवतः पहले अमेरिकी लेखक थे जिन्होंने विज्ञान कथायें लिखी। उन्होंने बच्चों के लिये भी लोकप्रिय कहानियाँ लिखीं। वह ताउम्र कहानी में विभिन्न रूपों और विषयवस्तुओं के साथ प्रयोग करते रहे। हॉथार्न की कहानियों को लालित्यपूर्ण शैली और व्यंग्यात्मक लहजे के लिये याद रखा जाएगा। महत्वपूर्ण कहानियाँ– 'यंग गुडमैन ब्राउन', 'रोजर मालविंस बरियल', 'द जेंटिल ब्वाय', 'माई किंसमैन, मेजर मोलिनियूक्स', 'द मिनिस्टर्स ब्लैक वील', 'अलेगोरीज ऑव द हार्ट', 'टैंगलवुड टेल्स', 'द होल हिस्टरी ऑव ग्रैंडफादर्स चेयर' आदि।

एडगर एलन पो को ऐसे कहानीकार के रूप में याद किया जायेगा जिसने अमेरिकी रूमानी गाथाओं को महत्वपूर्ण साहित्यिक उपलब्धि के रूप में प्रतिष्ठित किया। पो ने डरावनी कहानियों को एक गंभीर साहित्यिक विधा में रूपांतरित किया और अमेरिकी साहित्य में जासूसी कहानियों का आविष्कार किया। पो ने कहानी की एकान्विति पर जोर दिया और कहा कि कहानी के प्रत्येक तत्व को इस एकान्वित प्रभाव की वृद्धि करने में योग देना चाहिये। पो ने ऐसी कहानियाँ रचीं, जो एक तरफ कलात्मक गहराई से परिपूर्ण हैं, तो दूसरी तरफ इतनी छोटी हैं कि उन्हें एक ही बार में पढ़ा जा सकता है। गहरी कलात्मकता को छोटे से वितान मे समावेशित करने की क्षमता के चलते कहानी को पो ने उपन्यास से श्रेष्ठ माना। पो की उपलब्धियों की विविधता उसकी इस क्षमता में अभिव्यक्त होती है कि उसने न सिर्फ जासूसी कहानियों का आविष्कार किया जिनमें किसी आपराधिक गुत्थी को सुलझाने और न्याय की स्थापना के लिये तर्कणा और विवेकशीलता का आश्रय लिया जाता है, बल्कि वह इनके विरोधी मूल्यों पर आधरित

डरावनी कहानियों का भी अत्यंत कुशल रचयिता था जिसमें अतार्किक, अजीबोगरीब, मनगढ़ंत और ऊलजलूल किस्सों का प्रयोग क्रूरता, वीभत्सता एवं बदले की व्यक्तिगत भावना से युक्त काल्पनिक घटनाओं की अभिव्यक्ति के लिये होता है। डर या भय उत्पन्न करने वाली कहानियाँ पहले भी लिखी गयीं थी, मगर पो ने जो कारीगरी और मनोवैज्ञानिक अंर्तदृष्टि इन कहानियों को प्रदान की वह अभूतपूर्व थी। पो ने कहानियों में एकान्वित प्रभाव के साथ साथ अर्थ की बहुस्तरीयता को भी प्रतिष्ठित किया। हॉथार्न की ही तरह पो ने भी कहानी में आम बोलचाल की भाषा में कम रूचि ली और प्रतीकात्मक भाषा का व्यापक स्तर पर प्रयोग किया। यह कहना गलत नहीं होगा कि अमेरिका में रूमानी कहानी का जो सिलसिला इरविंग से शुरू हुआ, वह हॉथार्न की कहानियों से गुजर कर अपना सर्वोच्च शिखर पो की कहनियों में प्राप्त करता है। पो की महत्वपूर्ण कहानियाँ –'द मर्डर्स इन द रयू मॉर्ग', 'द गोल्ड बग', 'द परलोइंड लेटर', 'द फाल ऑव द हाऊस ऑव उशेर', 'द टेल टेल हार्ट', 'द कास्क ऑव एमॉन्टिल्लाडो', 'द ब्लैक कैट' आदि।

पो कहानी को नैतिक आग्रहों से मुक्त रखने के पक्षधर थे, मगर हर्मन मेलविले ने कहानी और नैतिकता के गहरे संबंध को शिद्दत से रेखांकित किया। मेलविले ने कहानी में जो नये प्रयोग किये, वह उस समय ज्यादा ध्यान आकृष्ट नहीं कर पाये, मगर बीसवीं शताब्दी में उन्हें अमेरिकी कहानी के सबसे कुशल और सबसे दक्ष लेखक के रूप में पहचाना गया। उनकी लंबी कहानी 'बेनिटो सेरेनो' रूमानियत से लबरेज है तो एक अन्य कहानी 'बार्टलेबी द स्क्रिवनरः ए स्टोरी ऑव वाल स्ट्रीट' यथार्थवाद की ओर मुड़ती दिखाई पड़ती है जिसमें व्यावसायिक समाज में मूल्यहीन श्रम के विषैले प्रभावों की आलोचना की गयी है। अपनी सर्वश्रेष्ठ कहानियों मे मेलविले ने दुनिया को विविधतापूर्ण नजरिये से देखने का आग्रह किया है। उनकी कहानियों से यह ध्वनित होता है कि मानवीय अनुभव एकसाथ दार्शनिक पड़ताल और अश्लील चुटकलों का अनूठा स्रोत है। मेलविले की अन्य महत्वपूर्ण कहानियाँ हैं 'कॉक अ डूड्ल डू', 'आई एण्ड माई चिमनी', 'द एपल–ट्री टेबल' आदि।

मेलविले के बाद कहानी की रूमानी परंपरा के महत्वपूर्ण लेखक हैं फिट्ज–जेम्स ओ'ब्रायन और हैरियट प्रेस्कॉट स्पॉफोर्ड। ओ'ब्रायन की कहानियाँ उत्सुकता और अभिरूचि के नये आयामों की तलाश करती हैं। ओ'ब्रायन की उत्ष्ट कहानियों का आधार वे चिंतायें और मुद्दे हैं जो दमनकारी समाज में समलैंगिकों के लिये काफी महत्व रखते हैं। उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं– 'द डायमंड लेंस', 'द लॉस्ट रूम' आदि। अमेरिकी लेखिका हैरियट स्पॉफोर्ड नें स्त्री चिंताओं को स्वर देकर कहानी में नारीवादी आयाम जोड़ा। उनकी कहानी 'इन द सेलर' को किसी अमेरिकी महिला द्वारा लिखी गयी आरंभिक महत्वपूर्ण जासूसी कहानियों में शुमार किया जाता है। उनकी अन्य महत्वपूर्ण कहानियाँ हैं 'द एंबर गॉड्स' और 'हर स्टोरी'।

1857 में अटलांटिक मंथली नामक साहित्यिक पत्र का प्रकाशन शुरू होने के बाद अमेरिका में कहानी का बाजार बनना शुरू हुआ। बाद में द गलैक्सी, लिप्पिनकाट्स मैगजीन, स्क्रिबनर्स मंथली, द सेंचुरी मैगजीन आदि साहित्यिक पत्रों के प्रकाशन ने कहानीकारों को प्रोत्साहित किया। इस तरह उन्नीसवीं सदी के अंत तक अमेरिकी कहानीकारों के लिये साहित्यिक पत्रों और बाजार के माध्यम से उर्वर महौल बन चुका था।

उन्नीसवीं सदी के अंत में यथार्थवाद के उदय के साथ अमेरिकी कहानी में महत्वपूर्ण मोड़ आता है। अमेरिकी गृह–युद्ध के दौरान यथार्थवाद ने कथा साहित्य पर प्रभुत्व स्थापित

किया। यथार्थवादी कहानी के आधारभूत लक्षणों को निर्धारित और परिभाषित करने में न्यू इंग्लैंड की अमेरिकी लेखिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका सदैव अविस्मरणीय रहेगी। इसके अतिरिक्त दक्षिण के अमेरिकी व्यंग्य–लेखकों का योगदान भी कहानी में यथार्थवाद की स्थापना की दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा। दक्षिण के व्यंग्य लेखक और उनकी कहानियाँ, जो यथार्थवाद की स्थापना की दृष्टि से महत्वपूर्ण रहीं, उनके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं– थॉमस बैंग थॉर्प की 'द बिग बियर ऑव अर्कंसास', आगस्टस बाल्डविन लॉगस्ट्रीट की 'जॉर्जिया सीन्स', जॉनसन जोन्स हूपर की 'सम अडवेंचर्स ऑव कैप्ट्न साईमन सग्स', जोसेफ बाल्डविन की 'लश टाईम्स ऑव अल्बामा एण्ड मिसीसिपी' और जार्ज वाशिंगटन हैरिस की 'सट लविंगुड्स यार्न स्पन बाई ए "नैचुरल बॉर्न डूरण्ड फूल"'। जब मुख्यधारा के पुराने लेखक बनावटी और कृत्रिम भाषा में कहानियाँ रच रहे थे, तब दक्षिण के इन व्यंग्यलेखकों ने कहानी में क्षेत्रीय भाषाओं को महत्व दिया और आम बोलचाल की भाषा के प्रयोग का मार्ग प्रशस्त किया। हालाँकि यह रचनाएं साहित्यिक दृष्टि से उच्चकोटि की नहीं मानी जातीं, फिर भी आगे आने वाले महान अमेरिकी कहानी लेखकों जैसे मार्क ट्वेन और विलियम फॉकनर पर इनका प्रभाव असंदिग्ध रूप से पड़ा। इन लेखकों नें ईमानदारी से जीवन के कठोर यथार्थ की अभिव्यक्ति पर ज़ोर दिया और साधारण जनता की ज़मीनी भाषा में निहित रचनात्मकता की पड़ताल कर यथार्थवाद के विकास के लिये अहम और ज़रूरी रास्तों का निर्माण किया।

न्यू इंग्लैंड की अमेरिकी लेखिकाओं ने भी यथार्थवाद के लिये एक अलग तरह से रास्ता बनाया। हैरियट बीचर स्टो, जिनके उपन्यास 'अंकल टॉम्स केबिन' ने अमेरिका मे दास प्रथा के उन्मूलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, की कहानियों ने न्यू इंग्लैण्ड के ग्रामीण जीवन की वास्तविकता को अभिव्यक्ति देकर अमेरिकी कहानी में उस यथार्थवादी परंपरा की नींव डाली जिसने साधारण नागरिकों के घरेलू जीवन को साहित्य के विषय के रूप में प्रतिष्ठित किया। स्टो ने साधारण व्यक्तियों की साधारण भाषा के साहित्यिक मूल्य को पहचाना और कहानियों मे उस लहजे को जस का तस उतारने की कामयाब कोशिश की जिसमें वे अपनी आशाओं और कुंठाओं को स्वर देते थे। स्टो के महत्वपूर्ण कहानी संग्रह हैं 'द मेलावर', 'ओल्डटाऊन फोक्स', 'सैम लॉसन्स ओल्डटाऊन फायरसाईड टेल्स' आदि। अन्य अमेरिकी लेखिका रोज टेरी कुक ने भी नयी यथार्थवादी पद्धति को अपनी कहानियों में पाखंड की पोल खोलने और दमित जिंदगियों की खामोश त्रासदी को दर्शाने के लिये अपनाया। अपनी प्रसिद्ध कहानी 'टू लेट' में उन्होंने न्यू इंग्लैंड के पारंपरिक ईसाई समाज में बेमेल विवाहों और स्त्रियों के दमन की कटु आलोचना की। एलिजाबेथ स्टुअर्ट फेल्प्स वार्ड ने सामाजिक विषयों पर आधारित कहानियाँ लिखीं जो गरीब श्रमिकों के पक्ष में करूणा और न्याय की आवाज बुलंद करती हैं। उनकी ऐसी ही एक कहानी है 'सील्ड ऑर्डर्स'। रेबेका हार्डिंग डेवीस की कहानी 'लाईफ इन द आईरन मिल्स' तत्कालीन समाज में व्याप्त गरीबी का यथार्थ चित्रण करती है। अमेरिकी गृह–युद्ध की समाप्ति के बाद भी स्त्री–कहानीकारों ने कहानी में यथार्थवाद की स्थापना में निर्णायक भूमिका अदा की। तब से लेकर अब तक ज़्यादातर अमेरिकी लेखिकाओं ने यथार्थवाद को अपने लेखन की सबसे प्रभावी पद्धति के रूप मे आत्मसात किया है क्योंकि यथार्थवाद जेंडर आधारित शोषण को अभिव्यक्त करने की सबसे कारगर पद्धति साबित हुई है।

अमेरिका के महान यथार्थवादी लेखकों में विलियम डीन हॉवेल्स, हेनरी जेम्स और मार्क ट्वेन का नाम उल्लेखनीय है मगर इनसे पहले भी कुछ लेखक थे जिन्होंने यथार्थवादी कहानियाँ लिखीं। इनमें थॉमस बेली एल्ड्रिच, फ्रैंक स्टॉकटन और ब्रेट हार्टे का नाम उल्लेखनीय है।

हॉवेल्स, जेम्स और ट्वेन का यथार्थवाद उपन्यासों में असरदार अभिव्यक्ति प्राप्त करता है, मगर इनकी कहानियों का यथार्थवाद भी उल्लेखनीय रहा है। हॉवेल्स की कहानी 'एडिथा' युद्धविरोधी है और उस रूमानी कल्पनाशीलता का पुरजोर खण्डन करती है जो युद्धोन्माद को उत्पन्न करता है। हेनरी जेम्स ने कलाकारों और उनके सृजन धर्म के बारे में विचारोत्पादक कहानियाँ लिखीं। जेम्स ने कलाकारों और कला–प्रक्रिया को कहानी का विषय–वस्तु बनाकर उसे एक नये किस्म की आलोचनात्मक स्व–चेतनता प्रदान की। इस प्रकार पहली बार कहानी, कला के आंतरिक यथार्थ के सौंदर्यशास्त्रीय मूल्यांकन का माध्यम बनी। अपने लेखन के अंतिम दौर में जेम्स ने यथार्थवाद को गहन प्रभावी अभिव्यक्ति की मनोवैज्ञानिक विधा में रूपांतरित किया जिससे कहानी में आधुनिकतावाद के केंद्रीय तत्वों यथा चेतना–प्रवाह शैली और प्रयोगवाद की सहज स्थापना संभव हो सकी। मार्क ट्वेन ने अमेरिकी कहानी में कॉमेडी को मजबूती से स्थापित किया। उन्होंने कामेडी की परंपरा के सारे मजबूत पक्षों को इकठ्ठा करके कहानी के समुन्नत शिल्प में पिरोया। इन कहानियों में स्थानीय चरित्रों और भाषा के माध्यम से बुर्जुआ लोकतंत्र और उसमे अंतर्निहित लालच और धनलिप्सा के वृहत्तर बिंबों की रचनात्मक अभिव्यक्ति हुई है। ट्वेन की काहानियां साधारणीकरण को बखूबी अंजाम देती हैं। स्थानीयता का भरपूर इस्तेमाल होने पर भी ये कहानियाँ सामान्य मानवीय अनुभव की व्यापकता को प्रतिध्वनित करती हैं। प्रमुख कहानियाँ– 'द सेलेब्रेटेड जंपिंग फ्रॉग ऑव कालावेरास काऊंटी', 'ए ट्रू स्टोरी', 'द फैक्ट्स कंसर्निंग द रीसेंट कार्निवाल ऑव क्राईम इन कनेक्टिकट', 'द मैन दैट करेप्टेड हेडलीबर्ग' आदि।

उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में अमेरिकी कहानी में प्रकृतवाद की अभिव्यक्ति हुई। कुछ आलोचकों ने इसे यथार्थवाद की ही अपरिष्कृत अभिव्यक्ति माना मगर यथार्थवाद और प्रकृतवाद में महत्वपूर्ण अंतर है, जिसे नज़रदांज नहीं किया जा सकता प्रकृतवाद वैज्ञानिक निर्धारणवाद की साहित्यिक प्रतिक्रिया है जो मनुष्य को ऐसी बाह्य और आंतरिक ताकतों का शिकार मानता है जिन पर उसका नियंत्रण नहीं है और जिनको वह समझ भी नहीं सकता। जहाँ यथार्थवाद मनुष्य को यह छूट देता है कि वह जटिल परिस्थितियों के बीच अपना चुनाव कर सके, वहीं प्रकृतवाद मनुष्य को पूर्णतः पारिस्थितिक गुलाम मानते हुए किसी भी तरह के चुनाव की छूट नहीं देता। प्रकृतवाद लेखक अपने अधिकतर समय और ऊर्जा का निवेश मुख्य पात्रों के बनाम पार्श्वभूमि और उससे उत्सर्जित होने वाली ताकतों के वर्णन में करता है। मानव व्यवहार का वर्णन करने के लिये वह पशुओं और मशीनों के बिंबों का इस्तेमाल करता है। प्रकृतवाद के अनुसार यह दुनिया मनुष्य के लिये एक खतरनाक और हिंसक जगह है जिसमें रहते हुए वह अधिक से अधिक अपनी सीमाओं को समझने की गहरी अंर्तदृष्टियाँ ही विकसित कर सकता है। प्रकृतवादी कहानियों में महत्वपूर्ण हैं स्टीफन क्रेन की 'द ओपन बोट', फ्रैंक नॉरिस की 'ए डील इन व्हीट', जैक लण्डन की 'टु बिल्ड ए फायर' आदि। एक आंदोलन के रूप में प्रकृतवाद की उम्र अमेरिका मे ज्यादा लंबी नहीं रही, मगर उसने मानव अस्तित्व से जुड़े महत्वपूर्ण सवाल उठाए– क्या मनुष्य की हैसियत पशु या मशीन से अधिक है? या लगातार विमानवीकृत होती दुनिया में हमें संपूर्ण मनुष्य बनने के लिये क्या करना चाहिये? आदि। साथ ही बीसवीं सदी के अमेरिकन कहानीकारों को प्रकृतवाद ने गहराई से प्रभावित किया।

10.3 एक नये युग में संक्रमण

उन्नीसवीं सदी के आखिरी दशक मे अमेरिकी कहानी में नये धरातल फूटते हैं। स्टीफेन क्रेन के साथ अमेरिकी कहानी एक नये युग में प्रवेश करती है। क्रेन ने कहानी में

आख्यान की विभिन्न तकनीकों के साथ महत्वपूर्ण प्रयोग किये। उन्होंने विसंगति, विडंबना और यथार्थ की प्रभाववादी अभिव्यंजना को कहानी की शैली में समावेशित किया। क्रेन ने दिल को छू लेने वाले ऐसे साधारण चरित्रों को रचा जो दुनिया की व्याख्या अपने सीमित दृष्टिकोण से करते हैं। चाहे अप्रवासी बस्तियों की स्थापना और शहरीकरण की बात हो, पश्चिम में सीमांतों का विलोपन हो, युद्ध के दौरान संघर्ष हो, या फिर जीवन की विसंगतियाँ हों, क्रेन की कहानियाँ उन प्रमुख भौतिक और सांस्कृतिक शक्तियों का विश्वसनीय चित्रण करती हैं जिन्होंने अमेरिकी संस्कृति को उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में रूपांतरित करने में अहम भूमिका निभाई। प्रमुख कहानियाँ–'अंकल जेक एण्ड द बेल हैंडिल', 'ए घोल्स अकाऊंटेंट', 'एन एक्सप्लोजन ऑव सेवेन बेबीज', 'फोर मेन इन अ केव', 'द मेस्मेरिक माऊंटेन', 'द ब्लैक डॉगः ए नाईट ऑव स्पेक्ट्रल टेरर' आदि।

अमेरिकी लेखिका केट चॉपिन ने अपनी कहानियों में आंचलिकता को सशक्त अभिव्यक्ति दी तथा जातीय और वर्गीय मुद्दों को संबोधित करते हुए ऐसे स्त्री–चरित्रों की रचना की जो अपने युग के प्रभावी लैंगिक पूर्वाग्रहों के मार्ग से विचलन करते हुए अपनी अलग राहें तलाशने की कोशिश करते हैं। स्त्री–दृष्टिकोण से निःसंदेह यह कहानी का एक नये युग में संक्रमण था। केट चॉपिन के प्रमुख कहानी संग्रह हैं–'बेयू फोक' और 'ए नाईट इन अकाडी'।

फ्रैंक नॉरिस और जैक लण्डन उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशक के अन्य महत्वपूर्ण कहानीकार हैं। ये दोनों ही प्रकृतवाद के पुरोधा थे। इन दोनो ने अपनी कहानियों में अमेरिकी 'स्वप्न' की असफलताओं को संबोधित किया। दोनो ने अमेरिकी बुर्जुआ समाज मे पनपने वाली धनलोलुपता का चित्रण किया और धन की संस्कृति के शिकार लोगों के भौतिक यथार्थ और मानसिक दिवालियेपन के विश्वसनीय चित्र खींचे। नॉरिस की प्रमुख कहानियाँ–'द जॉग्लियेर ऑव टाइलेबॉयस', 'ए डील इन व्हीट', 'जूडीज सर्विस ऑव गोल्ड प्लेट' आदि। जैक लण्डन की प्रमुख कहानियाँ–'द एपोस्टेट', 'द व्हाईट साईलेंस', 'द कंपलीट शॉर्ट स्टोरीज ऑव जैक लण्डन'।

10.4 बीसवीं शताब्दी

बीसवीं शताब्दी का आरंभ होते होते अमेरिका में कहानी एक महत्वपूर्ण, जीवंत और लोकप्रिय विधा के रूप में स्थापित हो चुकी थी जिसके पाठकों की संख्या मे भारी वृद्धि हो रही थी। साहित्यिक पत्रों और किताबों के बाजार ने कहानी लेखक को आलोचनात्मक अनुशंसा के साथ साथ जीविकोपार्जन की सुरक्षा भी प्रदान कर दी थी। अतः बीसवीं सदी के शुरूआती दशकों में कहानी , कविता और उपन्यास की तरह, ऐसी सक्षम विधा के रूप में उभरी जिसने आधुनिकतावादी प्रयोगवाद की असीम संभावनाओं के द्वार खोल दिये। इस तरह अपने आविर्भाव के सौ बरस के भीतर ही अमेरिका में कहानी अत्यधिक विविधतापूर्ण, लचीली और टिकाऊ विधा के रूप में अपना लोहा मनवा चुकी थी।

अमेरिकी कहानी के इतिहास की दृष्टि से देखें तो बीसवीं शताब्दी में उसका विकास व्यापक पैमाने पर सामाजिक परिवर्तन और अंतर्राष्ट्रीय संघर्षों के बीच हुआ। यह सदी जब शुरू हुई तो घोड़ागाड़ी का युग था, मगर जब वह खत्म हुई तो मानवजाति तकनीकी के अत्यधिक विकास पर आधारित कंप्यूटर युग मे प्रवेश कर चुकी थी। यानी बीसवीं सदी में विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर आधारित भौतिक विकास अभूतपूर्व, आश्चर्यजनक और निर्बाध गति से हुआ। ऐसी भौतिक सुख–समृद्धि महज एक शताब्दी पहले अकल्पनीय

थी। अमेरिकी साहित्य और संवेदना पर इस भौतिक समृद्वि का अतुलनीय प्रभाव पड़ा तथा अमेरिकी मानस अब वह नहीं रहा जो पहले था। अमेरिकी मानस में आए इस निर्णायक प्रभाव को कहानी ने बड़ी शिद्दत से दर्ज किया और कहानी भी अब वैसी नहीं रही जैसी पहले थी।

सदी की शुरूआत में कहानी उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशक में प्रचलित प्रणालियों को ही अपनाती रही। इसका सबसे सशक्त उदाहरण ओ हेनरी की 'द गिट ऑव मैगी' और 'द रैंसम ऑव रेड चीफ' जैसी कहानियाँ हैं मगर जल्द ही इस तरह की मनोरंजन प्रधान कहानियों का स्थान मानव यथार्थ के अंधेरे पक्षों का बयान करने वाली कहानियों ने ले लिया। परिस्थितियों के शिकार निम्नवर्गीय चरित्र को रचतीं प्रकृतवादी अभिव्यक्तियां सदी के पूर्वार्द्ध में जारी रहीं मगर धीरे धीरे इनका प्रभाव कम होता गया। इससे इंकार नहीं किया जा सकता कि इस सदी के पूर्वार्द्ध की सर्वश्रेष्ठ रचनाएं प्रकृतवादी हैं। जॉन स्टाईनबैक की 'द क्राईसैंथेमम्स', 'द हार्नेस', 'पास्चेर्स इन हैवेन', 'द रेड पोनी' आदि, थिओडोर ड्रेसिएर की 'द लास्ट फीबे', 'क्यूरियस शिट्स ऑव द पुअर' और 'द सेकंड च्वायस' तथा रिचर्ड राईट की प्रकृतवादी कहानियाँ इसका उदाहरण हैं।

1940 के बाद कहानी में प्रकृतवाद का पतन हो गया, मगर यथार्थवाद का वर्चस्व पूरी सदी के दौरान अभिव्यक्ति की एक प्रभावी प्रणाली के रूप में बना रहा।

प्रथम विश्व युद्ध के बाद आधुनिकतावाद ने अमेरिकी कहानी में महत्वपूर्ण बदलाव उत्पन्न किया। आधुनिकतावादी प्रभाव जैसे जैसे यूरोप में गहराता गया, अमेरिकी कहानीकार भी उससे प्रभावित हुए बगैर न रह सके। इस दौर के कहानीकारों में आधुनिकतावाद का सबसे ज्यादा प्रभाव अर्नेस्ट हेमिंग्वे पर पड़ा। हेमिंग्वे ने कहानी लेखन की आधुनिकतावादी पद्धति में अपने दौर के युद्ध की विभीषिकायें, मूल्यों का संरक्षण करने वाली पारंपरिक संस्थाओं का पतन और धर्म का पराभव जैसी सामाजिक और बौद्धिक चिंताओं का समावेश कर उसे व्यापक और विस्तृत स्वरूप प्रदान किया। हेमिंग्वे की कहानी के अधिकतर नायक अपने समय के घावों के शिकार हैं और उनमें से ज्यादातर पारंपरिक मूल्यों में विश्वास खो चुकने के बाद जीने के नये तरीकों और व्यवहार की नयी पद्धति की तलाश करते हैं। हेमिंग्वे ने इन नये विचारों को बड़ी परिपक्वता से अपनी कहानियों में व्यक्त किया–जैसे स्पष्ट, किंतु क्रूर यौनिकता को 'अप इन मिशिगन' में, आत्महत्या को 'इंडियन कैंप' में, बेमेल विवाह को 'द डॉक्टर एण्ड द डॉक्टर्स वाईफ' में, किशोरों में यौनिकता के प्रति आकर्षण को 'टेन इन्डियन्स' में और गर्भपात को 'हिल्स लाईक व्हाईट एलीफैंट्स' में। इन कठोर घरेलू मुद्दों के अलावा हेमिंग्वे ने हिंसा की मनोवैज्ञानिक परिणति को 'अ वे यू विल नेवेर बी' में, घायल होने के बाद की पीड़ा को 'इन एनअदर कंट्री' में, युद्ध समाप्ति के बाद भी युद्ध की पीड़ा के देर तक बने रहने वाले प्रभाव को 'सोल्जर्स होम' में, मृत्यु को अपनी अफ्रीकी कहानियों जैसे 'द शॉर्ट, हैप्पी लाईफ ऑव फ्रांसिस मैकोंबर', 'द स्नोज ऑव किलिमंजारो' में और जीवन के खालीपन को 'अ क्लीन, वेल लाईटेड प्लेस' में अभिव्यक्त किया।

विलियम फॉकनर, जिनकी प्रसिद्धि एक उपन्यासकार के रूप में अधिक है, ने बहुत उत्कृष्ट कहानियाँ भी लिखीं। फॉकनर ने अपनी कहानियों का निर्माण करने में एकरेखीय कथानक का विकास करने के बजाए, घटनाओं का क्रमवार अंकन करने की कला में महत्वपूर्ण विचलन उत्पन्न किया और कथावाचन के लहजे मे महत्वपूर्ण बदलाव किये। प्रमुख कहानियाँ–'ए रोज फॉर फैमिली', 'बार्न बर्निंग', 'दैट ईवनिंग सन', 'माऊंटेन विक्ट्री', 'रेड लीव्ज', 'पैंटालून इन ब्लैक' आदि।

एफ. स्कॉट फिट्स्जेराल्ड की कहानियों का शिल्प आधुनिकतावादी न होकर पारंपरिक है। इसके बावजूद फिट्स्जेराल्ड ने उन्हीं मुद्दों को अनूठे ढंग से संबोधित किया जिन्हें आधुनिकतावादियों ने नये शिल्प में अभिव्यक्त किया। चाहे अपनी जड़ों से उखड़े लोगों का मनोवैज्ञानिक विस्थापन हो, स्वप्न और यथार्थ का अंतर्संबंध हो या फिर युद्ध से उपजी विभीषिकाओं का संत्रास हो, ये सारी आधुनिकतावादी चिंतायें फिट्स्जेराल्ड की कहानियों में मौजूद हैं। महत्वपूर्ण कहानियाँ–'बेबीलोन रिविजिटेड', 'द पॉपुलर गर्ल', 'आई गॉट शूज', 'द कैमेल्स बैक', 'द फोर फिस्ट्स' आदि।

अमेरिकी–यहूदी कहानी लेखकों में सॉल बेलो का नाम उल्लेखनीय है। बेलो ने हताशा को झेलते बौद्धिक मनुष्य की जिजीविषा को, उसके संघर्षों को, उसके भीतर हिलोरें मारती मानवीय भावनाओं के महत्व को बखूबी दर्शाया। बेलो की कहानियों में अस्तित्ववादी रोष के बजाए श्रद्धा, आशा, यिद्दिश विनोदप्रियता, यहूदी धर्म में निहित पीड़ा का बोध, विरक्ति से स्वीकृति की ओर नायकों के प्रयाण के साथ साथ तत्कालीन जीवन की असंगतियों और मूल्यों में आए पतन का चित्रण हुआ है। बेलो की कहानियों की सबसे बड़ी खासियत यह है कि वह आधुनिकतावादियों की समकालीन सभ्यता को बंजरभूमि मानने की दृष्टि को स्वीकार करने से इंकार करती हैं। प्रमुख कहानियाँ–'टू मॉर्निंग मोनोलॉग्स', 'द मैक्सिकन जेनरल', 'मि. काट्ज, मि. कोहन एण्ड कॉस्मोलॉजी', 'डोरा', 'सेरेमन बाई डा. पेप', 'द ट्रिप टु गैलेना', 'लुकिंग फॉर मि. ग्रीन', 'बाई द रॉक वाल', 'द गॉजागा मैनुस्क्रिप्ट्स', 'लीविंग द येलो हाऊस' आदि।

जॉन अपडाईक बीसवीं शताब्दी के एक अन्य महत्वपूर्ण अमेरिकी कहानीकार हैं। अपडाईक की कहानियाँ अपनी प्रभावी गद्य शैली और यथार्थवाद के प्रति कटिबद्धता के लिये जानी जाती हैं। साथ में वे अपने पाठकों के बीच लोकप्रिय इसलिये भी हैं क्योंकि उनमें बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशकों का विस्तृत और व्यवस्थित सामाजिक इतिहास मिलता है। समय के अवमूल्यन के विरूद्ध उस संघर्ष को उन्होंने अपनी कहानियों का विषय बनाया जो लैंगिक और आध्यात्मिक उत्कण्ठाओं के जरिये अपने को प्रकाशित करता है, मगर जिसकी सर्वाधिक सफल अभिव्यक्ति कला और स्मृति में होती है। अगर बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में यौनिक स्वतंत्रता के वृहत्तर संदर्भ में अमेरिकी मध्य वर्ग की घरेलू जिंदगी को देखना हो, बिगड़ते वैवाहिक संबंधों को देखना हो, उत्तरोत्तर बढ़ती हुई आध्यात्मिक अनिश्चितता को देखना हो, या फिर सत्ता के विरूद्ध बढ़ते सामाजिक असंतोष को देखना हो तो हमें अपडाईक की कहानियाँ पढ़नी होंगी। प्रमुख कहानियाँ– 'स्टिल–लाईफ', 'द सेम डोर', 'ओलिंगर स्टोरीज', 'पीजन फेदर्स', 'द म्यूजिक स्कूल', 'द बुल्गेरिअन पोएटेस', 'बेच एंटर्स हेवेन', 'म्यूजियम्स एण्ड वीमेन', 'टू फार टु गो', 'प्रॉबलेम्स', 'बेच इज बैक', 'ट्रस्ट मी', 'द आटरर्लाईफ एण्ड अदर स्टोरीज', 'बेच एट बेः अ क़्वासी नॉवेल', 'लिक्स ऑव लव', 'द अर्ली स्टोरीजः1953–1975' आदि।

रेमण्ड कार्वर ने अमेरिकी कहानी को नया आयाम दिया। कार्वर की कहानियाँ अपने शिल्प की साधारणता और सहजता के लिये जानी जाती हैं। उनके नायक श्रमिक वर्ग से आते हैं। इसके बावजूद इनकी जो समस्यायें कहानियों में अभिव्यक्त होती हैं, वह केवल श्रमिक वर्ग तक ही सीमित नहीं हैं। कार्वर ने तलाक, बेवफाई, आध्यात्मिक परायापन, शराबखोरी, दिवालियापन, अपनी जमीन से उखड़ने का दर्द और अस्तित्वमूलक भयानकताओं को अपनी कहानियों में दर्ज किया। कार्वर के प्रमुख कहानी संग्रह हैं–'पुट योरसेल्फ इन माई शूज', 'विल यू प्लीज बी क्वाईट, प्लीज?', 'यूरियस सीजंस एण्ड अदर स्टोरीज', 'व्हाट वी टॉक अबाउट व्हेन वी टॉक अबाउट लव', 'कैथेड्रल', 'एलीफैंट एण्ड अदर स्टोरीज', 'व्हेयर आई एम कालिंग फ्रॉम', 'शॉर्ट कटः सेलेक्टेड स्टोरीज' आदि।

अमेरिकी कहानी के शिल्प में अनूठे प्रयोग करने के लिये शेरवुड एण्डरसन को हमेशा याद किया जाएगा। उन्होंने कथानक के उथलेपन और उसकी याँत्रिकता का तिरस्कार कर कहानी की संरचना को पूर्णरूपेण बदल डाला। एण्डरसन ने बोलचाल की अमेरिकी भाषा से मिलती–जुलती कहानी की भाषा का प्रयोग बिना किसी लागलपेट के किया। उन्होंने कहानी में नये विषयों को प्रतिष्ठित करने का खतरा उठाया। एण्डरसन उन पहले लेखकों में से थे जिन्होंने कला में वास्तविक दुनिया को खारिज करने की प्रवृत्ति में अंतर्निहित नाटकीयता को उजागर किया, और कहानी विधा को वह निर्णायक आवेग दिया जिसके चलते जीवन के छोटे छोटे टुकड़ों मे निहित संजीदा तत्व उसके मुख्य घटक बने। उन्होंने समाज में अजीबोगरीब समझे जाने वाले लोगों जैसे विक्षिप्त और झक्की व्यक्तियों के पक्ष को कहानी में जगह दी और चरित्रों के यौन व्यवहारों को तरजीह दी। उनकी महत्वपूर्ण कहानी है–'विनेसबर्ग, ओहियो'।

10.5 मुक्ति का स्वप्न

बीसवी सदी में हर अमेरिकी साहित्य–रूप की तरह कहानी ने भी हाशिये पर पड़े दमित समुदायों के मुक्ति–संघर्ष को स्वर दिया। कहानी ने अश्वेतों, स्त्रियों और यहूदियों के संघर्षों को अभिव्यक्ति दी और उनकी मुक्ति के स्वप्न को संजोया।

10.5.1 अफ्रीकी–अमेरिकी कहानी

अफ्रीकी–अमेरिकी कहानी की सबसे सशक्त अभिव्यक्ति का आरंभ होता है चार्ल्स डब्ल्यू. चेस्नट की कहानियों में। चेस्नट ने अश्वेत अमरीकियों की आवाज को एक 'नयी' आवाज के रूप में प्रतिष्ठित किया। आगे चलकर जॉन पेंडलेटन केनेडी , थॉमस नेलसन पेज, जोएल चाण्डलर हैरिस, ज्याँ तूमर, लैंग्स्टन ह्यूज और थॉमस डिक्सन जैसे कहानीकारों ने इस परंपरा को आगे बढ़ाया। लेकिन बीसवीं सदी में रिचर्ड राईट के आगमन के बाद इस परंपरा में आमूलचूल बदलाव आया। राईट ने अश्वेतों के क्षोभ और रोष को नया आयाम दिया। राईट की कहानियों मे अश्वेतों की नयी संवेदना प्रस्फुटित होती है। यह संवेदना एक क्रांतिकारी विद्रोही की संवेदना है। इन कहानियों का नायक वह अश्वेत है जो अपनी अवस्था के प्रति पूरी तरह चेतस् है और वह जानता है समाज मे उसकी दमित स्थिति के लिये वह स्वयं जिम्मेदार नहीं है, बल्कि वे लोग जिम्मेदार हैं जो सत्ता के शीर्ष पर हैं। राईट के अश्वेत पात्र इन रसूखदार लोगों से भीषण नफरत करते हैं और उनके विरूद्ध हिंसा से परहेज नहीं करते। अपनी कहानियों मे रिचर्ड राईट ने अश्वेतों की इस हिंसा तथा नफरत को कलात्मक और सौंदर्यशास्त्रीय मूल्य में रूपांतरित किया। प्रमुख कहानियाँ–'ब्राईट एण्ड मॉर्निंग स्टार', 'द मैन हू वाज आलमोस्ट अ मैन', 'द मैन हू लिव्ड अंडरग्राऊंड', 'द मैन हू वेंट टु शिकागो', 'द मैन हू किल्ड अ शैडो', 'मैन, गॉड एन्ट लाईक दैट' आदि। रिचर्ड राईट के बाद के अश्वेत लेखकों में जेम्स बाल्डविन, अर्नेस्ट गेन्स, अमीरी बकारा, राल्फ एलिसन, ग्लोरिआ नेलर, जमैका किंशियाड, टोनी मॉरिसन, एलिस वाकर, जम्स एलन मैक्फर्सन, टोनी केड बारबरा आदि का नाम उल्लेखनीय है।

10.5.2 स्त्री–लेखन और कहानी

अमेरिका में कहानी लेखन की यथार्थवादी परंपरा स्त्री–कहानीकारों सदैव ऋणी रहेंगी। अमेरिका में उनीसवीं सदी की लेखिकाओं ने कहानी में आँचलिकता को प्रतिष्ठित किया। इनमें हैरियट बीचर स्टो, सेलिआ थैक्सटर, साराह ओर्न ज्यूवेट, मेरी ई. विलकिन्स फ्रीमैन अदि का नाम उल्लेखनीय है। केट चॉपिन की कहानियों में उन्नीसवीं सदी की स्त्री का

विद्रोही स्वर बिना किसी लागलपेट के अभिव्यक्त होता है। बीसवीं शताब्दी में स्त्री–कहानीकारों ने कलात्मक पद्धति के रूप में यथार्थवाद को नयी तरह से माँजा और उसका परिष्कार किया। इस दृष्टि से विला कैथर, के बोयल, शिर्ले जैकसन, कार्सन मैक्कुलर्स, लेनेरी ओ'कॉनर, डोरोथी पार्कर, कैथरीन एन पोर्टर और एडिथ व्हार्टन का नाम उल्लेखनीय है। विला कैथर की महत्वपूर्ण कहानियाँ हैं–'पॉल्स केस', 'ए वैगनर मैटिनी', 'द स्कल्पटर्स यूनरेल'। ये कहानियाँ अमेरिकी समाज में व्याप्त कलाविरोधी व्यावसायिकता के बीच कला के मानवीय महत्व को प्रतिष्ठित करती है। के बोयल की कहानियाँ अपने युग की प्रभावी कलात्मक शैलियों में रची गयी हैं। ये कहानियाँ कथन की संक्षिप्तता, सावधानीपूर्वक रचे गये शिल्प, चेतना प्रवाह और आंतरिक एकालापों द्वारा चरित्रों की मनोवैज्ञानिक गहराई के प्रदर्शन के लिये जानी जाती हैं। प्रमुख कहानियाँ–'वेडिंग डे एण्ड अदर स्टोरीज', 'द फर्स्ट लवर एण्ड अदर स्टोरीज', 'द हॉर्स ऑव वियेना एण्ड अदर स्टोरीज', 'द क्रेजी हंटर एण्ड अदर स्टोरीज', 'थर्टी स्टोरीज', 'द स्मोकिंग माऊंटेनः स्टोरीज ऑव पोस्ट वार जर्मनी', 'नथिंग एवेर ब्रेक्स एक्सेप्ट द हार्ट', 'फिटी स्टोरीज', 'लाईफ बीइंग द बेस्ट एण्ड अदर स्टोरीज' आदि। शिर्ले जैकसन की कहानियाँ मानव चेतना के अंधेरे पक्षों की इस तरह छानबीन करती हैं कि वह कई बार पाठकों को विचलित कर देता है। इन कहानियों में आसाधारण घटनायें निहायत ही साधारण दिखने वाले परिदृश्य में घटित होती हैं। प्रमख कहानियाँ–'द लॉटरी एण्ड अदर स्टोरीज', 'जस्ट एन ऑर्डिनरी डे' आदि। कार्सन मैक्कुलर्स की कहानियाँ विवरण की वस्तुनिष्ठता, अकेलेपन के प्रसंगों और अभिव्यक्ति की सांगीतिक सघनता के लिये जानी जाती हैं। असामान्यता और विलक्षणता के कुशल इस्तेमाल और मानवीय अकेलेपन के सिद्धहस्त चित्रण द्वारा मैक्कुलर्स ने ट्रूमैन कपोटे, लेनेरी ओ'कॉनर और एन टाईलर जैसे महत्वपूर्ण रचनाकारों को गहराई से प्रभावित किया। 'द बैलेड ऑव सैड कैफे एण्ड कलेक्टेड शॉर्ट स्टोरीज' उनका प्रमुख कहानी–संग्रह है। लेनरी ओ'कॉनर की कहानियाँ पाठकों पर विलक्षण प्रभाव उत्पन्न करती हैं। इन कहानियों में पारंपरिक विनोदप्रियता, धर्म, दर्शन, अनीश्वरवाद और ईसाई अस्तित्ववाद, यथार्थवाद और रूमानियत का अद्‌भुत सम्मिश्रण मिलता है। जिन आलोचकों ने धार्मिक दृष्टिकोण से उनकी कहानियों की व्याख्या करने की कोशिश की है, वे भी इस पर अचरज व्यक्त करते है कि कितनी कुशलता से ओ'कॉनर अतिसामान्य, मूर्खतापूर्ण और क्षुद्र तत्वों को ईसाई परंपरा की गौरवशाली गाथाओं से जोड़ती हैं। व्यंग्य और विसंगति की मारक उपस्थिति ओ'कॉनर की कहानियों को लोकप्रिय बनाती हैं। प्रमुख कहानियाँ–'ए गुड मैन इज हार्ड तो फाईण्ड', 'गुड कंट्री पीपुल', 'रेवेलेशन', 'एवेरीथिंग दैट राईज़ेज़ मस्ट कॉन्वर्ज' आदि। कैथरीन एन पोर्टर की कहानियाँ प्रतीकों के बारीक प्रयोग, मानवीय दृष्टिकोणों को जटिलता में परखने, संदिग्ध विडंबनाओं की चुनौतीपूर्ण विविधता और सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक विषयवस्तुओं की गहन छानबीन के लिये जानी जाती हैं। प्रमुख कहानियाँ– 'लॉवरिंग जूडास एण्ड अदर स्टोरीज', 'हैसिएन्डा', 'नून वाईन', 'द लीनिंग टॉवर एण्ड अदर स्टोरीज', 'द ओल्ड ऑर्डर' आदि। एडिथ व्हार्टन की कहानियाँ विवाह और घरेलू मुद्दों तथा तलाक और पुनर्विवाह जैसी प्रवृत्तियों को संबोधित करती हैं। साथ ही वह विमानवीकृत होते समाज में कलाकार की कुण्ठाओं को भी चित्रित करती हैं। व्हार्टन ने भूतों वाली डरावनी कहानियाँ भी लिखकर अपनी कहानियों में नया आयाम जोड़ा। प्रमुख कहानियाँ–'मिसेज मैंस्टीसेज़ व्यू', 'द अदर टू', 'रोमन फीवर', 'झिंगू', 'द लेडीज़ मेड्स बेल', 'आफटरवर्ड' आदि। यहूदी लेखिका अंजिआ येज़ीर्सका ने उन प्रवासी यहूदियों खासकर शहरी यहूदी महिलाओं के भय और पीड़ा को शिद्दत से अभिव्यक्त किया जो अमेरिका की 'नयी दुनिया' में अपनी आँखों में कई सपने संजो कर आये थे मगर वहाँ आकर उन्हे कई तरह की भयानकताओं का सामना करना पड़ा। प्रमुख कहानियाँ–'द फैट ऑव द लैंड', 'वाईल्ड विंटर लव', 'ए चेयर इन हैवेन' आदि। सिंथिआ ओज़िक भी

एक महत्वपूर्ण यहूदी कहानी लेखिका हैं। ग्लोरिया नेलर, जमैका किन्सैड, टोनी मॉरिसन, एलिस वाकर, टोनी केड बैम्बारा, जोरा नीएल हर्स्टन आदि अश्वेत लेखिकाओं ने अफ्रीकी–अमेरिकी कहानी की कथा साहित्य के क्षेत्र में जीवंत और उत्साहपूर्ण ताकत को बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। वर्तमान में अन्य महत्वपूर्ण अमेरिकी लेखिकायें हैं–लुइसे एर्ड्रिच, लेस्ली मारमोन सिल्को, सुजैन पॉवर, एमी टैन, गिश जेन, एलिस एडम्स, माया एंजेलोऊ, ऐन बीटि, सांद्रा सिस्नेरॉस, एमी हेम्पेल, बारबरा किंग्सॉल्वर, बॉबी एन. मेसन, एलिस मुनरो, ज्वाएस कैरोल ओट्स, टिली ऑलसन, ग्रेस पैली, एन पेट्री, ई. एनी प्रूल्क्स, एन टाईलर, हेलेना मारिया विरामॉन्टेस, यूडोरा वेल्टी, ज्वाय विलियम्स आदि।

10.5.3 अमेरिकी–यहूदी लेखन और कहानी

अमेरिकी–यहूदी कहानीकारों ने अपने अनुभवों को प्रामाणिक ढंग से अपने लेखन में अभिव्यक्त किया। 1880 से 1920 के बीच पूर्वी यूरोप से करीब दो करोड़ यहूदियों का प्रवासन अमेरिका में हुआ। हालाँकि अमेरिका में यहूदी लेखन इससे पुराना है, मगर पहले महत्वपूर्ण अमेरिकी–यहूदी लेखक प्रवासन की इसी बड़ी लहर से उत्पन्न हुए। इनमें अब्राहम काहन और अंज़िया येजीर्स्का का नाम उल्लेखनीय है। अमेरिका में यहूदी लेखन को ऊँचाइयों पर ले जाने का श्रेय मिलेगा द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद के यहूदी लेखकों सॉल बेलो, बर्नार्ड मलामूड, फिलिप रॉथ और ग्रेस पैली को जिन्होंने अमेरिकी यहूदी लेखन को अमेरिकी साहित्यिक परिदृश्य के हाशिये से उठाकर केंद्र में स्थापित किया। इन कहानीकारों ने नाज़ी अत्याचार और हॉलोकौस्ट की पीड़ाओं का त्रासद वर्णन किया। सॉल बेलो ने यहूदी अनुभव को व्यक्त करने के लिये यथार्थवादी शैली में नवीन प्रयोग किये और अमेरिकी–यहूदी कहानी के शिल्प को नये तेवर से नवाज़ा। बेलो ने आधुनिक समय के प्रवाह को अच्छी तरह समझते हुए उसके विकारों को, उसकी भयावहताओं को, उसकी विद्रूपताओं और उसके अंधेरे पक्षों को तो व्यक्त किया ही, साथ में उसकी आशाओं एवं उसके उत्साह को भी व्यक्त किया। उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं–'मोब्सीज मेमॉयर्स एण्ड अदर स्टोरीज', 'हिम विद हिज फुट इन हिज माऊथ', 'समथिंग टु रिमेंबर मी बाईः थ्री टेल्स', 'कलेक्टेड स्टोरीज' आदि। बर्नार्ड मलामूड ऐसे अनूठे लेखक हैं जिनकी ख्याति परंपरावादी और आधुनिकतावादी (प्रयोगवादी) दोनो ही रूपों में है। मलामूड की कहानियाँ यहूदी जीवन को साधारण मानवीय अनुभव के बिम्ब के तौर पर प्रस्तुत करती हैं। इस तरह वे यहूदी अनुभव में निहित वैयिक्तिकता का अतिक्रमण कर उसे सार्वत्रिक स्तर पर स्थापित करने में सफल होती हैं। मलामूड की कहानियाँ इस बात की तस्दीक़ करती हैं कि तमाम शोषण, दमन, भयानकताओं, पीड़ाओं, दुखों और हताशाओं के बावजूद जीवन सच में जीने योग्य है। इस तरह मलामूड की कहानियों ने उस दौर में व्याप्त नकारात्मकता और नाशवाद का मुखर होकर विरोध किया। संकट के दौर में जब हर तरफ निराशा और हताश का बोलबाला हो तब जीवन के पक्ष में आवाज बुलंद करने वाले मलामूड जैसे लेखक विरल हैं। प्रमुख कहानियाँ–'द मैजिक बैरेल', 'ईडियट्स फर्स्ट', 'पिक्चर्स ऑव फील्डमैनः एन एक्ज़िबिशन', 'रेमब्रैंड्स हैट', 'द पीपुल एण्ड अनकलेक्टेड स्टोरीज' आदि। फिलिप रॉथ ने यहूदी धर्मगुरुओं के पाखंड को और धन की संस्कृति द्वारा यहूदी समुदाय मे लाये गये भ्रष्टाचार के प्रामाणिक चित्र खींचे। उनका प्रमुख कहानी संग्रह हैं–'गुडबॉय, कोलम्बस'। ग्रेस पैली एक महत्वपूर्ण यहूदी– अमेरिकी लेखिका हैं। उनकी कहानियों की विषयवस्तु तो पारंपरिक है, जैसे स्त्रियों का जीवन, प्रेम के अनुभव,

मातृत्व और मित्रता का वह रिश्ता जो सबको बाँधकर रखता है मगर इन पारंपरिक विषयवस्तुओं का रेखांकन उनकी कहानियों में निहायत गैरपरंपरागत और नये अंदाज मे हुआ है। इन कहानियों की राजनीतिक और सामाजिक चिंताओं ने ग्रेस पैली को एक पक्षधर लेखिका के रूप में स्थापित किया है। प्रमुख कहानियाँ–'द लिटिल डिस्टर्बेन्सेज़ ऑव मैनः द स्टोरीज ऑव मैन एण्ड वुमैन इन लव', 'एनॉर्मस चेंजेज़ ऐट द लास्ट मिनट', 'लेटर द सेम डे', 'हीयर एण्ड एल्सव्हेयर' आदि। बाद के यहूदी कहानीकारों में सिंथिया ओझिक, मेल्विन बुकिएत, एहुद हेवाजेलेत, जोन लीगांत का नाम उल्लेखनीय है। नयी पीढ़ी के अमेरिकी–यहूदी लेखक हैं– रेबेका गोल्डस्टीन, देन रोसेनबॉम, लेव रफाएल, जूडिथ कालमैन, आर्येह लेव स्तॉलमैन, बारबरा क्लीन मॉस, नेथन इंग्लैंडर, जान पेपरनिक, स्टीव स्टर्न, गेराल्ड शैपीरो आदि।

10.6 विस्तार पाती संभावनाएं

वर्तमान दौर में अमेरिका में विभिन्न देशों से आये प्रवासियों नें वहाँ के साहित्य में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। इन प्रवासियों ने अमेरिकी साहित्य को नया विस्तार दिया है, उसके स्वरूप में बहुसाँस्कृतिक और बहुलतावादी आयाम को जोड़ा है। अमेरिकी कहानी इसका अपवाद नहीं है। वर्तमान में अमेरिकी कहानी में मौजूद प्रवासी समूहों में अफ्रीकी समूह के साथ–साथ एशियाई समूह बहुत महत्वपूर्ण है। एशियाई–अमेरिकी कहानियाँ प्रवासी एशियाई समूहों के समृद्ध और संकटग्रस्त इतिहास के अनुभवों से अपना कच्चा माल प्राप्त करती हैं। ये कहानियाँ एशियाई समाज के प्रति सामाजिक–आर्थिक भेदभाव का और उन्हें हाशियों में कैद करके रखने, राजनीतिक तौर पर अलग–थलग रखने, सांस्कृतिक रूप से रूढ़िबद्ध करके रखने की प्रवृत्ति का पुरजोर विरोध करती हैं। अपने संघर्षपूर्ण और संकटग्रस्त इतिहास में रची–पगी एशियाई–अमेरिकी कहानी कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न उठाती है–अमरीकी होने के क्या मायने हैं?, अमरीकी बनने के लिये क्या कीमत चुकानी पड़ती है?, जातीय अल्पसंख्यकों की पहचान के आधार क्या हैं?, एशियाई–अमेरिकी होने का क्या अर्थ है? इन प्रश्नों के चलते एशियाई–अमेरिकी कहानी जातीयता और जातीयकरण, अमरीकीकरण, लैंगिक और वर्गीय शोषण, यौनिकता, पीढ़ियों का अंतर और एशियाई अमरीकियों को स्थायी रूप से अजनबी मानने के दृष्टिकोण को अपना विषय बनाती है। ईटन बहनों (एडिथ मौड ईटन और विन्नीफ्रेड ईटन) को एशियाई–अमेरिकी कहानी का जनक होने का श्रेय प्राप्त है। अन्य महत्वपूर्ण कहानीकार हैं–तोशिओ मोरी, हिसाये यामामोतो, राजा राव, खोसे गार्शिया विला, बियेन्वेनिदो सांतोस, कार्लोस बुलोसन आदि। समकालीन एशियाई–अमेरिकी कहानीकारों में चीनी, जापानी और फिलिप्पिनी प्रवासियों के साथ–साथ वियतनाम, ईरान, इंडोनेशिया, कोरिया, कंबोडिया, पाकिस्तान, भारत, लाओस, थाईलैंड, श्रीलंका आदि एशियाई देशों के प्रवासी कहानीकार सक्रिय हैं। इनमें मुख्य हैं– झुम्पा लाहिड़ी, भारती मुखर्जी, चित्रा दिवाकरुणी (भारत), नाहिद रचलीन (ईरानी), एंड्रू लाम (वियतनाम), सूजन नन्स, डेरेल एच. वायी. लुम (हवाई) आदि। नयी पीढ़ी के एशियाई–अमेरिकी कहानीकारों में वे लेखक आते हैं जो प्रवासी माता–पिता की संतानें हैं मगर जिनका जन्म अमेरिका में ही हुआ है। इनमें फ्रैंक चिन, डॉन ली और डेविड वांग लोई और गिश जेन का नाम उल्लेखनीय है।

10.7 सारांश

एम0ए0 हिन्दी के द्वितीय वर्ष के कहानी से संबंधित माड्यूल के पाठ्यक्रम 'कहानीः स्वरूप और विकास' से संबंधित तीसरे खण्ड की दसवीं इकाई का अध्ययन आपने किया है। यह अमेरिका में कहानी के विकास को दर्शाने वाली इकाई है।

इकाई–10 के इस पाठ में हमने अमेरिका में कहानी के विकास पर चर्चा की है। अमेरिकी लेखक वाशिंगटन इरविंग की कहानियों 'रिप वान विंकल' और 'द लीजेंड आव स्लीपी हॉलो' से आधुनिक अमेरिकी कहानी की शुरूआत मानी जाती है। यदि इरविंग को अमेरिकी कहानी का जनक होने का श्रेय प्राप्त है तो नथैनियल हॉथार्न और एडगर एलन पो इस नये कलारूप के संस्थापक और प्रतिष्ठापक के तौर पर सम्मानित हैं। मेलविले ने कहानी में नये प्रयोग किये। मेलविले के बाद कहानी की रूमानी परंपरा महत्वपूर्ण लेखक हैं फिट्ज–जेम्स ओ'ब्रायन और हैरियट प्रेस्कॉट स्पॉफोर्ड। कहानी की इस रूमानी परंपरा के साथ–साथ आपने यथार्थवादी परंपरा का भी अध्ययन किया। आप जान चुके/चुकी हैं कि अमेरिका में कहानी में यथार्थवाद को प्रतिष्ठित करने में स्त्री–कहानीकारों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। अमेरिकी यथार्थवाद के महान लेखकों में विलियम डीन हॉवेल्स, हेनरी जेम्स और मार्क ट्वेन का नाम उल्लेखनीय है। उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में अमेरिकी कहानी में प्रकृतवाद की अभिव्यक्ति हुई। आपने जाना कि बीसवीं शताब्दी का आरंभ होते होते अमेरिका में कहानी एक महत्वपूर्ण, जीवंत और लोकप्रिय विधा के रूप में स्थापित हो चुकी थी जिसके पाठकों की संख्या मे भारी वृद्धि हो रही थी। बीसवीं सदी में विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर आधारित भौतिक विकास अभूतपूर्व, आश्चर्यजनक और निर्बाध गति से हुआ। ऐसी भौतिक सुख–समृद्धि महज एक शताब्दी पहले अकल्पनीय थी। अमेरिकी साहित्य और संवेदना पर इस भौतिक समृद्धि का अतुलनीय प्रभाव पड़ा तथा अमेरिकी मानस अब वह नहीं रहा जो पहले था। अमेरिकी मानस में आए इस निर्णायक प्रभाव को कहानी ने बड़ी शिद्दत से दर्ज़ किया। अब अमेरिकी कहानी भी वह नहीं रही जो पहले थी। प्रथम विश्व युद्ध के बाद आधुनिकतावाद ने अमेरिकी कहानी में महत्वपूर्ण बदलाव उत्पन्न किया। आधुनिकतावादी प्रभाव जैसे जैसे यूरोप में गहराता गया, अमेरिकी कहानीकार भी उससे प्रभावित हुए बगैर न रह सके। आप जान चुके/चुकी हैं कि बीसवीं सदी में कहानी ने किस तरह अश्वेतों, स्त्रियों और यहूदियों के संघर्षों को अभिव्यक्ति दी और उनकी मुक्ति के स्वप्न को संजोया। बीसवीं शताब्दी में स्त्री–कहानीकारों ने कलात्मक पद्धति के रूप में यथार्थवाद को नयी तरह से माँजा और उसका परिष्कार किया। आप यह भी जान चुके/चुकी हैं कि अमेरिकी–यहूदी कहानीकारों ने अपने अनुभवों को प्रामाणिक ढंग से अपने लेखन में अभिव्यक्त किया। अमेरिकी कहानी को प्रवासी लेखकों ने किस प्रकार समृद्ध बनाया, इसका परिचय भी आप प्राप्त कर चुके/चुकी हैं।

अभ्यास

1. अमेरिकी कहानी के जनक के रूप में वाशिंगटन इरविंग के योगदान पर प्रकाश डालिये।

2. अमेरिकी कहानी के प्रतिष्ठापक के रूप में एडगर एलन पो की विशेषताओं की चर्चा कीजिये।

3. अफ्रीकी–अमेरिकी कहानी के विकास पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिये।

4. प्रवासी समुदायों द्वारा अमेरिकी कहानी में लाये गये बदलाव पर दृष्टिपात कीजिये।

5. अमेरिकी कहानी के विकास में स्त्री–कहानीकारों के योगदान को रेखांकित कीजिये।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 11 एशिया में कहानी

इकाई की रूपरेखा

11.0 उद्देश्य

11.2 प्रस्तावना

11.3 पूर्वी एशिया में कहानी

11.4 मध्य एशिया, पाकिस्तान, बांग्लादेश और श्रीलंका में कहानी

11.5 पश्चिमी एशिया में कहानी

11.6 दक्षिण–पूर्वी एशिया में कहानी

11.7 सारांश

अभ्यास

11.0 उद्देश्य

यह एम.ए.(हिंदी) के द्वितीय वर्ष के कहानी से संबंधित मॉड्यूल के पाठ्यक्रम 'कहानीः स्वरूप और विकास' से संबद्ध तीसरे खण्ड की ग्यारहवीं इकाई है। इस इकाई में हम एशियाई देशों में कहानी विधा के विकास पर चर्चा करेंगें। विश्व स्तर पर कहानी के विकास में एशिया का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप एशियाई देशों में कहानी के विकास को समझ सकेंगे/सकेंगी।

11.2 प्रस्तावना

एशिया को प्राचीनतम सभ्यता, संस्कृति, और धर्मों की जननी कहा जाता है। सभ्यता के ऊषाकाल की भूमि के रूप में एशिया को विशेष सम्मान प्राप्त है। यह विडंबना ही है कि विश्व को महान साम्रज्यों से नवाजने वाली एशिया की भूमि आधुनिक काल में साम्राज्यवादी और औपनिवेशिक शोषण का शिकार हुई। सभ्यता के आरंभ से ही एशिया ने साहित्य और संस्कृति के विभिन्न प्रतिमान स्थापित किये और दुनिया भर के साहित्यकारों और संस्कृतिकर्मियों को प्रभावित किया। कहानी–विधा के आरंभिक आख्यानों के रूप में विख्यात जातक कथाएँ और पंचतंत्र एशिया की देन हैं।

11.3 पूर्वी एशिया में कहानी

चीन, जापान और कोरिया पूर्वी एशिया के प्रमुख देश हैं। चीन में आधुनिक कहानी की शुरुआत सही अर्थों में बीसवीं सदी में हुई। 1911 में चीन में लोकतंत्र की स्थापना के बाद कहानी के विकास ने गति पकड़ी। लू शुन इस दौर के महानतम कहानीकार थे। उनकी 'पागल की डायरी एवं अन्य कहानियाँ' चीन की देशज भाषाओं मे लिखी गयी पहली कहानियों में से एक है। लू शुन को आधुनिक चीनी साहित्य का जनक माना जाता है। उनके इस संग्रह में 26 कहानियाँ संकलित हैं जिनमें सबसे प्रसिद्ध कहानी है–'आह क्यू की सच्ची कहानी'। इस कहानी में उन्होंनें चीनी सत्ता के नकारात्मक चरित्र का यथार्थवादी चित्रण किया है। इस दौर के अन्य प्रमुख चीनी कहानीकार हैं लाओ शी। लाओ शी नें मानवीय सम्बंधों को केंद्र में रखकर मार्मिक कहानियाँ लिखीं। इसी दौरान

चीन की महिला कहानीकार दिंग लिंग की स्त्रीवादी नजरिये लिखी गयी कहानियाँ काफी चर्चित हुईं। उनकी सर्वाधिक चर्चित कहानी का नाम है–'मिस सोफिया की डायरी'। 1950–70 के बीच चीन में वामपंथी शासन की स्थापना के बाद कहानी लेखन में सामाजिक यथार्थवाद का बोलबाला रहा। कहानी को वर्गहीन समाज के निर्माण की राह में एक उपकरण के तौर पर देखा जाने लगा। यह सांस्कृतिक क्रांति का दौर था। साँस्कृतिक क्रांति के बाद की कहानियों में सामाजिक यथार्थवाद का बंधन ढीला हुआ। साँस्कृतिक क्रांति के बाद के प्रमुख कहानीकार हैं गाओ झिंगजियान, जो चीन के एकमात्र लेखक हैं जिन्हें नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। चीनी भाषा के समकालीन कहानीकारों में बाई हुआ, यू हुआ, हान शाओगोंग, लियू सोला, दाई सीजिये, सू तोंग, मो यान, लियू हेंग, होंग यिंग, जिया पिंगवा आदि उल्लेखनीय हैं।

जापान में बीसवीं सदी में आधुनिक कहानी लेखन की शुरूआत रयोनसुके अकूतागावा की कहानियों से होती है। उनकी कहानियाँ मनुष्य के अंतर्मन की गहराईयों को पूरी जटिलता में प्रतिबिंबित करती हैं। उनकी प्रसिद्ध कहानी है–'कुंज के भीतर'। कुनीकीदा दोप्पो, काफू नगाई, नाटसुमे सोसेकी आदि इस दौर के अन्य प्रमुख जपानी कहानीकार हैं। जापानी कहानीकारों ने मनुष्य के मानसिक अंतर्जगत् को कुशलतापूर्वक दर्शाने में अद्भुत सफलता प्राप्त की। जापान ने द्वितीय विश्वयुद्ध की विभीषिकाओं को पूरी उत्कटता में भोगा था। हिरोशिमा और नागासाकी पर हुए परमाणु हमले में लाखों निर्दोष जापानी नागरिक मारे गये। इन घटनाओं ने द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान और उसके बाद के कहानीकारों को गहराई से प्रभावित किया। इस समय के प्रमुख जापानी कहानीकार हैं– अतोदा तकाशी, क्वाबाता यसुनारी(पहले जापानी लेखक जिन्हें नोबल पुरस्कार मिला), मुराकामी हरूकी, शीगा नाओया, छियो उनो(जापान की महत्वपूर्ण महिला कहानीकारों में से एक), ओई केंजाबूरो(शांतिवादी कहानियों और उपन्यासों के लिये विख्यात नोबल पुरस्कार प्राप्त जापानी लेखक), मिशिमा यूकियो, एबे कोबो आदि। समकालीन जापानी कहानीकरों में सुषिमा यूको(महत्वपूर्ण महिला कहानीकार), शिमादा मसाहिको, रयू मुराकामी, साइची मारूया, किजाकी सातोको आदि का नाम उल्लेखनीय है।

कोरिया में भी आधुनिक कहानी की शुरुआत बीसवीं शताब्दी में हुई। यी क्वांग–सू की कहानियों से आधुनिक कोरियाई कहानी की शुरुआत मानी जा सकती है। वास्तव में कोरिया ऐसा देश है जहाँ कहा जा सकता है कि एशियाई देशों के सबसे महत्वपूर्ण कहानीकारों ने जन्म लिया। यी की योंग, किम तोंग–इन, यी ह्यो–सॉक, किम यू–जोंग, यी सैंग आदि आधुनिक लेखक कोरियाई कहानी को नयी दिशा देने वाले कहानीकार हैं। बीसवीं शताब्दी के मध्य में कोरियाई युद्ध के दौरान यहाँ के कहानीकारों ने विश्वप्रसिद्ध कहानियाँ लिखीं। इन कहानियों ने कोरिया की जनता के दुख दर्द और युद्ध की तबाही से उपजी कठिन स्थितियों के बीच आम लोगों के जीवन संघर्षों का विश्वसनीय चित्रण किया। बाद के दौर के प्रमुख कोरियाई कहानीकार हैं–सो योंग–एन, ओह जुंग–ही, सुंग–ओक किम, यी चोंग–जुन, चोयी इन–योह, यी मुन्योल, पाक वान–सुह आदि।

11.4 मध्य एशिया, पाकिस्तान, बांग्लादेश और श्रीलंका में कहानी

बीसवीं शताब्दी में मध्य एशिया में कहानी के विकास को कई कारकों नें प्रभावित किया। शास्त्रीय और आधुनिक ईरानी साहित्य, मध्य एशियाई लोक कलाओं के साथ साथ 1917

के बाद रूस के क्रांतिकारी लेखकों ने भी मध्य एशिया के कहानीकारों को गहराई से प्रभावित किया। मध्य एशिया में कहानी ने अपना आधुनिक स्वरूप तब प्राप्त किया जब 1920 से 1950 के बीच लेखकों ने कहानी कहने की शास्त्रीय शैलियों से आगे बढ़कर स्पष्ट, कठोर, यथार्थवादी एवं चरित्र और कथानक पर आधारित शिल्प को अपनाया। सोवियत रूस के लेखकों के प्रभाव में आकर मध्य एशियाई लेखकों ने कहानी में सामाजिक और आर्थिक अंर्तदृष्टियों को प्रतिष्ठित किया और कहानी की भाषा को दुरूह अलंकरण से निरावृत करके आम जनता के लिये बोधगम्य बनाया। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान परंपरागत 'किस्सा' और 'हकाया' जैसे पारंपरिक रूपों के अलावा आधुनिक शिल्प भी कहानियों के लेखकों और पाठकों के लिये चिरपरिचित हो चुका था। युद्ध ने कहानीकारों को अपनी जनता के इतिहास को सकारात्मक रोशनी में परखने की प्रेरणा दी जिससे कि राष्ट्रीय भावना का प्रचार प्रसार हो सके। इस तरह इतिहास के वास्तविक नायकों और दंतकथाओं के साहसी योद्धाओं पर आधारित कहानियाँ द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान रची गयीं। मध्य एशिया के कहानीकारों में उजबेग लेखक अब्दुल्ला कादिरी का नाम उल्लेखनीय है। कादिरी ने शास्त्रीय अरबी, फारसी और चगताई तत्वों को जदीदों की प्रबुद्ध शिक्षा के साथ जोड़कर कहानी की नयी शैली का विकास किया। कादिरी के साथ साथ उजबेग कहानीकार ऐबक और कज्जाक कहानीकार मुख्तार औएजोव का नाम उल्लेखनीय है। सद्रिद्दीन ऐनी को सोवियत ताजिक यथार्थवादी कहानी का जनक माना जाता है। ऐनी की कहानियों में तजाकिस्तान के पहाड़ी किसानों के जीवन में आ रहे बदलावों का विश्वसनीय चित्रण मिलता है। मध्य एशिया के अन्य कहानीकार हैं साबित मुकानोव(कज्जाक), तुगेलबाय सायदायकबेकोव(किरगीज), सोतिम उलूगजोदा(ताजिक), जलाल इकरामी(ताजिक) आदि।

एशिया के कहानीकारों में पाकिस्तानी कहानीकारों का अलग स्थान है। उर्दू, पंजाबी, सिंधी, पश्तो और सुरायिकी भाषा में लिखते हुए पाकिस्तानी कहानीकार अपने बहुलतावादी स्वर और अनुभवों की विविधता के लिये जाने जाते हैं। सदमों और अप्रिय अनुभवों के बीच पाकिस्तान के एक पृथक राष्ट्र के रूप में जन्म और उसके 60 वर्षों के इतिहास को समेटती पकिस्तानी कहानी मार्मिक और यथार्थवादी चित्रण के लिये जानी जाती है। पाकिस्तान की जनता की आशाओं, आकांक्षाओं और उसकी बहुवर्णी और समृद्ध संस्कृति का विश्वसनीय प्रतिबिंब इन कहानियों में मिलता है। प्रमुख पाकिस्तानी कहानीकार हैं– सआदत हसन मंटो, मजहर उल इस्लाम, दानियाल मुईनुद्दीन, मुमताज मुती, मुहम्मद असीम बट्ट, अहमद नदीम काजमी, सादिया कुरैशी(लेखिका), खाकान साजिद, ताहिर नकवी, शौकत तनवी, शाएला अब्दुल्लाह(लेखिका) आदि। पाकिस्तान में अंग्रेजी भाषा में भी विश्वस्तरीय कहानियाँ लिखी गयीं हैं। इसमें पाकिस्तान में रहने वाले और विदेशों में बसे प्रवासी लेखक शामिल हैं। अंग्रेजी पाकिस्तान की राजकीय भाषा है और वहाँ इसका इतिहास उतना ही पुराना है जितना कि ब्रिटिश राज। यहाँ राष्ट्रीय स्तर पर जो अंग्रेजी बोली जाती है उसे पाकिस्तानी अंग्रेजी कहते हैं। इस भाषा में रचा गया साहित्य आधुनिक पाकिस्तानी साहित्य का महत्वपूर्ण हिस्सा है। प्रमुख पाकिस्तानी अंग्रेजी कहानीकार हैं– अहमद अली, जुल्फिकार घोष, बापसी सिधवा, हनीफ कुरैशी, तारिक अली, अमीर हुसैन, सारा सुलेरी, मोहसिन हामिद, कमीला शम्सी, नदीम असलम, मोहम्मद हनीफ, दानियाल मुईनुद्दीन, तहमीना दुर्रानी अदि।

बांग्लादेश में कहानी लेखन की मुक्कमल शुरूआत मुक्ति संग्राम के दौरान हुई। मुक्ति–संग्राम के महान अध्यायों की गाथायें, और इस संघर्ष से उपजे सपनो के टूटने से उत्पन्न हुई निराशा, पीड़ा और कुंठा, धार्मिक कठमुल्लापन आदि को आधुनिक बांग्लादेशी कहानी पूरी मार्मिकता में चित्रित करती है। प्रमुख बांग्लादेशी कहानीकार हैं– बशर

अल–हेला, हसन अजीजुल हक, शौकत उसमान, अबू जफर शमुस्द्दीन, अबू बकर सिद्दीक, सादेका शफीउल्लह, एहसान चौधरी, सैयद इकबाल, शम्सुल हक, विप्रदास बरुआ, काजी जाकिर हसन, सेलीना होसैन(लेखिका), तसलीमा नसरीन(लेखिका) आदि।

श्री लंका में कहानी साहित्य की सबसे प्रभावशाली विधा है। यहाँ सिंहली भाषा के कहानीकारों ने अपने देश की राजनीतिक, सामाजिक और साँस्कृतिक परिस्थितियों को लक्ष्य करके महत्वपूर्ण कहानियाँ लिखी हैं। सिंहली भाषा के अलावा अंग्रेजी और तमिल भाषा में भी कहानियाँ लिखी जा रही हैं। पी. बी. जयशेखर, आनंदसिरी कलपुग्मा, एरिक इल्लायाप्पाराच्ची आदि सिंहली भाषा के प्रमुख कहानीकार हैं। सुविमाली करुनारत्न श्रीलंका की प्रमुख महिला कहानीकार हैं।

11.5 पश्चिमी एशिया में कहानी

पश्चिमी एशिया में कहानी का प्रतिनिधित्व अरबी कहानी, फारसी कहानी और तुर्की कहानी के द्वारा होता है। इसके अलावा इस्राएल की हेब्रू और यिद्दिश भाषी कहानीकारों की कहानियाँ भी महत्वपूर्ण हैं। उन्नीसवीं सदी में छापेखाने के विकास के चलते अरबी कहानियों का पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशन शुरू हुआ। उन्नीसवीं सदी के अंत तक मिस्र, लेबेनान और सीरिया के अखबारों और पत्रिकाओं में छपने वाली इन कहानियों को रवाया, किस्सा और हकाया जैसे नाम दिये गये। एशिया में अरबी कहानी के विकास में सीरिया के कहानीकारों का योगदान उल्लेखनीय है। मिस्र के मुहम्मद हुसैन हैकल, महमूद तैमूर, अल–हाकिम, यूसुफ इदरिस आदि लेखकों नें आधुनिक सीरियाई कहानीकारों को गहराई से प्रभावित किया। एशिया में आज अरबी कहानी के सशक्त प्रतिनिधी जकारिया तमेर, फारिस फर्जूर, अल–साम्मां आदि सीरियाई लेखक हैं। शुरुआती दौर की अरबी कहानी पश्चिमी शैलियों को अपना कर और उनसे प्रभावित होकर लिखी गयी थी। इस दौर के प्रमुख अरबी कहानीकारों में खलील जिब्रान, अल–बुस्तानी, लबीबा हाशिम, अल–मनफलूती आदि का नाम उल्लेखनीय है। 1914 से 1925 के बीच लिखी गयी अरबी कहानियों में अपनी परंपरा से जुड़कर और पश्चिम की नकल से परहेज करते हुए अपनी विशिष्ट और प्रामाणिक वजूद की तलाश करने की प्रवृत्ति दिखायी पड़ती है। मुहम्मद तैमूर, ताहिर लशीं आदि इस दौर के प्रमुख अरबी कहानीकार हैं। मुहम्मद तैमूर बहुत महत्वपूर्ण कहानीकार हैं क्योंकि मनोवैज्ञानिक चित्रण और यथार्थवादी तकनीक के कुशल इस्तेमाल द्वारा उन्होंने अरबी कहानी में उस परिपक्व सिलसिले की नींव डाली जो 1925 के बाद से लेकर अब तक चला आ रहा है। 1960 के बाद अरबी कहानी में उन बहुत से तत्वों को देखा जा सकता है जो उत्तर–आधुनिकतावाद के आधार स्तंभ माने जाते हैं।

आधुनिक फारसी कहानी की शुरुआत भी बीसवीं सदी में हुई। आरंभिक दौर के कहानीकारों में अल–जमालजादा का नाम उल्लेखनीय है। उनका संग्रह 'याकी–ए–बूद याकी–ए–नाबूद' काफी महत्वपूर्ण है। सादिक हिदायत भी आरंभिक दौर के महत्वपूर्ण कहानीकार माने जाते हैं। अल–जमालजादा को आधुनिक फारसी कहानी का जनक होने का श्रेय प्राप्त है। सादिक हिदायत नें फारसी कहानी में आधुनिकतावाद की नींव डाली। 'सेह कतरा खून' और 'जिंदा बे गूर' उनके प्रमुख कहानी–संग्रह हैं। बोजोर्ग अल्वी वामपंथी रूझान के कहानीकार थे जिन्हें क्रांतिकारी लेखन के लिये जेल में बंद किया गया। उनकी कहानियाँ कैदखाने में रचे गये साहित्य को नया विस्तार देतीं हैं। जेल में लिखी अपनी कहानियों में अल्वी नें राजनीतिक और गैर–राजनीतिक कैदियों की शोचनीय दशा, अधिकारियों द्वारा किये जाने बुरे बर्ताव का मार्मिक चित्रण किया है। उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं–'इंतजार', 'अवे ओमुमी', 'गीला मर्द', ,'नामाह' आदि। अल्वी

नें फारसी कहानी में सामाजिक प्रतिबद्धता के स्वर को प्रतिष्ठित किया। उन्होंने मनोवैज्ञानिकता के बजाये सामाजिक यथार्थवाद को कहानी का प्रमुख तत्व माना। फारसी कहानी में अल्वी का सबसे बड़ा योगदान यह है कि शोषित और वंचित तबकों का विश्वसनीय और यथार्थ चित्रण पहली बार संभव हुआ और सामाजिक मुद्दे कहानी का विषय बने। अल्वी ने यौन वर्जनाओं को चुनौती देते हुए पहली बार अपनी कहानियों में सशक्त महिला चरित्रों को गढ़ा। अल्वी नें फारसी कहानीकारों की आने वाली पीढ़ी के फरीदुन तोनोकबोनी, महमूद दौलताबादी, समद बहरंगी जैसे लेखकों को गहराई से प्रभावित किया। अल्वी ने अपनी कहानियों में यौन–सबंधों का जैसा चित्रण किया और जेंडर संबंधी दृष्टिकोण को जो नया विस्तार दिया उसने अगली पीढ़ी के जमाल मिर्जादेगी और हुशंग गुलशीरी जैसे फारसी कहानीकारों को नयी प्रेरणा दी। 1941 में शाह रजा की पदच्युति के बाद ईरान में थोड़े समय के लिये लेखकीय स्वतंत्रता बहाल हुई। लेखकों को तमाम सामाजिक और यौन–वर्जनाओं को चुनौती देने की सेंसर से छूट मिली। अश्लील और वर्जित समझे जाने वाले विषयों को लेखकों ने कहानी में प्रतिष्ठित किया। इन लेखकों में सादिक चुबाक का नाम सबसे महत्वपूर्ण है। उन्होनें बिना किसी लाग लपेट के ईरानी समाज में व्याप्त नैतिक पतन और क्रूर पाशविकता को अपनी कहानियों में प्रतिबिंबित किया। जलाल अल–ए अहमद, गुलाम–हुसैन सा'एदी, इब्राहिम गुलिस्तान, मोहम्मद ए'त्मादजादा 'बेहाजीन', इस्माइल फसीह, महमूद कियानुश, असगर इलाही आदि इस दौर की फारसी कहानी के अन्य महत्वपूर्ण लेखक हैं। इसी दौर में सिमिन दानेश्वर जैसी महत्वपूर्ण और सशक्त फारसी लेखिका ने कहानी लिखना शुरू किया और समकालीन ईरानी लेखन में स्त्रीवादी नजरिये को प्रतिष्ठित किया।

1979 की इस्लामिक क्रांति के बाद इन लेखकों की कहानियों को कठमुल्लावादी कट्टरपन का शिकार होना पड़ा मगर इन तमाम उतार चढ़ावों के बीच फारसी कहानी अनेक चुनौतियों का सामना करती हुई लगातार विकसित होती गयी। समकालीन फारसी कहानी इरान–ईराक युद्ध, कठमुल्लावादी शोषण और तमाम सामाजिक समस्याओं को निडरता से संबोधित करती है। अकारण नहीं है कि आज की फारसी कहानी में महिला कहानीकारों की भागीदारी बढ़ी है। इनमें सिमिन दानेश्वर के अलावा शाहर्नुश पारसीपूर, मोनीरू रवानीपूर, फारखोंदा अगायी, ताहेरा अल्वी, फरिश्ता मावलवी, जोया पीरजाद आदि का नाम उल्लेखनीय है। आज की फारसी कहानी के अन्य प्रतिष्ठित लेखक हैं– रेता जुला'ई, रजा फर्रूखफल, अमीर हसन चेहलतान, मोहम्मद रजा–सफदारी, असगर अब्द–अल्लाही, बेहनाम दय्यानी, बीजान नाजदी, हुशांग अजूरजादा, मोहम्मद मोहम्मद अली, मोहम्मद बहमान–बेगी, हुशंग मुरादी किरमानी आदि।

तुर्की में परंपरा से प्राप्त तत्वों को कहानी में शामिल करके इस विधा को विकास की नयी ऊँचाईयों से नवाजा गया। मिथकों, परिकथाओं और लोककथाओं द्वारा पोषित आधुनिक तुर्की कहानी नें बीसवीं शताब्दी में अपना स्वतंत्र अस्तित्व प्राप्त किया। तुर्की में हालित जिया और रफीक हालित केरै जैसे कहानीकारों ने यथार्थवाद को प्रतिष्ठित किया और याकूप कादरी करौसमंगोलू ने कहानी में उस लोकतांत्रिक प्रक्रिया को शुरू किया जिसनें उसे आधुनिक तुर्की साहित्य की सबसे महत्वपूर्ण विधा के रूप में स्थापित किया। फिर भी यह माना जाता है कि मेमदूह एसेंदल, सैत फैक, ओरहान कमाल, सबाहत्तिन अली आदि नें पारंपरिक अवधारणाओं से विद्रोह करके उन बदलावों को जन्म दिया जिनसे कहानी एक आधुनिक साहित्यरूप के बतौर अपनी मुकम्मल पहचान बना पाई। 1950 के आसपास कहानीकारों की जो पीढ़ी अस्तित्व में आयी वह बौद्धिक और कलात्मक दृष्टि से पश्चिमी लेखकों से अत्यधिक प्रभावित हुई। 1960 और 70 के दशक की तुर्की कहानी

में राजनीतिक स्वर अत्यंत तीव्र है। कहानी का यह सिलसिला तुर्की में 1980 में मजबूत सेंसरशिप लागू होने तक निर्बाध गति से चलता रहा और कई विश्वप्रसिद्ध तुर्की कहानीकारों नें अपनी पहचान बनाई। इनमें वुस'अत ओ. बेनेर, ओक्ते अकबल, नेजीहे मेरिक(लेखिका), बिल्गे करासू, लैला अर्बिल(लेखिका), तारीक दुरसुन के., सेविम बराक(लेखिका), तहसीन युसेल, ओरहान दुरु, अदनान ओजयालसीनेर, देमीर ओजलू, एरदाल ओज, फुरूजान(लेखिका), फेरित एदगू, ओनत कुतलार, तोमरिस उयार(लेखिका), नुर्सेल दुरुएल(लेखिका), तेजेर ओज्लू(लेखिका), नेकाती तोसुनेर, इंकी अराल(लेखिका), नज्ली एरै(लेखिका) आदि। 1980 में सेंसरशिप लागू होने के बाद कहानियों का यह सिलसिला थमता सा नजर आया, फिर भी तुर्की कहानीकारों नें साहस का परिचय देते हुए घुटने टेकने से इंकार कर दिया और दस साल के बाद ही 1990 से तुर्की कहानी में एक नया उभार आया और इस दौर मे जो कहानीकार सामने आये उन्होंने सेंसरशिप लागू होने के पूर्व की कहानियों से जीवंत रिश्ता बनाते हुए तुर्की कहानी की महान परंपरा से अपने को जोड़ा। इनमें फेयाजा हेप्किलिंगिर्लर(लेखिका), सलिम इलरी, हुल्कि आकतुंग, नदीम गुर्सेल, कमिल कवुक्कू, फरीदा किकेकोग्लू (लेखिका), माहिर ओज्तास, हसन ओज्किलिक, कादरी ओजतोप्कू, मुराथन मुंगन, मेहमत जमन साक्लिओग्लू, मारिओ लेवी, फातिह ओजगुवेन, फरूक उलै, हसन अली तोप्तास, ओज्कान काराबुलुत, हाकान सेनोकाक, सुजान सामांकी(लेखिका), ऐफेर तूंक(लेखिका), बारिस बिकाक्की, मुगे इप्लिक्की(लेखिका), इनान केतिन, आस्ली एर्दोगन(लेखिका), दोगन यारिकी, मूरत गुल्सोय, सिबल के. तुर्कर(लेखिका), बेहकत कलिक, मुरत याल्किन, बसर बसारीर, समा कायगुसुज(लेखिका), कारीन काराकास्ली(लेखिका), शबनम इशीगुजेल(लेखिका), फारुक दुमान, ओनूर कैमाज आदि का नाम उल्लेखनीय है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान नात्सियों द्वारा यहूदियों के नरसंहार को आधार बनाकर अद्वितीय कहानियाँ लिखी गईं। सदियों से यहूदियों को शक और संशय की निगाह से देखा गया और उन पर अत्याचार किए गये। यहूदियों पर अत्याचार की इस विरासत ने बीसवी सदी में विकराल रूप लिया। जर्मनी में नात्सीवाद के उदय और द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण यहूदियों को दिल दहला देने वाली यंत्रणा का सामना करना पड़ा। बड़े पैमाने पर अमानवीय तरीके से उनकी हत्यायें की गयीं। नस्लभेद की क्रूरतम यंत्रणाओं को भोगते हुए भी यहूदियों की आत्मिक संस्कृति कभी कमजोर नहीं पड़ी और उन्होने हर कीमत पर संघर्ष करते हुए अपनी सांस्कृतिक विरासत की रक्षा की। यहूदी कहानीकारों ने मानवीय जिजीविषा को नया आयाम दिया। आधुनिक कहानी में 'डार्क ह्यूमर' के तत्व का सबसे ज्यादा विकास यहूदी लेखको ने ही किया। ज्यादातर यहूदी लेखकों ने लेखन के लिए हेब्रू भाषा को अपनाया और एशिया में इज़राईल के निर्माण के बाद वहाँ की नागरिकता ग्रहण की। योसेफ ब्रेनेर, एतेगर केरेत, याकोव शाबताई, जेरूया शालेव आदि इस्राएल के प्रमुख कहानीकार हैं।

11.6 दक्षिण–पूर्वी एशिया में कहानी

दक्षिण–पूर्वी एशियाई कहानी का प्रतिनिधित्व बर्मा, कम्बोडिया, इंडोनेशिया, मलेशिया, सिंगापुर, थाईलैंड और विएतनाम की कहानियों द्वारा होता है। बर्मा में आधुनिक कहानी का आगाज बीसवीं सदी में पी मोए निन ने किया। इसीलिये निन के बर्मा की आधुनिक कहानी का जनक माना जाता है। निन ने कहानी को दुरूह प्रतीकों और बिंबों के जाल से आजाद कर सारगर्भित और स्पष्ट शैली को अपनाकर आगे के कहानीकारों के लिये मार्ग प्रशस्त किया। बर्मा की कहानियाँ साधारण लोगों के जीवन के उन पहलुओं को

अभिव्यक्त करती हैं जो संसार भर के मीडिया के अन्य रूपों द्वारा पूरी तरह उपेक्षित हैं। इसीलिये बर्मा की कहानियाँ महत्वपूर्ण हैं क्योंकि बर्मा के जनजीवन की विश्वसनीय झाँकी अगर कहीं मिलती है तो वहाँ के साहित्य में, खासकर कहानियों में। बर्मा के अन्य महत्वपूर्ण कहानीकार हैं– थैकपान मौंग वा, पे म्यिंत, खिन ह्लिन यू(लेखिका) आदि।

कंबोडिया में कहानी के विकास में भारतीय और चीनी प्रभावों के अतिरिक्त देशज ख्मेर लोकसंस्कृति ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। कंबोडिया में 1975 में पोल पोट के नेतृत्व में ख्मेर रुज की आतंकी सत्ता की स्थापना के दौरान कहानीकारों ने इतिहास के सबसे काले अध्याय और सबसे भयानक अत्याचारों को झेला। एक सुनियोजित तरीके से ख्मेर रुज की सत्ता नें कंबोडिया की देशज संस्कृति और उसकी समृद्ध लोकसंस्कृति को जड़ से मिटाने का घिनौना अभियान चलाया। जिसने भी इसका विरोध किया उसे बेदर्दी से कुचल डाला गया। ख्मेर रुज की सत्ता के पतन के बाद कंबोडिया में अपने इतिहास, संस्कृति और लोकसाहित्य की नये तरीके से खोज हुई और अपनी देशज और राष्ट्रीय अस्मिता को पूरे स्वाभिमान के साथ पहचानने का यत्न आरंभ हुआ। इसमें कंबोडिया के कहानीकारों ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। कंबोडिया की कहानी अपनी लोकपरंपरा में गहरी जड़ जमाकर कंबोडिया की सामन्य जनता के जीवन को, उसकी मान्यताओं को और उसके संघर्षों का वस्तुनिष्ठ चित्रण करती है। कंबोडिया के प्रमुख कहानीकार हैं– महा घोसानंद, यू सैम औएर, कोंग बंछोएउन, छ्युत कय, सोथ पोलिन, हाक छाये होक, खुन स्रून, इम थोक, सुओन सोरिन, नूओ हाछ आदि।

इंडोनेशिया में कहानी को लंबे समय तक दोयम दर्जे का साहित्य मानकर उसे उपन्यास लिखने का अभ्यास मात्र माना गया। कविता और उपन्यास की जैसी प्रतिष्ठा यहाँ रही, उसको प्राप्त करने में कहानी को काफी समय लगा। इंडोनेशिया में आज कहानी एक ऐसी विधा बन चुकी है जो समकालीन सामाजिक और राजनीतिक उथल–पुथल से पूरी तरह उद्वेलित है, अपनी जनता से जड़ से जुड़ी है और सत्ता के अत्याचारों के विरोध में बहुत मुखर है। भाषिक संस्कृति की संभानाओं की पड़ताल, जीवंत उपमानों का निर्माण, कहानीकला की नयी तकनीकों की खोज, नये विषयों और अनछुए पहलुओं का अन्वेषण आदि वे क्षेत्र हैं जिनका मंथन इडोनेशियाई कहानीकारों ने गहराई से किया है। इंडोनेशियाई कहानी में नये अन्वेषणों और प्रयोगों के सिलसिले ने विविधता को जन्म दिया है। यथार्थवाद, अतियथार्थवाद, कलायुक्त बेतुकापन, जादुई यथार्थवाद और उत्तर–आधुनिक वैचारिकी के कलात्मक संधान द्वारा इंडोनेशिया के कहानीकारों ने अपने देश में आ रहे सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों को समझने का प्रयत्न किया है। इंडोनेशिया की कहानी में विभिन्न मूल्यों, विचारों और सौंदर्यशास्त्रीय रूझानों को घुलते हुए देखा जा सकता है। हाशिये के समाज को पर्याप्त प्रधिनिधित्व देने की अकुलाहट इंडोनेशियाई कहानीकारों में प्रबल है। यौन विषमताओं और जेंडर के मुद्दों पर इंडोनेशियाई महिला कहानीकरों ने मार्मिक रचनायें दी हैं। इंडोनेशिया की महिला कहानीकारों में डोरोथी रोजा हेरिलियानी, ओके रूस्मिनी, नेंदन लिलिस ए., रत्ना इंद्रास्वरी इबराहिम, सिल्विया मोना आदि का नाम उल्लेखनीय है। अन्य महत्वपूर्ण इंडोनेशियाई कहानीकार हैं– बुदी दर्मा, हमसद रंगकुति, कुंतोविजोयो, दनार्तो, उमर कयम, ए. ए. नाविस, सेनो गुमीरा आजिदरमा, तौफीक इकरम जमील, यानूसा नुगरोहोम, आरी एम. पी. ताम्बा, एम. शोइन अनवन, गुस्तफ सकाई, यूस्रिजाल के. डब्लू., जोनी अरियादिनाता, आबिदा अल–खालिकी, सात्मको बुदी सांतोसो, एस. प्रास्तेयो उतामो, हेरलीनो सोलमेन, त्रियांतो तीवीक्रोमो, तेगू विनारसो एच. एस. आदि।

मलेशिया में कहानी उपनिवेशवाद के विरूद्ध संघर्ष करते हुए विकसित हुई। उपनिवेशवाद से मुक्त होने के बाद भी मलेशिया औपनिवेशिक कुचक्रों का शिकार बना रहा। आजादी के बाद मलेशिया में विभिन्न प्रजातियों की सौहार्दपूर्ण और समरस मौजूदगी में साम्राज्यवादियों नें जहर घोल दिया और मलेशिया एक ऐसे राष्ट्र में तब्दील हो गया जहाँ जातीय असंतोष, पूर्वाग्रह और दिल दहला देने वाले खूनी संघर्ष ने वहाँ की जनता के हृदय को चीर कर रख दिया। मलेशिया के कहानीकारों ने एक राष्ट्र के सामाजिक और आर्थिक पतन की महागाथा को, साधरण जनता की गरीबी और कठिन जीवन–स्थितियों को अंतर्जातीय संघर्षों और नफरतों के बरक्स चित्रित किया है। ये कहानियाँ मलय और देशज लोगों के दुख–दर्द और पीड़ा को दर्शाती हैं जो सामाजिक और आर्थिक विकास को अवरूद्ध कर देने वाली स्थितियों के दुश्चक्र की उपज है। अवांग हद साल्लेह, जैद अहमद, अनवर रिधवान, केरिस मास, शाहनोन अहमद, अरेना वाती, अब्दुल्ला हुसैन आदि महत्वपूर्ण कहानीकार हैं ।

सिंगापुर में कहानी–लेखन वहाँ की सभी मुख्य भाषाओं में हुआ है। ये भाषायें हैं– अंग्रेजी, चीनी, मलय और तमिल। इन सभी भाषाओं में रची गयी कहानियाँ सिंगापुर के समाज और सँस्कृति के विभिन्न पहलुओं को दर्शाती हैं। सिंगापुर में कहानी लेखन पहले प्रतिष्ठित हुआ, उपन्यास बाद में। प्रमुख कहानीकार हैं– कैथरीन लिम(लेखिका), हैन मे(लेखिका), रेक्स शेली, गोपाल बराथम, आगस्टिन गोह सिन तुब, क्लेयर थाम, ओविडिया यू, कोलिन चेयोंग, सिमोन तेय, अलफियान बिन सा'त, विल्लाइल रमन गोपाल पिल्लई आदि।

थाईलैंड की परंपरागत कहानियाँ भारतीय संस्कृति से प्रेरित हैं। ये ज्यादातर रामायण की कहानियों पर आधारित हैं। मगर बीसवीं सदी में आधुनिक कहानी का सूत्रपात यहाँ हुआ और सामाजिक मुद्दों और मनोवैज्ञानिक सूक्ष्मताओं पर कहानी लेखन की शुरुआत हुई। प्रमुख थाई कहानीकार हैं– जादेत कामजोर्दनेत, सिरीवोर्न कएवकान, सकोर्न पुलुस्क, बूनचित फैकमे, फैथून थान्या, सोम्पोर्न प्रसारेतसुंग, यान–योंग तुलयानित, उथेन वोंगजानदा, लवेंग पंजासूनथोर्न, अनुसोर्न तिपायानोन, चतचरिन चौवात आदि।

विएतनाम में आधुनिक कहानी की शुरुआत का श्रेय न्गुएन मिन्ह चाऊ को जाता है। वामपंथी लेखक चाऊ ने कहानी में सामाजिक यथार्थवाद को प्रतिष्ठित किया। लेकिन उनका लेखन कभी एकांगी नहीं रहा। उन्होंने मनोवैज्ञानिक जटिलता वाले चरित्रों को भी बड़ी कुशलता से रचा। उनका स्पष्ट मानना कि कहानी में बिना किसी पूर्वाग्रह के यथार्थ की रचना होनी चाहिये, चाहे वह बाह्य यथार्थ हो या आंतरिक। उनकी इन मान्यताओं का दांग थान, नाम काओ और न्गुएन न्हात आन्ह जैसे अन्य विएतनामी कहानीकारों पर गहरा प्रभाव पड़ा।

11.7 सारांश

एम.ए.(हिंदी) के द्वितीय वर्ष के कहानी से संबंधित माड्यूल के पाठ्यक्रम 'कहानीः स्वरूप और विकास' के तीसरे खण्ड की ग्यारहवीं इकाई का अध्ययन आपने किया है। यह एशियाई देशों में कहानी के विकास को दर्शाने वाली इकाई है।

इकाई–11 के इस पाठ में आप पूर्वी एशिया (चीन, जापान और कोरिया), मध्य एशिया (कज्जाकिस्तान, किर्गीजिस्तान, ताजिकिस्तान), पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्री लंका, पश्चिमी

एशिया(अरबी, फारसी, तुर्की और इज़राइली) और दक्षिण–पूर्वी एशिया(बर्मा, कम्बोडिया, इंडोनेशिया, मलेशिया, सिंगापुर, थाईलैंड और विएतनाम) में कहानी के विकास को प्रभावित करने वाले कारकों और प्रमुख कहानीकारों के बारे में जानकारी ले सकते/सकती हैं।

अभ्यास

यहाँ इस इकाई के पाठ पर आधारित कुछ प्रश्न दिये जा रहे हैं। हमारा विश्वास है कि यह प्रश्न विद्यार्थियों को एशियाई देशों में कहानी के विकास पर नयी दृष्टि से सोचने को प्रेरित करेंगे।

1. पूर्वी एशिया में कहानी के विकास पर टिप्पणी कीजिये।
2. मध्य एशिया के देशों में कहानी के विकास को प्रभावित करने वाले कारकों का वर्णन कीजिये।
3. पश्चिमी एशिया की प्रमुख भाषाओं में लिखी जाने वाली कहानियों के विकास पर सविस्तार चर्चा कीजिये।
4. दक्षिण पूर्वी एशिया के प्रमुख कहानीकारों पर टिप्पणी कीजिये।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 12 लैटिन अमेरिकी और अफ्रीकी देशों में कहानी

इकाई की रूपरेखा

12.0 उद्देश्य

12.1 प्रस्तावना

12.2 लैटिन अमेरिकी देशों में कहानी

12.2.1 प्राक्–औपनिवेशिक आख्यान

12.2.2 उन्नीसवीं सदी की लैटिन अमेरिकी कहानी

12.2.3 बीसवीं सदी की लैटिन अमेरिकन कहानी

12.2.4 समकालीन लैटिन अमेरिकी कहानी

12.3 अफ्रीकी देशों में कहानी

12.3.1 प्राक्–औपनिवेशिक आख्यान

12.3.2 अफ्रीकी उपनिवेशों में कहानी

12.3.3 उत्तर–औपनिवेशिक अफ्रीकी कहानी

12.3.4 प्रमुख अफ्रीकी कहानीकार

12.4 सारांश

अभ्यास

12.0 उद्देश्य

यह एम. ए. हिंदी के द्वितीय वर्ष के कहानी से संबंधित मॉड्यूल के पाठ्यक्रम 'कहानीः स्वरूप और विकास' से संबद्ध तीसरे खण्ड की बारहवीं इकाई है। इस इकाई में हम लैटिन अमेरिकी और अफ्रीकी देशों में कहानी विधा के विकास पर चर्चा करेंगे। लैटिन अमेरिकी और अफ्रीकी देशों ने साम्राज्यवादी और उपनिवेशवादी गुलामी के शोषण, अत्याचार और अनाचार को पूरी उत्कटता में भोगा है। इन देशों में कहानी उपनिवेशवाद विरोधी संघर्ष का एक महत्वपूर्ण उपकरण बनकर उभरी। एक उपनिवेश के रूप में इन देशों का यथार्थ और उत्तर–औपनिवेशिक चेतना से लैस मुकम्मल कल्पनादृष्टि इन कहानियों में मिलती है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप लैटिन अमेरिकी और अफ्रीकी देशों में कहानी के विकास को समझ सकेंगे/सकेंगी।

12.1 प्रस्तावना

लैटिन अमेरिकी कथा–साहित्य में दक्षिण अमेरिका महाद्वीप और कैरिबियन द्वीप समूह की विभिन्न देशज भाषाओं के साथ–साथ स्पहानी, पुर्तगाली आदि भाषाओं में रची गयीं कहानियाँ और उपन्यास शामिल हैं। इन देशों के कथा साहित्य को बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में विशेष ख्याति तब मिली जब जादुई यथार्थवाद नामक शैली को, जो यहाँ के कथा–साहित्य की मौलिक उपलब्धि रही, विश्व–स्तर पर प्रतिष्ठा मिली। अफ्रीकी देशों का कथा–साहित्य इस अर्थ में विशिष्ट है कि यहाँ कला और अंतर्वस्तु के विभाजन की

मुखालफत करते हुए यूरोपियन कथा–दृष्टि के विपरीत कलात्मकता का प्रयोग महत्वपूर्ण सत्यों और सूचनाओं की सामाजिक संप्रेषणीयता के लिये किया गया है। इस दृष्टि से लैटिन अमेरिकी और अफ्रीकी देशों की कहानियाँ विशिष्ट हैं।

12.2 लैटिन अमेरिकी देशों में कहानी

12.2.1 प्राक्–औपनिवेशिक आख्यान

प्राक्–औपनिवेशिक आख्यान लैटिन अमेरिकी देशों के वह प्राचीन आख्यान हैं, जो वहाँ के देशज निवासियों द्वारा रचे गये। ये अधिकांशतः मौखिक हैं। हालाँकि एजटेक और माया सभ्यता के लोगों ने कुछ असंगठित पांडुलिपियाँ भी छोड़ी हैं। यह मौखिक आख्यान मिथकीय और धार्मिक विश्वासों पर आधारित थे। 'पोपोल वूह' जैसे वृत्तांत तो यूरोपीय सम्राज्यवादियों के आगमन तक रचे जाते रहे। मौखिक वृत्तांतों की यह परंपरा लैटिन अमेरिकी देशों में आज तक जीवित है और इसने इन देशों में कहानी के विकास को काफी गहराई से प्रभावित किया है। पेरू की केशावा–भाषी और ग्वाटेमाला के कीश आख्यान इसका उदाहरण हैं।

12.2.2 उन्नीसवीं सदी की लैटिन अमेरिकी कहानी

लैटिन अमेरिकी देशों में एक संगठित विधा के रूप में कहानी का विकास उन्नीसवी सदी में ही संभव हो पाया। हालाँकि इसकी शुरुआत यूरोपीय साम्राज्यवादियों के आगमन से ही हो चुकी थी। कोलंबस और बर्नाल दिआज देल कास्तीलो जैसे आरंभिक यूरोपीय खोजी और विजेता अपनी जीतों और अनुभवों को आधार बनाकर कलात्मक वृत्तांत रचने में सफल रहे। इसके अलावा इन साम्राज्यवादियों द्वारा देशज जनता का शोषण और गुलामी विवाद का विषय बने और उपनिवेशवादियों द्वारा प्रचारित तर्कों की नैतिकता को कठघरे में खड़ा किया गया। बार्तोलोम दे लास कासास का 'इंडीज की तबाही का संक्षिप्त विवरण' उपनिवेशवादी नैतिकता के खोखलेपन को उजागर करने वाले आरंभिक आख्यानों में से एक है। मेस्तीजो और अन्य देशज लेखकों ने भी औपनिवेशिक दृष्टिकोणों को चुनौती देने वाले वृत्तांत लिखे। इनमें एल इंका गार्सिलासो दे ला वेगा और ग्वामान पोमा द्वारा रचित स्पाहानी विजेताओं के अत्याचारों का वर्णन करने वाले वृत्तांत प्रमुख हैं। अठ्ठारहवीं सदी के अंत और उन्नीसवीं सदी की शुरूआत से लैटिन अमेरिकी देशों के कथा–साहित्य को मुकम्मल कलात्मक आधार मिलना आरंभ हुआ और खोसे जुआक्विन फर्नांदेज दे लिजार्दी जैसे कथा–लेखकों का आविर्भाव हुआ। साईमन बोलिवार और आंद्रेस बेलो जैसे स्वतंत्रता–सेनानी भी कथा–लेखक थे। उन्नीसवीं सदी में रूमानी और प्रकृतवादी परंपरा में राष्ट्रीय स्वाभिमान को जगाने वाली कहानियाँ लिखी गयीं। इन कहानियों में औपनिवेशिक दृष्टिकोणों को चुनौती देते हुए देशज अस्मिता और उससे जुड़े मुद्दों को प्रमुखता से उठाया गया। अर्जेंटीना के डॉमिंगो सार्मीतो, कोलंबिया के खोर्खे इसहाक, इक्वाडोर के जुआन ल्योन मेरा, ब्राजील के यूक्लिदेस दा कुन्हा आदि इस दौर के प्रमुख कहानीकार थे।

12.2.3 बीसवीं सदी की लैटिन अमेरिकन कहानी

बीसवीं सदी में लैटिन अमेरिकी कहानी कला को अर्जेंटीना के कहानीकार खोर्खे लुई बोर्खेस ने नया आयाम दिया। उन्होंने कहानी में एक नयी शैली का सूत्रपात किया जिसे दार्शनिक लघुकथा का नाम दिया गया। बोर्खेस बीसवीं सदी के सबसे महत्वपूर्ण

कहानीकार के रूप में उभरे जिन्होंने न सिर्फ लैटिन अमेरिकी देशों की आने वाली कहानीकार पीढ़ी को बल्कि पूरी दुनिया के कहानीकारों को गहराई से प्रभावित किया। जादुई यथार्थवाद का, जिसके लिये लैटिन अमेरिकी कहानीकारों को विश्व भर में पहचाना जाता है, सबसे पहले पूरी कुशलता से अपनी कहानियों में प्रयोग बोर्खेस ने ही किया। ठीक इसी समय रॉबर्तो आर्ल्त ने शहरीकरण और प्रवासीकरण को केंद्र बनाकर महत्वपूर्ण कहानियाँ लिखीं। मकादो दे आसिस ब्राजील के महत्वपूर्ण कहानीकार हुए, जिन्होंने जीवन की विडंबनाओं और विसंगतियों पर तथा गहन मनोवैज्ञानिक दृष्टि से युक्त कहानियाँ लिखीं। मैक्सिको की क्राँति के दौरान मारियानो एजुआला जैसे कहानीकारों नें क्राँति, सामाजिक यथार्थवाद और बदलते परिदृश्य को आधार बनाकर एक अलग किस्म की कहानी परंपरा की नींव डाली जो लंबे अर्से तक मैक्सिको की कहानीकला को प्रभावित करती रही। 1940 के दशक में क्यूबा के कहानीकार अलेजो कार्पेंतिएर ने 'लो रिएल माराविलोसो' नामक संज्ञा को गढ़ा और मैक्सिको के जुआन रुल्फो और ग्वाटेमाला के मिगुल एंजेल आस्तूरिआस के साथ 'जादुई यथार्थवाद' की शैली को लैटिन अमेरिकी देशों की कहानियों की मुख्य पहचान के रूप में प्रतिष्ठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात लैटिन अमेरिकी देशों नें आर्थिक समृद्धि और आत्म–विश्वास की नयी राहों पर कदम रखा। इस दौर के लैटिन अमेरिकी साहित्य में एक नया उभार आया जिसे 'बूम' की संज्ञा दी गयी। अब कहानी में लैटिन अमेरिकी संस्कृति की साधारणीकृत धारणाओं को चुनौती दी जाने लगी, भाषा के स्तर पर नए–नए प्रयोग होने लगे और विभिन्न प्रकार की शैलियों को मिलाकर नई राहों का अन्वेषण किया जाने लगा। वास्तव में यह लैटिन अमेरिकी देशों की कहानी में प्रयोगवाद की शुरुआत थी। पारंपरिक आख्यानों से बाहर आकर, एकरेखीयता से विद्रोह कर नयी कथा संरचनाएं अस्तित्व में आईं। विलियम फॉकनर, जेम्स ज्वायस और वर्जीनिया वूल्फ जैसे उत्तर अमेरिकी और यूरोपीय लेखकों से प्रभावित होकर अब लैटिन अमेरिकी कहानीकारों ने नये विषयों को कहानी में प्रतिष्ठित करने का जोखिम उठाया। इन कहानीकारों में अर्जेंटीनी लेखक जूलिओ कोर्तजार का नाम उल्लेखनीय है। इनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं–'बेस्तिआरियो'(1951), 'फिनाल देल जुएगो'(1956), 'लास अर्मास सीक्रेतास'(1959) आदि। कोलम्बिया के गैबरियल गार्शिया मार्खेज, जिन्हें लैटिन अमेरिका का सबसे प्रसिद्ध कहानीकार होने का गौरव प्राप्त है, नें इसी दौर में लोकप्रियता अर्जित की। 'जादुई यथार्थवाद' अब लैटिन अमेरिकी कहानी की पहचान बन चुका था। पेरू के लेखक मारियो वर्गास योसा की कहानियाँ 'जादुई यथार्थवाद' के ढाँचे में फिट नहीं बैठती, लेकिन लोकप्रियता में वह किसी भी लैटिन अमेरिकी कहानीकार से पीछे नहीं हैं। उनका प्रमुख संग्रह है–'लोस येफेस'। योसा की ही तरह मैक्सिको के कार्लोस युंतेस एक प्रसिद्ध कहानीकार हैं। उनकी प्रसिद्ध कहानियाँ हैं–'लॉस दिआस एन्मासकरादोस', 'एगुआ क्वेमादा' आदि। 'बूम' के दौरान कहानीकला के सर्वोच्च शिखर को छुआ पैरागुए के कहानीकार आगस्तो रोआ बास्तोस ने। उनका प्रमुख कहानी संग्रह है–'एल त्रुएनो एंत्रे लास होजास' जिसमें पैरागुए में सत्ताधारियों के शोषण और सामाजिक संघर्ष का यथार्थ चित्रण हुआ है। चिली के खोसे दोनोसो ने तानाशाहों के खूनी शोषण की पोल खोलने वाली मारक कहानियाँ लिखीं। ग्वातेमाला के आगस्तो मोंतेर्रोसो नें कहानी में अपने देश में तानाशाही शासन तले पिसती जनता के संघर्षों का शिद्दत से चित्रण किया। 'बूम' के अंतर्गत लिखी गयी कहानियों की मुख्य विशेषता यह रही कि जब पूरी दुनिया में लैटिन अमेरिकी देशों की आर्थिक समृद्धि और उसकी विकासमान अर्थव्यवस्था का गुणगान किया जा रहा था तब इन कहानियों ने शोषण के जाल में फंसी लैटिन अमेरिकी देशों की जनता के संघर्षों को स्वर देकर आर्थिक समृद्धि के खोखले दावों की असलियत को उजागर किया।

12.2.4 समकालीन लैटिन अमेरिकी कहानी

'बूम' के उपरांत लैटिन अमेरिकी कहानी में महत्वपूर्ण मोड़ आया। चिली के अल्बर्तो फुग्युएत जैसे लेखकों ने लैटिन अमेरिकी कहानी में 'जादुई यथार्थवाद' की प्रमुखता को खारिज किया और जीवन की विडंबनाओं और विसंगतियों को चित्रित करने के भिन्न–भिन्न तरीकों का इस्तेमाल किया।उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं– 'सोब्रेदोसिस' और 'कॉर्तोस'। अब समकालीन लैटिन अमेरिकी कहानी में विविधता और जीवंतता की ऐसी अभिव्यक्ति हुई है कि उसे किसी एक आंदोलन या एक शैली में समेटा नहीं जा सकता। अन्य प्रमुख समकालीन लैटिन अमेरिकी कहानीकार हैं–पाउलो कोहेलो(ब्राजील), इजाबेल एलेंदे(चिली), दियामेला एल्तित(चिली), जिआन्निया ब्रास्की(प्यूर्तो रिको), लुइसा वालेंजुएला(अर्जेंतीना), रिकार्दो पिगलिया(अर्जेंतीना), खोर्खे मार्चांत लाजकानो(चिली), एदमुंदो पाज सोल्दान(बोलीविया), विक्तोर मोंतोया(बोलीविया), रोबार्तो बोलानो(चिली), सीजर आयेरा(अर्जेंतीना), कार्लोस मोन्सिवायस(मैक्सिको), पेद्रो लेमेबेल(चिली) आदि।

12.3 अफ्रीकी देशों में कहानी

अफ्रीकी देशों की कहानियों की मुख्य विशेषता यह है कि यहाँ शिल्प और कथ्य के पार्थक्य को अस्वीकार करके कहानी को सामाजिक परिवर्तन के साधन के रूप में पहचाना गया। कहानी की लिखित परंपरा के साथ–साथ वाचिक परंपरा को भी बराबरी से महत्व दिया गया। अफ्रीकी कहानीकारों ने सौंदर्य को सामाजिक सत्य की प्राप्ति की कारगर अभिव्यक्ति के लिये आवश्यक माना। इस तरह अफ्रीकी कहानी के संदर्भ में सत्य और सौंदर्य के बीच किसी भी तरह के विरोधाभास या अलगाव की बात करना बेमानी है।

12.3.1 प्राक्–औपनिवेशिक आख्यान

प्राक्–औपनिवेशिक अफ्रीका में कहानी की मौखिक परंपरा में मिथकीय और ऐतिहासिक तत्वों का इस्तेमाल हुआ है। इसमें ऐंद्रजालिक आख्यान भी शामिल हैं। अफ्रीकी कथावाचक अपनी कहानी को आगे बढ़ाने के लिये पाठकों की प्रतिक्रिया को काफी महत्व देता है। मौखिक कहानियों की सांगीतिक प्रस्तुति आम बात है। पश्चिमी अफ्रीका की मौखिक कहानियाँ मालि भाषा में रची गयीं। इथोपिया में केबरा नेगास्त की कहानियाँ गीज लिपि में रची गयीं। घाना के आशंति लोगों के बीच ऐसी लोक–कथाएँ प्रचिलित हैं जिनके नायक पशु हैं और वे अपने से ताकतवर समझी जाने वाली सत्ताओं को बुद्धिमत्ता से पराजित करते हैं। नाईजीरिया के योरूबा लोक साहित्य में इजापा नामक कछुए की तथा केंद्रीय और पूर्वी क्षेत्र के लोक साहित्य में सुंगुरा नामक खरगोश की कहानी काफी लोकप्रिय है। स्वाहिली तट, सहेल, टिंबकटू आदि क्षेत्रों में यूला और सोंघाई जैसी देशज भाषाओं में और अरबी भाषा में कई लोककथायें प्रचलित हैं जो अफ्रीकी कहानी की मौखिक परंपरा को समृद्ध करती हैं।

12.3.2 अफ्रीकी उपनिवेशों में कहानी

अफ्रीकी देशों में औपनिवेशिक शासन की स्थापना के उपरांत कहानीकारों का परिचय पश्चिम की अंग्रेजी, फ्रेंच व अन्य भाषाओं से हुआ और देशज भाषाओं की वाचिक कहानी परंपरा के समानांतर लिखित कहानी जब अस्तित्व में आई तब अफ्रीकी कहानीकारों ने पश्चिमी भाषाओं में कहानी लिखने की शुरूआत की । इन भाषाओं में लिखी गयी

कहानियाँ औपनिवेशिकता के दौर में विश्वप्रसिद्ध हुईं। जैसे–जैसे औपनिवेशिकता के खिलाफ जनसंघर्ष तेज होने लगा, अफ्रीकी कहानी में भी स्वतंत्रता, मुक्ति और 'नेग्रीट्यूड' जैसे विषय प्रमुखता से प्रतिष्ठित होने लगे। अब कहानी स्वतंत्रता संघर्ष का महत्वपूर्ण साधन बन चुकी थी। इस दौर के प्रमुख कहानीकारों में चिनुआ अचेबे और न्गुगी वो थ्योंगो का नाम उल्लेखनीय है। अफ्रीकी कहानीकारों ने तानाशाही और शोषण के खिलाफ अपनी जनता के पक्ष में लड़ते हुए अपनी जान तक गंवाई है। नाईजीरिया के लेखक केन सारो–विवा को सैन्य तानाशाहों ने फाँसी पर चढ़ा दिया था। उनकी कहानी 'अफ्रीका किल्स हर सन' बहुत ही मार्मिक है जो देश के सपूतों के प्रति तानाशाही शासन के क्रूर बर्ताव और अत्याचारों का बेबाकी से चित्रण करती है।

12.3.3 उत्तर–औपनिवेशिक अफ्रीकी कहानी

ज़्यादातर अफ्रीकी देशों ने 1960 और 70 के दशक में आजादी प्राप्त की। आजादी के बाद की अफ्रीकी कहानी ने, कला और साहित्य में प्रचलित औपनिवेशिक दृष्टि को चुनौती देकर देशज जनता की अस्मिता और आकांक्षा को प्रतिष्ठित किया। कहानी में एक खास मोड़ यह आया कि अंग्रेजी, फ्रेंच और पुर्तगाली जैसी पश्चिमी भाषाओं को पूर्णतया स्वदेशी रंग में इस तरह ढाला गया कि यह भाषाएं पूर्णतया अफ्रीकी भाषाएँ बन गयीं। अब इन्हें अफ्रीकी–अंग्रेजी, अफ्रीकी–फ्रेंच और अफ्रीकी–पुर्तगाली भाषा कहना ज़रूरी हो गया ताकि पश्चिमी भाषाओं से इनका अंतर स्पष्ट हो सके। साथ ही साथ देशज भाषाओं की संभावनाओं का विस्तार इस तरह किया गया कि वे मौखिक परंपरा की सीमारेखा को तोड़कर कहानी की लिखित सत्ता की अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण साधन बनीं। केन्या के कहानीकार न्गुगी वा थ्योंगो ने अंग्रेजी के साथ साथ देशज गिकुयू भाषा में भी कई महत्वपूर्ण कहानियाँ लिखीं। इस तरह उत्तर–औपनिवेशिक और समकालीन अफ्रीकी कहानी भाषा, शिल्प और कथ्य के स्तर पर पूर्णतया स्वदेशी है तथा स्थानीयता की खुशबू और रंग से सराबोर है।

12.3.4 प्रमुख अफ्रीकी कहानीकार

पीटर अब्राहम्स दक्षिण अफ्रीका के अंग्रेजी भाषी कहानीकार हैं। उनकी कहानियाँ राजनीतिक और सामाजिक मुद्दों से जूझती हैं और नस्लवादी शोषण के क्रूर और अमानवीय चेहरे को उजागर करती हैं। उनका प्रमुख कहानी–संग्रह है–'डार्क टेस्टामेंट'। चिनुआ अचेबे नाईजीरिया के लेखक हैं जिन्होंने अंग्रेजी में कहानियाँ लिखी हैं। अचेबे की कहानियाँ इग्बो समाज की परंपराओं, ईसाई प्रभावों तथा पश्चिम और पारंपरिक मूल्यों के टकराव को शिद्दत से दर्ज करती हैं। उनकी कहानियों की शैली पर इग्बो समाज की मौखिक परंपराओं, आख्यानों, लोकोक्तियों, कहावतों और कहन–कला का जबर्दस्त प्रभाव है। उनके कहानी संग्रह हैं–'मैरिज इज ए प्राईवेट अफेयर', 'डेड मेंस पाथ', 'द सैक्रिफीशियल एग एंड अदर स्टोरीज', 'सिविल पीस', 'द वोटर' आदि। चिमामंदा न्गोजी अदीची नाईजीरिया की आंग्ल–भाषी लेखिका हैं। उन्हें अफ्रीकी कथा–साहित्य के नये चेहरे के रूप में विश्व–स्तर पर ख्याति मिली है। उनका प्रमुख कहानी संग्रह है–'द थिंग अराउंड योर नेक'। मोहम्मद नसीहू अली घाना के लेखक हैं। अंग्रेजी में उनका प्रसिद्ध कहानी संग्रह है–'द प्रॉफेट आव जॉगो स्ट्रीट'। एलिची अमादी(नाईजीरिया) की अंग्रेजी कहानियाँ अफ्रीकी ग्रामीण जीवन की परंपराओं, आस्थाओं, धार्मिक विश्वासों और मान्यताओं का विश्वसनीय चित्रण करती हैं। घाना के कहानीकार अयी क्वेयी अर्माह ने अंग्रेजी में कई प्रसिद्ध कहानियाँ लिखी हैं। ये कहानियाँ निर्वासित लोगों द्वारा राजनीतिक

उथल–पुथल को भोग रही अपनी मातृभूमि को समझने और जानने की जद्दोजहद को सामने लाती हैं। उनकी प्रसिद्ध कहानी है 'द बाल'। सेफी अत्ता नाईजीरिया की लेखिका हैं जिन्होंने स्त्री नजरिये से अपने समाज के रीति–रवाजों के साथ–साथ घरेलू हिंसा का भी चित्रण किया है। उनका अँग्रेजी कहानी–संग्रह 'न्यूज फ्रॉम होम' विश्वप्रसिद्ध है। आयेशा अत्ताह घाना की अग्रेजी–भाषी लेखिका हैं जिनकी कहानी 'तमेल ब्लूज' काफी चर्चित हुई। मारियामा बा सेनेगल की फ्रेंच भाषी लेखिका हैं जिनकी कहानियाँ महिला–उत्पीड़न के विरूद्ध आवाज बुलंद करती हैं। कैमरून के मॉन्गो बेती फ्रेंच भाषी लेखक हैं जिनकी कहानियाँ अपने देश के समाज और राजनीति का यथार्थ और आलोचनात्मक चित्रण करती हैं। उनकी प्रमुख कहानी है–'सैन्स हाएने सैन्स अमोर'। जे. एम. कोएत्जी साउथ अफ्रीका के प्रसिद्ध लेखक(अंग्रेजी) हैं जिन्हें नोबेल पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। उनकी प्रमुख कहानी है 'द ओल्ड वूमैन एंड द कैट्स'। मोजाम्बीक के पुर्तगाली भाषी लेखक मिआ काउतो ने जादुई यथार्थवाद से प्रेरित होकर अनेक कहानियाँ लिखीं। उनका प्रसिद्ध संग्रह है–'कोंतोस दो नासेर दा तेर्रा' और 'वोजेस अनोइतेसिदास'।त्सित्सी दंगारेंब्गा जिम्बाब्वे की अंग्रेजी–भाषी कथा–लेखिका हैं जिनकी प्रसिद्ध कहानी है 'द लेटर्स'। आसिया द्जेबार अल्जीरिआ की फ्रेंच–भाषी लेखिका हैं जो अपने स्त्रीवादी सरोकारों के लिये जानी जाती हैं। उनकी प्रमुख कहानी है– 'फेमेस दे अल्जेर डैन्स ल्योर अपार्तेमेंते'। बुची एमेचेता नाईजीरिया की लेखिका हैं जिन्होंनें अपनी कहानियों में बच्चों की गुलामी, स्त्री–मुक्ति और अफ्रीका की गरीबी का मार्मिक चित्रण किया है। 'इन द डिच' अंग्रेजी में लिखा गया उनका प्रसिद्ध संग्रह है। डैनियल ओ. फगुन्वा नाईजीरियन कहानीकार हैं जिन्होंने देशज योरूबा भाषा में विश्व–प्रसिद्ध कहानियाँ लिखी हैं। नूरूद्दीन फरह सोमालिया के प्रसिद्ध लेखक हैं जिन्होंनें सोमाली और अंग्रेजी दोनो ही भाषाओं में कहानियाँ लिखी हैं। उनकी प्रसिद्ध कहानी है–'यंगथिंग'। नडीन गॉर्डिमर साउथ अफ्रीका की प्रसिद्ध अंग्रेजी–भाषी लेखिका हैं जिन्हें नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। उनकी प्रसिद्ध कहानियाँ हैं–'जंप एण्ड अदर स्टोरीज', 'लूट' आदि। साउथ अफ्रीका के ही एक महत्वपूर्ण कहानीकार हैं एलेक्स ला गुमा। इनकी कहानियों में शैली की विविधता, खास किस्म के दुर्लभ वार्तालाप और शोषित एवं प्रताड़ित जनता का यथार्थ और सहानुभूतिपूर्ण चित्रण मिलता है। अंग्रेजी में 'ए वॉक इन नाईट एण्ड अदर स्टोरीज' उनका महत्वपूर्ण संग्रह है। बेसी हेड बोत्स्वाना की महत्वपूर्ण कहानी लेखिका रहीं। उन्होंने साधारणजन को केंद्र में रखकर कई कहानियाँ लिखीं। अंग्रेजी में उनका महत्वपूर्ण संग्रह है–'द कलेक्टर ऑव ट्रेजर्स'। मोजेज इसेगावा युगांडा के महत्वपूर्ण कहानी लेखक हैं। उन्होंने युगांडा की राजनीतिक उथल–पुथल के बीच वहाँ की जनता के जीवन के संघर्षों का चित्रण अपनी कहानियों में किया है। ताहर बेन जेलौन मोरोक्को के फ्रेंच भाषी कहनीकार हैं। उन्होंने उत्तरी अफ्रीका के कठोर और संघर्षमय जीवन का चित्रण करते हुए कई मार्मिक कहानियाँ लिखी हैं। उनकी प्रसिद्ध कहानी है–'ला वाईपेरे ब्लूयू'। हमीदौ काहने सेनेगल के फ्रेंच भाषी कहानीकार हैं जिन्होंने पश्चिमी और अफ्रीकी संस्कृतियों की अंतर्क्रियाओं को केंद्र बनाकर कहानियों की रचना की है। मोहम्मद मौलेसेहौल अल्जीरिया के फ्रेंच भाषी लेखक हैं जिन्होंने सैनिक तानाशाही के सेंसर से बचने के लिये यास्मीना खादरा के स्त्रीवाची छद्मनाम से कहानियाँ लिखी हैं। उनका प्रसिद्ध संग्रह है–'हौरिया'। कामारा लाए गिनी के फ्रेंच भाषी कहानीकार हैं, जिनकी प्रसिद्ध कहानी है–'लेस यूक्स दे ला स्तेचू'। नजीब महफूज मिस्र के महत्वपूर्ण अरबी भाषी कहानीकार हैं जिन्हें नोबल पुरस्कार से सम्मनित किया जा चुका है। उन्होंने अस्तित्ववादी विषयों पर कहानियों की रचना की है औए उनकी बहुत सी कहानियों पर फिल्मों का निर्माण हो चुका है। निरूसंदेह नजीब महफूज विश्व के बहुपठित अरबी लेखक हैं। उनकी

प्रसिद्ध कहानी का 'द नॉरवेजियन रैट' नाम से अंग्रेजी में अनुवाद हो चुका है। चार्लस मांगुआ केन्या के अंग्रेजी भाषी कहानीकार हैं जिनकी कहानियाँ शहरों के साधारण जनों की गरीबी और उससे उत्पन्न कठोर जीवन–स्थितियों का वर्णन करती हैं। साराह लादिपो मान्यिका नाईजीरिया की प्रसिद्ध लेखिका हैं जिन्होंने अंग्रेजी में कई प्रसिद्ध कहानियाँ लिखी हैं। उनके महत्वपूर्ण कहानियाँ हैं– 'मि. वॉन्डर', 'मॉड्यूप', 'गर्लफ्रेंड' आदि। दमबूद्जो मारेचेरा जिम्बाब्वे के कहानीकार हैं जिन्होंने अंग्रेजी में कहानियाँ लिखी हैं। 'द हाउस ऑव हंगर' उनका प्रसिद्ध कहानी संग्रह है। दलेने मात्थी साउथ अफ्रीका की प्रसिद्ध लेखिका हैं जिन्होंने देशज अफ्रीकान्स भाषा में कहानियाँ रची है। उनका प्रसिद्ध संग्रह है– 'डाई जूडासबोक'। टॉमस मोफोलो साउथ अफ्रीका के कहानीकार हैं जिन्होंने देशज सेसोथो भाषा में मार्मिक कहानियाँ लिखी हैं। केन्या के मेजा म्वांगी एक महत्वपूर्ण कहानीकार हैं जिन्होंने अंग्रेजी भाषा में कहानियाँ लिखीं हैं। साउथ अफ्रीका के एक अन्य लेखक हैं लीविस न्कोसी जिन्होनें अंग्रेजी में कहानियाँ लिखी हैं। उनका प्रसिद्ध संग्रह है–'द होल्ड अप'। न्नेदी ओकोराफोर नाईजीरिया की प्रसिद्ध लेखिका हैं जिनकी अंग्रेजी में लिखी कहानी 'एंफिबियस ग्रीन' काफी चर्चित रही। उत्तर–आधुनिक और उत्तर–औपनिवेशिक परंपरा में बेन ओकरी नाईजीरिया के प्रसिद्ध कहानीकार हैं जिनकी तुलना अक्सर भारतीय प्रवासी लेखक सलमान रूश्दी और लैटिन अमेरिकी लेखक गैबरियल गार्शिया मार्खेज से की जाती है। 'टेल्स ऑव फ्रीडम' उनका प्रसिद्ध संग्रह है। याम्बो औओलोग्यूएम माली के लेखक हैं जिनका फ्रेंच भाषा में कहानी–संग्रह 'लेस मिले एत उने बाईब्लेस दू सेक्से' प्रकाशित है जिसे अश्लीलता के आरोप में सेंसर किया गया था। एलन पैटन साउथ अफ्रीका के विश्वप्रसिद्ध लेखक हैं जिन्होंने नस्लवाद का विरोध करते हुए कहानियाँ लिखी हैं। अंग्रेजी में उनका प्रसिद्ध संग्रह है–'टेल्स फ्रॉम ए ट्रबुल्ड लैंड'। बेंजामिन सेहने रवांडा के फ्रेंच भाषी लेखक हैं जिन्होंने अपने देश में बड़े पैमाने पर हुई जनहत्याओं को अपनी कहानियों का विषय बनाया है। उनकी एक प्रसिद्ध कहानी का अंग्रेजी में 'डेड गर्ल वाकिंग' नाम से अनुवाद हुआ है। ओस्मान सेम्बेने सेनेगल के फ्रेंच भाषी लेखक हैं जिनका प्रसिद्ध कहानी संग्रह है–'वोल्तैक्यू'। नाईजीरिया के नोबल पुरस्कार प्राप्त लेखक वोल सोयिंका ने अपने लेखन के शुरुआती दौर में कुछ कहानियाँ लिखीं। अंग्रेजी में लिखी गयी उनकी कहानी 'केफीज बर्थदे ट्रीट' काफी चर्चित रही। न्गुगी वा थ्योंगो केन्या के विश्वप्रसिद्ध लेखक हैं जिन्होंने पहले अंग्रेजी और बाद में देशज गिकुयू और स्वाहिली भाषा में लिखा। उन्हें उत्तर–औपनिवेशिक लेखन के लिये हमेशा याद किया जायेगा। उनके प्रमुख कहानी–संग्रह हैं–'मिनट्स ऑव ग्लोरी', 'द रिटर्न' आदि। याईवोने वेरा जिमबाब्वे की प्रसिद्ध लेखिका हैं। अंग्रेजी में लिखी उनकी कहानियाँ काव्यात्मक गद्य, और दृढ़ इच्छाशक्ति से युक्त स्त्री–चरित्रों के लिये जानी जाती हैं। उनका प्रसिद्ध कहानी–संग्रह है–'व्हाई डोंट यू कार्व अदर एनिमल्स'। बिर्हानू जेरीहून इथोपिया के प्रसिद्द लेखक हैं जिन्होंनें देशज अम्हारी भाषा में कहानियाँ लिखी हैं। उनका प्रसिद्ध संग्रह है–' बिर्र अम्बार सेब्बेरेल्लिवो'।

12.4 सारांश

एम. ए. (हिंदी) के द्वितीय वर्ष से संबंधित मॉड्यूल के पाठ्यक्रम 'कहानीः स्वरूप और विकास' से संबद्ध तीसरे खण्ड की बारहवीं इकाई का अध्ययन आपने किया है। यह लैटिन अमेरिकी और अफ्रीकी देशों में कहानी के विकास पर प्रकाश डालने वाली इकाई है।

इकाई–12 के इस पाठ में हमने लैटिन अमेरिका और अफ्रीका के विभिन्न देशों में कहानी के विकास पर चर्चा करते हुए इन देशों के प्रमुख कहानीकारों का भी जिक्र किया है। हमने इन देशों के कहानीकारों और यूरोपीय कहानीकारों की कथा–दृष्टि के बीच के अंतर को यहाँ रेखांकित किया है। हमने यह भी देखा कि इन देशों में कहानी के विकास पर वहाँ के स्वतंत्रता संग्राम का सीधा असर पड़ा है। कहानी औपनिवशिकता को सशक्त चुनौती देते हए विकसित हुई है। लैटिन अमेरिकी देशों नें कहानी के लिये देशज भाषाओं के साथ साथ स्पहानी और पुर्तगाली भाषाओं को अपनाया तथा अफ्रीकी देशों ने स्थानीय भाषाओं के साथ–साथ अंग्रेजी, फ्रेंच और पुर्तगाली आदि भाषाओं को अपनाया। लैटिन अमेरिकी देशों की कहानियों को जादुई यथार्थवाद के कुशल इस्तेमाल के चलते विश्व भर में प्रसिद्धि मिली। बाद में बहुत से लैटिन अमेरिकी कहानीकारों नें जादुई यथार्थवाद से इतर शैली अपनाते हुए भी महत्वपूर्ण कहानियाँ लिखीं। हमने प्रमुख लैटिन अमेरिकी कहानीकारों के अवदान पर भी चर्चा की है। अफ्रीकी देशों की कहानियों पर चर्चा करते हुए हमने पाया कि अफ्रीकी लेखकों की प्रमुख विशेषता है अपने यूरोपीय औपनिवेशिक सत्ताधीशों की भाषाओं को अपनी स्थानीयता में इस कदर स्वांगीकृत करना कि यही भाषाएं यूरोपीय उपनिवेशवाद का विरोध करने का सशक्त माध्यम बनती हैं और उत्तर–औपनिवेशिक अफ्रीकी कहानी की प्रमुख भाषायें बन जाती हैं। साथ ही अफ्रीकी कहानीकार स्थानीय गिकियू , स्वाहिली आदि भाषाओं में भी कहानियाँ लिखते हैं। यानी अफ्रीकी कहानी की सबसे बड़ी विशेषता है कि उसमें स्थानीयता और देशजता की रक्षा हर कीमत पर की गयी है। यह अफ्रीकी कहानीकारों का विश्वस्तर पर कहानी के विकास में दिया गया योगदान है। प्रमुख अफ्रीकी कहानीकारों और उनकी कहानियों से भी आप परिचित हो चुके/चुकी हैं।

अभ्यास

1. लैटिन अमेरिकी देशों में कहानी के विकास पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिये।
2. जादुई यथार्थवाद से आप क्या समझते हैं?
3. अफ्रीकी कहानी की विशेषताओं को रेखांकित कीजिये।
4. नोबल पुरस्कार प्राप्त लैटिन अमेरिकी और अफ्रीकी कहानीकारों पर टिप्पणी कीजिये।